10-4-86

नान्दीमुख, तर्पण विधि, तीर्थ श्राद्ध एवं
त्रिपिण्डीश्राद्ध सहित

गयाश्राद्ध
पद्धति

वन्दे गदाधरं देवं पितृणां मोक्ष दायकम्

लेखक : **श्री रुद्रदत्त पाठक**
व्या० सा० आचार्य, व्या० तीर्थ
(गोल्ड मेडलिस्ट)

प्रकाशक-विष्णु प्रकाशनम्, देव-औरंगाबाद

10-11-86

नान्दीमुख, तर्पण विधि, तीर्थ श्राद्ध एवं
त्रिपिण्डीश्राद्ध सहित

गया श्राद्ध
पद्धति

वन्दे गदाधरं देवं पितृणां मोक्ष दायकम्

लेखक : **श्री रुद्रदत्त पाठक**
व्या० सा० आचार्य, व्या० तीर्थ
(गोल्ड मेडलिस्ट)

प्रकाशक-विष्णु प्रकाशनम्, देव-औरंगाबाद

श्री हरिः

नान्दीमुख श्राद्ध, तर्पण विधि, तीर्थ श्राद्ध एवं
त्रिपिण्डी श्राद्ध सहित

गयाश्राद्ध पद्धति

वन्दे गदाधरं देवं पितृणां मोक्षदायकम् ।

लेखक
श्री रूद्रदत्त पाठक
व्या० सा० आचार्य, व्या० तीर्थ
(गोल्ड मेडलिस्ट)

●

प्रकाशक
माधव पाठक, का० तीर्थ
श्री विष्णु प्रकाशन
विष्णु भवन, पो० देव औरंगाबाद (बिहार)

⊕ इस पुस्तक के प्रकाशन आदि का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है ।

●

प्रकाशक—

माधव पाठक, का० तीर्थ

श्री विष्णु प्रकाशनम्

पो० देव, जिला-औरंगाबाद

(बिहार) भारत

●

प्रथम संस्करण—११००

भाद्र कृष्ण अमावस्या

वि० सं० २०४१

मूल्य—१२) बारह रुपये मात्र

●

मुद्रक :

काली चरण शुक्ल

मगध शुभंकर प्रेस

राम सागर नई सड़क, गयाधाम

प्राक्कथन

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात् ।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ।।

जीवन में आज्ञा पालन, क्षयाह तिथि के दिन भूरि-भोजन और गया में पिण्डदान करने से ही पुत्र की पुत्रता सिद्ध होती है अर्थात् सच्चा पुत्र माना जाता है। इस शास्त्र प्रमाण से पुत्र के लिए गया-श्राद्ध आवश्यक कृत्य है।

मीन, मेख, कन्या, धन और कुम्भ राशि के सूर्य होने पर अर्थात् चैत, वैशाख, आश्विन और फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में गया श्राद्ध करना उत्तम है। किन्तु महालया में श्राद्ध करना सर्वोत्तम है।

मीने मेषे गते सूर्यें कन्यायां कार्मुके घटे ।
दुर्लभं त्रिपु लोकेषु गयायां पिण्डपात नमः ।।
(वा० पु०)

गया श्राद्ध का नियम :—

गया जाने के लिए सज्ज होने पर सर्वप्रथम अपने घर में श्राद्ध (नान्दीमुख) करने के बाद कार्पटी (संन्यासी) वेष में ग्राम प्रदक्षिणा (साधारण) श्राद्ध शेष अन्न का भोजन करें पश्चात् जितेन्द्रिय होकर गया के लिये प्रस्थान करें।

उधतश्चेत गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः ।
विधाय कर्पटीवेषं कृत्वा ग्राम प्रदक्षिणाम् ।।

ततो ग्रामान्तरं गत्वा श्राद्धशेषस्य भोजनम्।
ततो प्रतिदिनं गच्छेत् प्रतिग्रह विवर्जितः ॥

इस प्रकार गया पहुचकर तीन पक्ष पन्द्रह दिन, सात दिन अथवा तीन में श्राद्ध पूरा करें।

पक्षत्रनिवासी यः त्रिसप्त कुलमुद्धरेत्।
वसेत्पञ्चदशाहं वा सप्तरात्रं त्रिरात्रकम् ॥

(वा॰ पु॰)

किन्तु प्रचलित प्रथा यह है कि शुक्ल पक्ष के चतुदर्शी से श्राद्ध आरम्भ करके समस्त कृष्ण पक्ष में श्राद्ध करने के बाद पुनः शुक्ल पक्ष प्रतिपद् को मातामहश्राद्ध करके तीन पक्ष पूरा करते हैं।

गया-श्राद्ध करनेवाले व्यक्तियों को चाहिए कि माता एवं पिता का श्राद्ध अलग-अलग करें।

अन्वष्टकासु वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहमिं।
मातुः श्राद्धं पृथक् कर्यादिन्यत्र पतिना सह।

पिता, पिताहम, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही, मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातमह, मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही इन, बारह, के निमित्त बारह पिण्ड देने के बाद सपिण्ड जनों के निमित्र भी पिण्डदान करें। ये समस्त पिण्डदान दक्षिण भाग से आरम्भ कर वाम भाग में समाप्त किया जाता है।

दघुः श्राद्धं सपिण्डानां तेषां दक्षिण भागतः।

(वा॰ पु॰)

पिण्ड का प्रमाण—

मुष्टिमात्र प्रमांणञ्च आर्द्रामालक मात्रकम्।

शमीपत्र प्रमाणं वा पिण्डं दद्याद् गयाशिरे।
उद्धरेत्सप्त गोत्राणि कुलमेकोतरं शतम् ।

मुष्टिकामात्र आवले के बराबर अथवा शमीपत्र के सामान भी गयाशिर में पिण्ड देने से सात गोत्र और एस सौ एक कुल का उद्धार होता है। माता, पिता, बहन, पुत्री, स्त्री, बुआ, मौसी इन सात कुलों को सात गोत्र कहते हैं। इन सात कुलों के अतिरिक्त अन्य जाने पहचाने मित्र, दास, दासी आदि जिन से कभी भी कुछ उपकार हुआ हो अथच जन्मान्तर में भी जिनका साथ हुआ हो उन्हें भी गया में पिण्ड दिया जाता है। यह हिन्दु धर्म में ही उदारता है।

गया में जो एक बार भोजन, ब्रह्मचर्य, भूमि शयन सत्यवादी, दयालु और पवित्र रहकर गया श्राद्ध करता है उसे तीर्थयात्रा का फल प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा करनेवाले पुरुष या स्त्री को सर्वप्रथम पाखण्ड को त्याग करना चाहिए। शास्त्र की आज्ञा को त्याग कर अपने मन से किया गया काम पाखण्ड कहा जाता है।

प्रश्न १–गयाश्राद्ध करने के बाद प्रतिवर्ष पार्वण एकोद्दिष्ट अथवा ब्राह्मण भोजन आदि पितरो की तिथि के दिन करना चाहिए या नहीं ?

उत्तर—अवश्य करना चाहिए क्यो कि गोकर्ण द्वारा गयाश्राद्ध करने के बाद भी धुन्धुकारी की मुक्ति नहीं हुई थी। अतएव गयाश्रद्ध करने से आपके पितरों की मुक्ति हो ही गयी यह निश्चित नहीं। यदि मुक्ति न हुई हो तो आपके द्वारा किये गये पिण्डदान आपके पितरों को प्राप्त होगा ही। यदि आपके पितरों की मुक्ति हो गयी हो तो भी

आपके द्वारा अपने पितरों के निमित्त दी गयी वस्तु पर-लोक में आपको प्राप्त होगी। अथच—

आपके पिताजी ने यदि गया श्राद्ध किया, आपने पिता, पितामह, प्रपितामह आदि और समस्त पितरों के नाम से पिण्डदान कर दिया और आपके पितर लोग मुक्त हो गये इस परिस्थिति में आप जब गया श्राद्ध किये तो पुनः पितामह, प्रपितामह या समस्त पितरों के नाम से पिण्डदान क्यों किये, करना उचित नहीं था क्यों कि वे सब तो मुक्त हो चुके। अतः इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि श्राद्ध तिथि आने पर करना ही चाहिए। गया श्राद्ध करने के पूर्व या पश्चात् श्राद्ध करने में कोई हानि नहीं, वह तो मानव का कर्त्तव्य है।

प्रश्न २—संयोग से तिथिक्षय या तिथि बृद्धि हो जाय तब गया स्थिति तीर्थ ब्राह्मणों के द्वारा प्रकाशित वे दीना-मावली और श्राद्धसूची के अनुसारगया श्राद्ध कैसे पूरा होगा?

उत्तर—वायु पुराण में गयाश्राद्ध की विधि लेकर अलग गयाश्राद्ध पद्धति या गया स्थित श्राद्ध स्थलों की सूची हमारे पूर्वज ने तैयार की है तदनुसार हमलोग गया श्राद्ध करते कराते हैं। वायु पुराण में कहीं भी नहीं लिखा है कि अमुक तिथि को ही अमुक वेदी पर श्राद्ध करें सभी वेदियों पर श्राद्ध करने का ही वायु पुराण में उल्लेख है। इस परिस्थिति में सभी वेदियों पर श्राद्ध एवं पिण्डदान अवश्य होना चाहिए अमुक तिथि को ही अमुक वेदी पर श्राद्ध होना चाहिए इस प्रकार के नियम का अवलम्बन नहीं करना चाहिए। भाद्रपद शुदी १४ को पुनः पुना श्राद्ध और आश्विन शुदी १ को गायत्री घाट पर मातामह श्राद्ध अवश्य होना चाहिए। अथच-विष्णुपद मन्दिर के प्रांगण में सोलह वेदी

नामक तीर्थ में १६ वेदियाँ हैं इन वेदियों में श्राद्ध किया जाता है। यहाँ रुद्रपद से आरम्भ कर कश्यपपद में श्राद्ध पूरा करना चाहिये।

प्रश्न ३—गया श्राद्ध करने के बाद अन्य तीर्थों में जाने पर श्राद्ध करना चाहिए या नहीं ?

उत्तर—गया श्राद्ध करने के बाद अन्य तीर्थों में जाने का प्रचलन एक देशीय है। गया से अन्यतीर्थ में जाकर ही लोग हजामत वगैरह करते हैं। इस प्रकार अन्य तीर्थ में कुछ लोग श्राद्ध भी करते हैं किन्तु श्राद्ध करना कोई आवश्यक नहीं है।

त्रयोदशीश्राद्ध गया की वेदिनामा में त्रयोदशी को केवल तर्पण मात्र ही लिखा है पिण्डदान का विधान नहीं है अतः पिण्डदान नहीं करना चाहिए—गया यात्रा करने वाले व्यक्ति के पितृगण पिण्डदान की आशा से आकर जब तक पिण्ड दाता गया में रहता है तब तक उसके पितृगण भी वायुरुप से रहते हैं यदि सभी दिन पिण्डदान करके त्रयोदशी को पिण्डदान न किया जाय तो उस दिन पितृगण निरास हो जाते हैं। अतः प्रतिदिन श्राद्ध पिण्डदान करना आवश्यक है किसी दिन भी शून्य नहीं होना चाहिए।

वायु पुराण से ही गयाश्राद्ध का विधान लिखा है। वहाँ सभी वेदियों का नाम और पिण्डदान लिखा है वहाँ यह नहीं लिखा कि अमुक तिथि को पिण्डदान किया जाय, अमुक तिथि को नहीं किया जाय। वेदीनामा हमारे आदरणीय पूर्वाचार्यों ने जन सौविध्य के लिये बनाया है। वायु पुराण में ऐसा लेख नहीं है अतः गया में प्रतिदिन श्राद्ध करना आवश्यक है।

हमारी इस पद्धति से किञ्चित्मात्र भी लोकोपकार हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल मानूगा।

रुद्रदत्त पाठक
व्याकरण-साहित्याचार्य
व्या० तीर्थ० (गोल्डमिडिल)

गया श्राद्ध पद्धति

विषय सूची

		पृष्ठ सं०
१	नान्दीमुख श्राद्ध	१
२	गया श्राद्ध विधान	२०
३	तर्पण विधान	२१
४	गया के श्राद्ध स्थलों की नामावली	६८
५	त्रिपिण्डी श्राद्ध	६९
६	पञ्चबली विधान	८९

नत्वा गदाधरं देवं पितरं मातरं तथा
लिख्यते रुद्रदत्तेन गयाश्राद्धस्यपद्धति ।

१ नान्दीमुख श्राद्ध

कुल तथा देश के आचार के अनुसार नान्दीश्राद्ध सपिण्डक अथवा अपिण्डक करना चाहिये । मैं यहाँ सपिण्डक श्राद्ध लिखता हूँ । यह श्राद्ध गया आदि तीर्थयात्रा के समय प्रायः किया जाता है ।

आचमन प्राणायाम करके "बृद्धौपूज्या तु षोडश" इस वाक्य के अनुसार गौर्यादि षोडशमातृका तथा तत्पूर्व गणपति, नवग्रहादि का पूजन करना चाहियें । इसमें छिन्नमूल सीधे कुशा का प्रयोग होता है । यह श्राद्ध सव्य एवं पूर्व मूख से होता है तथा तिल क स्थान पर यव का व्यवहार किया जाता है । यह श्राद्ध नौ दैवत्व तथा द्वादश दैवत्व दो प्रकार के होते हैं । माता, पितामही, प्रपितामही, पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह सपत्नीक, प्रमातामह सपत्नीक, वृद्ध-प्रमातामह सपत्नीक, एवं प्रकार से नव तथा तीन विश्वेदेवा ये बारह की पूजाकर नौ पिण्ड दिये जाते हैं । यह नौ दैवत्य का विधान हुआ तथा द्वादश दैवत्य में मातामहादि के साथ सपत्नीक शब्द का व्यवहार न करके मातामही आदि तीनों की पूजा तथा पिण्डदान अलग करने से द्वादश दैवत्य होता

है। अस्तु यहाँ नौ दैवत्य का ही विधान लिखा जाता है।

रक्षादीप प्रज्वलित करके पवित्र आसन पर पूर्वमुख बैठकर आचमन प्राणायाम आदि करके—

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मन्त्र से अपने शरीर तथा श्राद्धसामग्री को प्रोक्षण (पवित्र) करके तीन कुशा, यव, जल आदि लेकर देशकाल का कीर्तन करे—

'ओं अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां नान्दीमुखीनां तथा अमुकगोत्राणां पितृ पितामहप्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां नान्दीमुखानां, द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां आभ्युदयिकश्राद्धमहं करिष्ये॥

ऐसा संकल्प करके तीन बार गायत्री जप तथा

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

इस मन्त्र का भी तीन बार जप करे। पूर्व विधि से दिग्रक्षण करके नीबी वान्ध ले। बाद में तीन कुशा रूप पवित्री और यव, जल लेकर—

'ॐ अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां नान्दीमुखीनां आभ्युदयिकश्राद्धसम्बन्धिनो सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।'

ऐसा संकल्प करके दक्षिण से आरम्भकर एक विश्वेदेवा को आसन देवे। पुनः--

'ओं अद्यामुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकगोत्राणां नान्दीमुखानां आभ्युदयिकश्राद्ध-सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः। पुनः ओं अद्यामुकगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धमातामहानाम-मुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासन वो नमः।'

ऐसे दो संकल्प करके दो आसन और देवे। ये तीनों आसन पूर्वाग्र देने चाहिये। पुनः—

'ॐ अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे इदमासन ते नमः।'

इस सकल्प से माता के लिए भी आसन देकर इसी प्रकार पितामही, प्रपितामही के लिये भी आसन देवे। पुनः—

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुक शर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे इदमासनं ते नमः।'

इस वाक्य से पिता के निमित्त आसन देकर इसी प्रकार पितामह, प्रपित मह के निमित्त भी आसन देवे। पुनः-

'ॐ अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे इदमासन ते नमः।'

इस प्रकार संकल्प करके मातामह सपत्नीक के निमित्त आसन देकर इसी प्रकार प्रमातामह सपत्नीक, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के निमित्त भी आसन देवे। पुनः—

'ओं विश्वान् देवानहमावाहयिष्ये। विश्वेदेवास आगत शृणुते म इमं हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।

इसी से विश्वेदेवा का आवाहन करें।

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः।'

इससे विश्वेदेवा के आसन के पास यव छोड़कर

ॐ विश्वे देवा शृणुतेमंहवम्मे येऽन्तरिक्षे ये उपद्यविष्ठ। ये अग्निजिह्वा उतवा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः। ये चात्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

इन मन्त्रों को भी पढ़े

'पुमः नान्दीमुखान् पितॄनहमावाहयिष्ये।' ऐसा बोलकर

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आवह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

इससे पितरों का आवाहन करके

'ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः।'

इससे माता आदि के आसन के पास यव छोड़े। पुनः

'ओं आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ इसे पढ़े।

पुनः विश्वेदेवा सहित समस्त पितरों के अर्घ्यपात्र के निमित्त बारह पात्र या पुटक रखकर सभी पात्रों में

'ओं पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।'

इस मन्त्र से पवित्री छोड़े।

'तथा शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।'

इस मन्त्र से सभी पात्रों में जल देकर—

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः।

इस मन्त्र से विश्वेदेवा के अर्घपात्र में यव देकर।

'ओं यवोऽसि सोमदैवत्यो गोसवोदेवनिर्मितः प्रत्नमद्भिः

ल्लोकान् प्रीणाहि नः।'

इस मन्त्र से पितरों के अर्घ्यपात्र में यव छोड़कर मौन होकर सभी पात्रों में गन्ध-पुष्प भी देवे।

इस प्रकार सभी अर्घ्यपात्र तैयार हो जाने के बाद विश्वेदेवा के प्रथम अर्घ्यपात्र को बांये हाथ में लेकर उसकी पवित्री प्रथम विश्वे देवा के भोजनपात्र पर रखकर उसके ऊपर जल का छींटा देकर अर्घ्यपात्र को दाहिने हाथ से ढँक ले तथा

'ओं या दिव्या आपः पयसा सम्बभूबुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शंनो सुहवा भवन्तु।

इस मन्त्र को पढ़कर कुशा, यव, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां नान्दीमुखीनामाभ्युदयिकश्राद्धसम्बन्धिनों विश्वेदेवा एष वो हस्तार्घो नमः।'

ऐसा संकल्पकर अर्घ्यपात्र का आधा जल पवित्री पर छोड़ शेष जल सहित पात्र आसन के पास रख दे।

इसी प्रकार शेष दो विश्वेदेवा के निमित्त भी अर्घ्य करे। पुनः माता का अर्घ्यपात्र बांये हाथ में रख उसकी पवित्री भोजनपात्र पर रख दे तथा उसके ऊपर जल का छींटा

देकर दाहिने हाथ से अर्घ्यपात्र को ढँकर 'या दिव्या:०' इत्यादि मन्त्र पढ़कर कुशा, यव, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे एष ते हस्तार्घो नमः।

ऐसा संकल्प करके अर्घ्यपात्र का आधा जल भोजनपात्र पर गिरा के शेष जलसहित अर्घ्यपात्र वहीं रख दे।

इसी प्रकार पितामही और प्र पतामही के निमित्त भी अर्घ्य-प्रदान करे। पुन पिता के अर्घ्यपात्र को बाँये हाथ में लेकर उसकी पवित्री भोजनपात्र पर रखकर उसके ऊपर जल का छींटा देकर दाहिने हाथ से अर्घ्यपात्र को ढककर तथा या दिव्या:०' इत्यादि मन्त्र पढ़कर

ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे एष ते हस्तार्घो नमः।

ऐसा संकल्प करके अर्घ्यपात्र का आधा जल भोजन पात्र पर गिराकर शेष जल सहित अर्घ्यपात्र वहीं स्थापित कर दे।

इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह मातामह सपत्नीक, प्रमातामह सपत्नीक, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के लिए भी अर्घ्यप्रदान करे। बाद में शेष जल सहित प्रथम विश्वेदेवा के अर्घ्यपात्र में पवित्री रखकर उसे 'विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि।' इस वाक्य को उच्चारण करके सीधा प्रथम विश्वेदेवा के आसन के दक्षिण भाग में स्थापित करे।

इसी प्रकार शेष दोनों विश्वेदेवा के अर्घ्यपात्र को उन आसनों के दक्षिण भाग में "विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसी इस वाक्य से स्थापित कर दें।

पुनः पितरों की सभी पवित्रियाँ प्रत्येक अर्घ्यपात्र में रखकर

प्रपितामही के अर्घ्यपात्र की पवित्री तथा जल पितामही के अर्घ्यपात्र में एवं पितामही के अर्घ्यपात्र की पवित्री तथा जल माता के अर्घ्यपात्र में रखकर माता का अर्घ्यपात्र पितामही के तथा इन दोनो को वृद्ध प्रपितामही के अर्घ्यपात्र के ऊपर रखकर "ॐ मातृभ्यः स्थानमसि ।" इस वाक्य से माता के वाम भाग में उलट कर स्थापित करे ।

ठीक इसी प्रकार पिता आदि के तीनों अर्घ्यपात्रों को मिलाकर पिता के वाम भाग में 'पितृभ्यः स्थानमसि ।' इस वाक्य से उलटकर स्थापित करे । इसी प्रकार मातामह सपत्नीक आदि तीनों के अर्घ्यपात्रों को मिलाकर—मातामहेभ्यः स्थानमसि ।'इससे मातामह के वाम भाग में स्थापित कर दें।

पुनः प्रत्येक आसनों पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल, यज्ञोपवीत तथा माता, पितामही, प्रपितामही के आसन पर यज्ञोपवीत के स्थान पर सिन्दूर, वस्त्र देकर, कुशा, यव, जल हाथ में लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां अमुकामकदेवीनां नान्दीमुखीनामाभ्युदयिकश्राद्धसम्बन्धिनो बिश्वेदेवाएतानिगन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः

ऐसा सकल्प करे ।

इसी प्रकार पिता आदि तीनों के विश्वेदेवा तथा मातामह आदि तीनों के विश्वदेवा के लिये भी गन्धादि का संकल्प करना चाहिए । बाद में कुशा, यव, जल लेकर

'ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलसिन्दूरवासांसि ते नमः ।'

ऐसा संकल्प करके पितामही, प्रपितामही के लिये भी ठीक इसी प्रकार का संकल्प करे। पुनः कुशा यव, जल हाथमें लेकर

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीप ताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते नमः।

ऐसा संकल्प करे तथा पितामह, प्रपितामह के लिए भी ऐसा ही संकल्प करे। मातामह के लिए गन्धादि देकर प्रमातामह सपत्नीक, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के लिये भी इसी प्रकार गन्धादि प्रदान करे तथा—

'ओं अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीप-ताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते नमः।

प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह के लिए भी ऐसा ही देवे। बाद में आसन सहित प्रत्येक भोजनपात्र के चारो तरफ—

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

इस मन्त्र से जल का मण्डल करे।

इसके बाद किसी पात्र या पुटक में जल रखकर लवण-वर्जित पाक लेकर—

ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा। ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

इन दो वाक्यों से दो आहुति जल में छोड़े तथा कुछ शेष भी रखे। शेष बचे हुए को हुतशेषान्न कहते हैं।

बाद में अपसव्य होकर दक्षिणामुख कुशा के मोटक (यहाँ दूर्वा का व्यवहार नहीं करना) आदि के साथ घी, तिल मिलाकर

थोड़ा सा अन्न लेकर 'इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः' इस वाक्य से कुशा पर भूस्वामी के लिए अन्न प्रदा करे।

पुनः सव्य पूर्वमुख होकर विश्वेदेवासहित माता आदि के सभी भोजनपात्रों पर थोड़ा-थोड़ा हुतशेषान्न परोस कर थोड़ा शेष रख लें। बाद में एक पुरुष के तृप्तियोग्य अन्न सभी भोजनपात्रों पर परोसे। तथा सभी भोजनपात्रों के पास एक पात्र में घी और एक पात्र में जल भी रखे। पश्चात् प्रथम विश्वेदेवा के भोजन पात्र को सीधे दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए इस मन्त्र से भोज पर मधु चढावें।

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृते-ऽमृतं जुहोमि स्वाहा। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

इन मन्त्रों को पढ़ने के बाद बाँये हाथ से भोजनपात्र को स्पर्श करते हुए दाहिने हाथ के अंगुठे से 'इदमन्नम्' इससे अन्न का, 'इमा आपः' इससे जल का, 'इदमाज्यम्' इससे घी का, 'इदं हविः' इससे पुनः अन्न का स्पर्श करे।

तथा—'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः।

इस वाक्य से भोजनपात्र के पास यव छोड़कर कुशा, यव, जल लेकर—

'ॐ अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां नान्दीमुखीनाम् आभ्युदयिकश्राद्धसम्ब-न्धिनो विश्वेदेवा इदमन्नं सोपकरणं वो नमः।'

ऐसा संकल्प करके बायाँ हाथ भी उठा ले।

इसी प्रकार पिता पितामह, प्रपितामह सम्बन्धी विश्वेदेवा तथा मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक सम्बन्धी

विश्वेदेवा के लिए भी अन्न का संकल्प करे। पुनः माता के भोजनपात्र को सीधे दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए ऊपर लिखे
'पृथिवी ते पात्रं०, इदं विष्णुर्विचक्रमे०, कृष्णाकव्यमिदं०।
इन तीनों मन्त्रों को पूरा पढ़कर पूर्व लिखे विधान और वाक्यों से अन्न, जल और घृत को दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पर्श करके
'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः।'

इससे भोजन पात्र के पास यव छोड़कर हाथ में कुशा, यव, जल लेकर 'ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते नमः। ऐसा संकल्प करे।

इसी प्रकार पात्रस्पर्श आदि सम्पूर्ण क्रियाओं के करने के बाद पितामही, प्रपितामही के निमित्त भी अन्न का संकल्प करे पुनः पिता के पात्र को भी इसी प्रकार स्पर्श करे।

'पृथिवी ते पात्रम्' इत्यादि मन्त्रो को पढ़कर अंगुष्ठ निवेश करके यव छोड़कर कुशा यव जल लेकर—'ॐ अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते नमः। इस प्रकार संकल्प करके ठीक इसी प्रकार की सभी क्रियाओं को करके पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के लिए भी अन्न का संकल्प करे।

उपरोक्त विधि से विश्वदेवा सहित सभी पितरों के निमित्त अन्न के संकल्प हो जाने पर प्राञ्जलि होकर 'ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु।

इस वाक्य को पढकर तीनबार गायत्री जप करके—
पुनः सहस्रशीर्षा इत्यादि १६ पुरुष सूक्त मन्त्र, १२ अप्रतिरथ मन्त्रों का पाठ करे।

पुनः अपसव्य से मोटक तिल, जल तथा घी, मधु, तिल के साथ थोड़ा पाक लेकर--

'ओं अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ताः यान्तु परांगतिम्'

इस मन्त्र से कुशा पर छोड़कर सव्य हो आचमन तथा हरिस्मरण एवं गायत्री जप करके अपसव्य से पिण्डदान के लिए माता आदि तीनों के आसन के सामने मध्य में एक, मातामह आदि तीनों के आसन के सामने मध्य में एक, इस प्रकार प्रादेश मात्र उत्तरोत्तर क्रम से तीन वेदियाँ बनाकर—

'ओं अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः।'

इस वाक्य से तीनों वेदियों के मध्य भाग में कुशा से एक एक रेखा करके कुशा उत्तर की ओर छोड़ दे।

पुन. प्रत्येक रेखाओं पर

'ओं ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात्।'

इस मन्त्र से जलती हुई आग घुमाकर काष्ठ दक्षिण कोण में त्याग दे।

बाद में प्रत्येक रेखाओं पर तीन-तीन कुशाएँ बिछ—करा

ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।

इस मन्त्र को तीन बार उच्चारण करे। बाद में नौ पात्र या पुटक रखकर उसमें यव, जल, गन्ध, पुष्प देकर अवनेजन पात्र तैयार कर लें। पुनः एक अवनेजन पात्र बाये हाथ में रख दाहिने हाथ में यव, जल, कुशा लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रवनेनिक्ष्व ते नमः ।

इस प्रकार संकल्प पर सबसे दक्षिण वाली वेदी बिछी कुशा के मूल भाग में पात्र का आधा जल गिराकर शेष जल सहित पात्र वहीं रख दे।

इसी प्रकार पितामही तथा प्रपितामही के लिए भी कुशा के मध्य तथा अन्त में अवनेजन जल देकर शेष जल सहित पात्र वहीं रख दे।

पुनः चौथा अवनेजन पात्र लेकर तथा कुशा, यव, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुशर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते नमः ।'

ऐसा संकल्प करके दूसरी वेदी पर बिछी कुशा के मूल भाग में आधा जल गिरा के शेष जल सहित पात्र वेदी के पास रख दे।

इसी प्रकार उसी वेदी पर बिछी कुशा के मध्य तथा अन्त्य भाग में पितामह एवं प्रपितामह के लिए भी अवनेजन देकर पात्र वहीं रख दे।

पुनः सातवाँ अवनेजन पात्र एवं कुशा, यव, जल लेकर

ओं अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।

ऐसा संकल्प क के तीसरी वेदी पर बिछी कुशा के मूल भाग में वेदी के पास रख दे। ठीक इसी प्रकार उसी वेदी पर बिछी कुशा के मध्य में एवं अन्त भाग में प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के लिए भी अवनेजन देकर जल सहित पात्र वहीं स्थापित करे।

पुनः यव (यव का आटा) दधि एवं घी मिलाकर नौ पिण्ड बना ले। एक पिण्ड तथा यव, जल हाथ में लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते नमः।'

ऐसा संकल्प करके प्रथम अवनेजन स्थान में पिण्ड स्थापित करे। इसी प्रकार पितामही एवं प्रपितामही के लिए भी पिण्ड देवे।

बाद में चौथा पिण्ड लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते नमः।'

ऐसा संकल्प कर पिता के निमित्त द्वितीय वेदी पर बिछी कुशा के मूल में जहाँ प्रथम अवनेजन दिये हों वहाँ पिण्ड देकर इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह के निमित्त भी पिण्ड कुशा के मध्य तथा अन्त भाग में देवे। कुछ स्थानों में ब्राह्मणभोजन निमित्त बने पाक का पिण्ड देते हैं।

पुनः सातवाँ पिण्ड तथा कुशा, यव, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्र मातामह अमकशर्मन् सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते नमः।'

ऐसा संकल्प करके वेदी की कुशा के मूल भाग में पिण्ड देकर इसी प्रकार प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक के लिए भी कुशा के मध्य एव अन्त भाग में पिण्ड देवें।

पुनः वेदियों पर बिछी कुशा के मूल भाग में कुशा से हाथ पोछ ले और आचमन एवं हरिस्मरण करके—

'ॐ अत्र मातरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।'

इसे पढ़कर उत्तर की ओर से श्वांस खीचकर

'ओं अमी मदंत मातरो यथाभागमावृषायध्वम्।'

इससे प्रथम वेदी के पिण्डों के ऊपर श्वांस छोड़े।

इसी प्रकार—

ओं अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।'

इससे उत्तर दिशा से श्वांस खींचकर—

'ओं अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।'

इससे दूसरी वेदी के पिण्डों पर श्वांस छोड़े। इसी प्रकार तीसरी वेदी पर उपरोक्त मन्त्र से श्वांस छोड़े।

पुनः शेषजल सहित अवनेजन पात्र लेकर—

ओं अद्यामुकगोते मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

ऐसा संकल्प करके माता के पिण्ड पर पात्र का जल छोड़े इसी प्रकार पितामही, प्रपितामही के निमित्त भी प्रत्यवनेजन दे। पुनः चौथा शेषजल सहित अवनेजनपात्र लेकर

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिच्व ते नमः।'

ऐसा संकल्प करके पिता के पिण्ड पर पात्र का जल गिरा दे। इसी प्रकार पितामह प्रपितामह के निमत्त भी प्रत्यवनेजन प्रदान करे। पुनः सातवाँ अवनेजन पात्र लेकर-

'ओं अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिच्व ते नमः।'

ऐसा संकल्प करके मातामह के पिण्ड पर पात्र का जल गिराकर इसीप्रकार प्रमातामह सपत्नीक केलिए भी प्रत्यवनेजन देवे।

इसके बाद नीवी खोलकर आचमन एवं हरिस्मरण करके सूत्र लेकर—

ओं नमो वो मातरो रसाय नमो वो मातरः शोषाय नमो वो मातरो जीवाय नमो वो मातरः स्वधायै नमो वो मातरो घोराय नमो वो मातरो मन्यवे नमो वो मातरो नमो वो गृहान्नो मातरो दत्त सतो वो मातरो देष्म एतद्वो मातरो वासः।

इस मन्त्र से माता, पितामही, प्रपितामही के पिण्डों पर दोनों हाथों से सूत्र देकर—

'ओं नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः

पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म एतद्वः पितरो वासः ।"

इस मन्त्र से पितामह, प्रपितामह के पिण्डों पर सूत्र चढ़ावे। इसी मन्त्र से पुनः मातामहादि के पिण्डों पर भी सूत्र चढ़ावे। बाद में कुशा या यव लेकर—

'ॐ अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि नान्दीमुखि आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डे एतत्ते वासो नमः'

इस प्रकार संकल्प करके पितामही, प्रपितामही के निमित्त भी इसी प्रकार इसी प्रकार संकल्प करे।

'ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुक शर्मन् नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डे एतत्ते वासो नमः।'

ऐसा सकल्प करके पितामह और प्रपितामह के लिए भी ऐसा ही संकल्प करे। पुनः—

'ॐ आद्यामुकगोत्र मातामह सपत्नीक नान्दीमुख आभ्युदयिकश्राद्धे पिण्डे एत्तत्ते वासो नमः'

ऐसा संकल्प करके प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह के लिए भी ऐसा ही संकल्प करे।

पुनः गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल आदि से प्रत्येक पिण्डों की पूजा करके "शिवा आपः सन्तु" इससे जल "सौमनस्यमस्तु" इससे पुष्प, "अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु" इससे अक्षत प्रत्येक भोजनपात्रों पर देकर कुशा, यव, जल, लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्रायाः मातुरमुकदेव्याः नान्दीमुख्या भ्युदयिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिभिर्माता नान्दीमुखी प्रीयताम्'

इस वाक्य से माता के लिए अक्षय्योदक देकर पितामही और प्रपितामाह के लिए भी इसी प्रकार अक्षय्योदक देवे। पुनः

'ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः नान्दीमुखस्याभ्युदयिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिभिः पिता नान्दीमुखः प्रीयताम्।

इस वाक्य से पिता के लिए अक्षय्योदक प्रदान कर पितामह और प्रपितामह के लिए भी इसी प्रकार अक्षय्योदक प्रदान करे। पुनः कुशा, यव, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्रस्य मातामहस्य अमुकशर्मणः सपत्नीकस्य नान्दीमुखस्य आभ्युदयिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिभिर्मातामहः सपत्नीकः प्रीयताम्।

इस वाक्य से मातामह सपत्नीक के लिए अक्षय्योदक प्रदान कर इसी प्रकार प्रमातामह और वृद्धप्रमाता के लिये अक्षय्योदक देवे।

"ॐ अघोराः मातरः सन्तु" इससे माता आदि तीनों के पिण्डों पर पूर्वाग्र जलधारा देकर "ओं अघोराः पितरः सन्तु" इससे पिता आदि के शेष छहों पिण्डों पर भी जलधार प्रदान करे।

पुनः—'गोत्रन्नो वर्द्धताम् दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् वेदाः संततिरेव च श्राद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नो अस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः संतु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु'।

इस मन्त्र से आशीर्वाद की याचना करे।

'ओं ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे मातृः ॥'

इस मन्त्र से माता आदि के तीनों पिण्डों पर जलधारा देकर

ओं उर्जंवहन्तीर मृतं घृतंपयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।

इस मन्त्र से पिता आदि के तीनों के पिण्डों पर जलधारा दे और इसी मन्त्र से मातामह आदि तीनो के पिण्डों पर भी जलधारा देवे।

पुनः पिण्डों को सूँघकर उठा ले तथा पिण्ड के नीचे की कुशा और अंगार भ्रमण कराया हुआ उल्मुक दोनों आग में छोड़ दे। बाद में विश्वेदेवा के तीनों अर्घ्यपात्रों को सीधा कर दे। पुनःकुशा, यव, जल के साथ दक्षिणा लेकर-

ओं अद्यामकगोत्राणां मातृ पितामहीप्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां नान्दीमुखिनामाभ्युदयिकश्राद्धे विश्वेषां देवानां कृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प कर विश्वेदेवा को दक्षिणा देवे। और पिता आदि तीन एवं मातामह आदि के विश्वेदेवा को भी इसी प्रकार दक्षिणा देवे। पुनः—

ओं अद्यामुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः नान्दीमुख्याः कृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्रह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

इस प्रकार संकल्प करके माता के निमित्त दक्षिणा देकर पतामही और प्रपितामही के लिए भी दक्षिणा देवे।

पुनः- ओं अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः नान्दीमुखस्य कृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प करके पिता के निमित्त दक्षिणा देने के बाद पितामहादि पाँचों के लिए भी इसी प्रकार दक्षिणा देवें।

पुनः- ओं वाजे वाजे वत वाजिनो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

इस मन्त्र से माता आदि का विसर्जन करने के बाद–"ओं विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम" इस वाक्य से विश्वेदेवा को भी विसर्जन करे। पुनः- 'देवताभ्यः०' इत्यादि मन्त्र को तीन बार जप करके दोनों हाथों से रक्षादीप निर्वापित करके हाँथ पाँव धोकर आचमन करें।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः॥ विष्णवे नमः।

इस प्रकार भगवान् विष्णु को नमस्कार करके श्राद्धीय वस्तु ब्राह्मण को देवें एवं क्रम से नान्दीमुखश्राद्ध का विधान पूरा हुआ।

गयाश्राद्ध

गयाश्राद्ध निमित्त गया-यात्रा करने वाले व्यक्ति को चाहिये कि जिस दिन अपने निवास-स्थान से गया-यात्रा करनी हो उससे तीन दिन पूर्व एकबार हविष्य (खीर का भोजन कर ब्रह्मचर्य विधि का पालन करें। पुनः दूसरे दिन अद्येत्यादि देशकाल उच्चारण करके "अद्य करिष्यमाण गयायात्राङ्गभूतोपवासं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके अहोरात्र उपवास करें।

पुनः तीसरे दिन स्नानादि नित्य कर्म करके आसन पर पूर्व मुख बैठ कर देश काल उच्चारण करके—

ओं अद्य करिष्यमाण गयायात्रानिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेश-नवग्रह-षडोसमातृकादि स्वेष्टदेवपूजनमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प कर गणेशादि देवताओं की पूजा करके तीन कुशा, यव, जल हाथ में लेकर—

'ओं अद्य समस्तपितृणा निष्कृतिकामो गयातीर्थयात्रांगभूतम् आभ्युदयिकश्राद्धमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके पूर्व लिखे विधान से नव दैवत्य आभ्युदयिक श्राद्ध करके ब्राह्मणभोजन कराके ब्राह्मणों को सुवर्ण दक्षिणा देकर अद्येत्यादि देश काल उच्चारण कर—

अमुकगोत्र अमुकशर्माहं मम समस्तपितृणां सप्तसु गोत्रेषु चैकोत्तरशतपुरुषाणां दशपूर्व-दशापर-स्ववंश्यानां पदे-पदे स्वर्गारोहणसिद्ध्ये नरकोद्धारपूर्वकशाश्वतब्रह्मभावप्राप्तये च गयाश्राद्धाधिकरणाय गयायात्रां करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके ग्रामप्रदक्षिणा, श्मशानप्रदक्षिणा, ग्राम देवता को नमस्कार आदि कर्म करके गया यात्रा करें।

पुनः एक कोस के भीतर किसी ग्राम में जाकर श्राद्धशेषान्न भोजनकर गया के लिए प्रस्थान करे। सर्व प्रथम पुनः पुना नदी, (जो दिल्ली हावड़ा ग्रैंडकार्ड रेलवे लाइन में अनुग्रहनारायणरोड स्टेशन के पास तथा गया-पटना रेलवे लाइन में पुनपुन स्टेशन के पास है) में स्नान, संध्या, तर्पण आदि करके पावणश्राद्ध के विधान से नव दैवत्य या द्वादश दैवत्य-श्राद्ध करके ब्राह्मण भोजन कराके गया आ जायें। तीर्थगुरु का पूजन कर श्राद्ध करने की आज्ञा माँगे। गया में पहुँचकर तथा तीर्थ को प्रणाम कर फल्गु नदी में—

'फल्गुतीर्थ नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम गृहाणेद नारिकेलं सुवर्णेन समन्वितम् ॥'

इससे नारियल और सुवर्ण छोड़कर तीन कुशा, तिल, जल लेकर देश काल उच्चारण करके—

'ॐ अद्य मम समस्त पितृणां विष्णुलोकावाप्तये आत्मनश्च मुक्तिप्राप्तये फाल्गुस्नानमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके फल्गु नदी में स्नान करके सन्ध्यादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर नीचे लिखे विधान से तर्पण करे।

तीन कुशा और तिल जल लेकर देशकाल उच्चारण करके—

'ॐ अद्यामुकगोत्र अमुकशर्माहं मम समस्तपितृणां विष्णुलोकादिप्राप्त्यर्थ्यं गयायां फल्गुतीर्थे देवऋषिपितृतर्पणं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके पूर्वमुख हो पवित्री धारण करके चावल, चन्दन, पुष्प हाथ में लेकर नीचे लिखे वाक्यों से ब्रह्मादि देवताओं को एक-एक अञ्जलि जल देवे।

"ओं ब्रह्मा तृप्यताम्, ओं विष्णुस्तृप्यताम, ओं रुद्रस्तृप्यताम्, ओं प्रजापतिस्तृप्यताम्, ओं देवास्तृप्यताम्, ओं छन्दांसि तृप्यन्ताम्, ओं वेदास्तृप्यन्ताम्, ओं ऋषयस्तृप्यन्ताम्, ओं पुराणाचार्यस्तृप्यन्ताम्, ओं गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् ओंइतराचार्यास्तृप्यन्ताम्, ओं सम्वत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्, ओं देव्यस्तृप्यन्ताम, ओं अप्सरसस्तृप्यन्ताम्, ओं देवानुगास्तृप्यन्ताम्, ओं नागास्तृप्यन्ताम्, ओं सागरास्तृप्यन्ताम्, ओं पर्वतास्तृप्यन्ताम्, ओं सरितस्तृप्यन्ताम्, ओं मनुष्यास्तृप्यन्ताम्, ओं यक्षास्तृप्यन्ताम्, ओं रक्षांसि तृप्यन्ताम्, ओं पिशाचस्तृप्यन्ताम्, ओं भूतानि तृप्यन्ताम्, ओं पशवस्तृप्यन्ताम्, ओं वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्, ओं ओषधयस्तृप्यन्ताम् ओं भूतग्राम चतुर्विधस्तृप्यताम् ।

इसी प्रकार-ओं मरीचिस्तृप्यन्ताम्, ओं अत्रिस्तृप्यन्ताम्, ओं अंगिरास्तृप्यन्ताम्, ओं पुलस्तृप्यन्ताम् ओं पुलहस्तृप्यन्ताम्, ओं क्रतुस्तृप्यन्ताम्, ओं प्रचेतास्तृप्यन्ताम् ओं वशिष्ठस्तृप्यन्ताम, ओं भृगुस्तृप्यन्याम, ओं नारदस्तृप्यन्ताम ।

बाद में निवीति यज्ञोपवीत को कंठी करके) उत्तरमुख होकर प्रजापतितीर्थ से नीचे लिखे वाक्यों से प्रत्येक को दो-दो अञ्जलि देवे ।

'ओं सनकस्तृप्यन्ताम, ओं सनन्दनस्तृप्यताम, ओं

सनातनस्तृप्यन्ताम, ओं कपिलस्तृप्यन्ताम, ओं वोदुस्तृप्यन्ताम्, ओं पञ्चशिखस्तृप्यन्ताम् ।

पुनः दक्षिणामुख अपसव्य होकर मोटक, तिल, चन्दन पुष्प जल से नीचे लिखे वाक्यों द्वारा तीन-तीन अंजलि प्रदान करें ।

ॐ कव्यवाट् तृप्तन्तामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा, ओं अनलस्तृप्यतामिद तिलोदकं तस्मै स्वधा, ओं सोमस्तृप्यतामिद०, ओं यमस्तृप्यतामिदं०, ओं अर्यमा तृप्यतामिदं०, ओं अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा, ओं वर्हिषदस्तृप्यन्तामिद०, ओं सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ।

बाद में—ॐ यमाय नमः, ओं धर्मराजाय नमः, ओं मृत्यवे नमः, ओं अन्तकाय नमः, ओं वैवस्वताय नमः, ओं कालाय नमः, ओं सर्वभूतक्षयाय नमः, ओं औदुम्बराय नमः, ओं नीलाय नमः, ओं दध्नायनमः ओं परमेष्ठिने नमः, ओं वृकोदराय नमः, ओं चित्राय नमः, ओं चित्रगुप्ताय नमः ।

पुनः ओ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असुं य इयुरवृका ऋतज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ओं अमुकगोत्र अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।

कहकर पहली अंजलि जल देवे ।

पुनः 'ओं अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनस्ये स्याम ॥

इस मन्त्र को पढ़कर ऊपर के वाक्य से दूसरी अञ्जलि पिता को देवे। पुनः—

आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रु वन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ।

इस मन्त्र को पढ़कर ऊपर लिखे वाक्य से पिता के लिए तीसरी अञ्जलि देवे।

ओं उर्जं वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालं परिस्रु तम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्। इस मन्त्र से 'ओं अमुकगोत्रोऽस्मत्पितामह अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।'

इस वाक्य द्वारा पितामह के लिए पहली अञ्जलि देवे।

पुनः 'ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरो मीमदन्त पितरोऽतितृप्यन्त पितरः शुन्धध्वम ।'

इस मन्त्र तथा पितामह के लिए लिखा गया ऊपर के वाक्य को बोलकर पितामह को दूसरी अञ्जलि देवे।

पुनः 'ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्मया उच न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतञ्जु षस्व।

इस मन्त्र और ऊपर के वाक्य से पितामह के लिए अञ्जलि देवे।

पुनः 'ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ 'ॐ अद्यामुकगोत्र प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूप स्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।

इस प्रकार प्रपितामह को पहली अञ्जलि देवे।

पुनः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता॥'

इस मन्त्र और ऊपर के वाक्य से पितामह को दूसरी अञ्जलि देवे।

पुनः ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥'

इस वाक्य तथा ऊपर के वाक्य से पितामह के लिये तीसरी अञ्जलि देवे।

'ॐ तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

इस वाक्य से तीन अञ्जलि देवे।

बाद में 'ॐ अद्यामुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकदेवी गंगारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा।

इस वाक्य से पहली अञ्जलि, पुनः इसी वाक्य द्वारा दूसरी और तीसरी अञ्जलि भी देवे।

ॐ अद्यामुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकदेवी यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा।'

इस वाक्य से पितामही के लिए तीन अञ्जलि देवे।

ओं अद्यामुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकदेवी सरस्वतीरुपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।'

इस वाक्य से प्रपितामही के निमित्त तीन अञ्जली देवें। इसी प्रकार विमाता आदि का भी तर्पण करे।

फिर ओं नमो व पितरो रसाय नमो वः पितरः शेषाय नमो वः पितरो जिवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तमतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः। ओं अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुकशर्मा वसुरूपतृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा,

कहकर तीन अञ्जलि देवे।

ओं अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्प्रमातामहोऽमकशर्मा रुद्र-रुपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।'

कहकर तीन बार अंजलि देवें।

ओं अद्यामुकगोत्रोऽस्मत् वृद्धप्रमातामहोऽमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।'

कहकर तीन अंजलि देवे।

'ओं अद्यामुकगोत्रोस्मन्मातामही अमुकदेवी गंगा-रूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।'

तीन अंजलि देवे।

'ओं अद्यामुकगोत्रास्मन्प्रमातामही अमुकदेवी यमुनारूपा तृप्यन्तामिदंतिलोदकं तस्यै स्वधा।'

कहकर तीन अंजलि देवे।

ओं अद्यामुकगोत्रास्मद् वृद्धप्रमातामही अमुकदेवी सरस्वतीरूपा तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा।'

कहकर तीन जलांजलि देवे।

इस प्रकार पितृकुलवाले, मातृकुलवाले, श्वसुर कुलवाले बहन, बहनोई, बुआ (फुआ) फूफा, मौसा, स्त्री की बहन, बहनोई, गुरु, दास, भृत्य आदि जो भी हों उन सभी के नाम से मोटक, तिल, जल लेकर तीन तीन अञ्जली देवे। किन्तु पुरुष के लिए "तस्मै स्वधा" और स्त्री के लिए "तस्यै स्वधा" का प्रयोग करना चाहिये। यदि सपत्नीक शब्द का व्यवहार करे तब तस्मै स्वधा ही उच्चारण करना चाहिये।

पुनः सव्य होकर बिना मोटक तिल के चावल जल से—

देवासुरास्तथा यक्षाः नागाः गन्धर्वदानवाः। पिशाचाः गुह्यकाः सिद्धाःकुष्माण्डास्तरवः खगाः॥ जलेचराः भूनिलयाः वाय्वाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाऽखिलाः॥

इन श्लोकों को उच्चारण करते हुए एक एक अञ्जली जल देकर पुनः अपसव्य होकर मोटक तिल के साथ—

'नारकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥ येऽबान्धवाः बान्धवाः येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिखिलाः यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति। ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्त देवर्षिपितृमानवाः तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहा

दयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्म-भुवनाँल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

इन मन्त्रों से अलग-अलग जल देकर—

'ये के चास्मत्कुले जाताः अपुत्राः गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

इस श्लोक से तिल के साथ वस्त्रनिष्पीडन(निचोड़ करे।

पुनः सव्य होकर 'एहि सूर्यं सहस्रांशो तेजोराशिन् जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।'

इस मन्त्र से सूर्यनारायण को तीन बार अर्घ्य देकर—

ओं ब्राह्मणेनमः, ॐ विष्णवेनमः, ॐ रुद्रायनमः, ॐ सूर्यायनमः, ॐ मित्रायनमः, ॐ वरुणायनमः ।

इन मन्त्रों से भी एक एक अञ्जलि देवे तथा—

'ॐ आदित्यायनमः, ॐ दिग्देवताभ्यो नमः, ॐ ब्राह्मणेनमः, ओं पृथिव्यैनमः, ओं औषधिभ्योनमः, ओं वाचे नम', ॐ वाचस्पतयेनमः, ॐ मरुद्भ्योनमः, ॐ अद्भ्योनमः, ।

इन मन्त्रों से नमस्कार पूर्वक जल देकर ।

ओं देवागातु विदोगातु वित्वागातुमति । मनसस्पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा वातेधाः ॥'

इस मन्त्र को पढ़कर तर्पण क्रिया समाप्त करें ।

तर्पण विधि समाप्त

ऊपर लिखे विधान से तर्पण कर लेने के बाद श्राद्धकर्त्ता अपने आसन पर पूर्वमुख बैठकर कुशा की पवित्री धारण करके आचमन प्राणायाम करके—

'ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इस मन्त्र से अपने शरीर और श्राद्धसमाग्री को पवित्र करके (शालिग्राम) की पूजा करे । बाद में रक्षादीप स्थापित कर तथा नीवी बन्धन कर—

'ओं भगवत्यै गयायै नमः, भगवते गदाधरायनमः, तीर्थदेवताभ्यो नमः ।

इस प्रकार नमस्कार करके कुशत्रय, तिल, जल लेकर देशकाल उच्चारण करके—

अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं गयायां फल्गुतीर्थे मम समस्तपितृणां विष्णुलोकप्राप्तये अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अमुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकामुकदेवीनां गंगायमुनासरस्वतीरूपाणां तथा अमुकगोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपाणां तथा च अस्मन्मातामहीप्रमातामहीवृद्धप्रमातामहीनाममुकामुकदेवीनां गंगायमुनासरस्वतीरूपाणां सदैवं पार्वणश्राद्धं करिष्ये ।'

ऐसा संकल्प करके तीन बार गायत्री जपें तथा—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

इस मन्त्र का भी तीन बार जप कर लें ।

पुनः उत्तरमुख हो सव्य से यव, जल, कुशा, लेकर—

ओं अद्यास्मत्पित्रादित्रय, मात्रादित्रय, मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानामेतानि आसनानि सन्तु।

ऐसा संकल्प करके तीन तीन कुशारूप आसन चार जगह चार विश्वेदेवा के लिए प्रदान करें।

पुनः अपसव्य होकर दक्षिणमुख हो बांयें जंघे को मोड़ कर बैठ जाये। मोटक तिल, जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यरूपा इमानि आसनानि युष्मभ्यं स्वधा।'

ऐसा संकल्प करके मोटक रूप आसन पिता, पितामह, प्रपितामह के लिये दक्षिणा देवे। पुनः—

'अमुकगोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुकामुकदेव्यः गंगायमुनासरस्वतीरूपिण्यः एतानि आसनानि युष्मभ्यं स्वधा।'

ऐसा संकल्प करके माता, पितामही और प्रपितामही के लिए मोटक रूप दक्षिणाग्र ती आसन देवे। बाद में—

'ओं अद्यामुकगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा वसुरुद्रादित्यरूपाः एतानि आसनानि युष्मभ्यं स्वधा।'

ऐसा सकल्प करके मातामहादि तिनों के लिए मोटक रूप दक्षिणाग्र तीन आसन प्रदान करे। पुनश्च—

ओं अद्यामुकगोत्राः मातामहीप्रमातामहीवृद्धप्रमातामह्यः एतानि आसनानि युष्मभ्यं स्वधा।'

ऐसा संकल्प करके मातामही आदि तीनों के लिए भी दक्षिणा मोटक रूप तीन आसन प्रदान करे।

सभी विश्वेदेवा के आसन पर "अपहता असुराः रक्षांसि वेदिषदः" इस मन्त्र से यव छोड़ें। यथा पितरों के आसन पर भी इसी मन्त्र से तिल छोड़ें।

सव्य से चारों विश्वेदेवा के आसन पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल यज्ञोपवीत वस्त्र देकर कुशा यव, जल लेकर-

ओं अद्यास्मत्पित्रादित्रय मात्रादित्रय मातामहयादित्रय मातामह्यादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवाः एतानि गन्ध-पुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः।

ऐसा संकल्प करे पुनः—अञ्जलि करके विश्वेषां देवानामर्चनं सम्पूर्णमस्तु" ऐसा बोले।

बाद में अपसव्य से पिता आदि के बारहों आसनों पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल, यज्ञोपवीत, वस्त्र देकर मोटक तिल, जल लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्रा अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्मणो वसुरुद्रादित्यरुपाः एतानि गन्धपुष्पधूप-दीपताम्बूलयज्ञोपवीतवसांसि युष्मभ्यंस्वधा।

ऐसा संकल्प करे। पुनः मोटक तिल लेकर—

ओं अद्यामुक गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुकामुकदेव्यो गंगा-यमुना-सरस्वतीरूपिण्यः एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बुलसिन्दूरवसांसि युष्मभ्यं स्वधा।

ऐसा संकल्प माताआदि तीनों के लिये करे। पुनः मोटक

तिल, जल लेकर ओं अद्यामुकगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमाता-महवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्मणो वसुरुद्रादित्यरूपा एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवसांसि युष्मभ्यं स्वधा।

ऐसा संकल्प मातामह आदि तीनों के लिए करें। पुनश्च मोटक तिल, जल लेकर—

ओं अद्यामकगोत्राः अस्मन्मातामहीप्रमातामहीवृद्ध-प्रमातामह्यः अमुकामुकदेव्यः गंगा-यमुना सरस्वतीरूपिण्यः एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलसिन्दूरवसांसि युष्मभ्यं स्वधा।

ऐसा संकल्प मातामही आदि तीनो के लिए करे पुनः अजलि कर "पितृणामर्चनं सम्पूर्णमस्तु" ऐसा बोले।

पुनः एक पात्र या पुटक में जल रखकर श्राद्ध से थोड़ा अन्न (लवण वर्जित लेकर—

'ओं अग्नये कव्यवाहाय स्वाहा। ओं सोमाय पितृमते स्वाहा।'

इन दो मन्त्रों से जल में दो आहुति अन्न की देवे। थोड़ा अन्न शेष रखकर पात्रों में रखे। यह हुतशेषान्न कहलाता है।

पुनः सव्यसे विश्वेदेवा के समीप चार भोजनपात्र रखकर उनमें एक पुरुष के तृप्तिपर्याप्त अन्न परोस कर एक पात्र में जल तथा एक पात्र में घी प्रत्येक भोजनपात्र के समीप रख करके-

ओं मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवंरजः।

मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

इस मन्त्र से चारो जगह पर मधु चढ़ावे ।

इसी प्रकार अपसव्य से पिता आदि के आसन के सामने भोजपात्र रखकर अन्न परोस कर बारह आसनों पर एक पात्र में घी, एक पात्र में जल रख के उपर लिखे हुए "मधु वाता" इत्यादि मन्त्र से सभी परोसे हुए अन्न के ऊपर मधु चढ़ाकर मधु मधु मधु ऐसा तीन बार बोले ।

पुनः सव्य से सीधे दोनो हाथों से प्रथम विश्वेदेवा के भोजन पात्र को स्पर्श करते हुए ।

'ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा । इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाँसुरे स्वहा ।'

इन दो मन्त्रों को पढ़कर

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ।'

इससे भोजन पात्र के पास यव छोड़ दाहिने हाथ में कुशा, यव लेकर—

'ॐ अद्यामुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां श्राद्धसम्बधिनो विश्वेदेवा इदमन्नं सापकरणम् अमृतरूपं हव्यं वो नमः ।'

* ऐसा सकल्प करें ।

इसी प्रकार 'मातृपितामहीप्रपितामहीनां श्राद्धसम्बधिनो

---

* आवाहनं चान्नदानं द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम् । तृप्तिप्रश्नश्च विकरं तीर्थश्राद्धेषु वर्जयेत् ।

इस वाक्य के अनुसार गयातीर्थ में अंगुष्ठ निवेशन नहीं होता ।

ऐसा संकल्प भेद कर दूसरे विश्वेदेवा के निमित्त अन्न का संकल्प करे।

तथा च 'मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां श्राद्ध-सम्बन्धिनो विश्वेदेवा।'

ऐसा संकल्प बदल कर मातामह आदि तीनों के विश्वेदेवा के लिए अन्न का संकल्प करके—

मातामहीप्रमातामहीवृद्धप्रमातामहीनां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा'

इस प्रकार संकल्प में परिवर्तन करके चौथे मातामही आदि के विश्वेदेवा के निमित्त अन्न का सकल्प करे।

पुनः अपसव्य से पिता के भोजन पात्र को उल्टे दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए।

'ओं पृथिवी ते पात्रं०' इदं विष्णुर्विचक्रमे०।'

इत्यादि मन्त्रों को पढ़कर—

ओं अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः।

इस मन्त्र से भोजनपात्र के पास तिल छोड़कर मोटक तिल जल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्र पिता अमुकशर्मन् वसुरूप इदमन्नं सोपकरणम् अमृतरूपं कव्यं तुभ्यं ते स्वधा।

ऐसा संकल्प करे। इसी प्रकार—

अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप, अमुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्य रुप।

संकल्प में इतना परिवर्तन करके ऊपर लिखे हुए विधि से अन्न का संकल्प करे।

बाद में माता के भोजन पात्र को दोनों उल्टे हाथों से स्पर्श करते हुए "पृथ्वी ते पात्रम्" इत्यादि तथा इदं विष्णुर्विचक्रमे" इत्यादि मन्त्रों को बोल कर—

'ओं अपहता असुरा रक्षाँसि वेदिषदः।

इससे भोजनपात्र के पास तिल छोड़कर दाहिने हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि गंगारूपे इदमन्नं सोपकरणं अमृतरूपे काव्यं ते स्वधा ।

ऐसा संकल्प करे ।

इसी प्रकार पितामही और प्रपितामही के निमित्त भी—

अमुकगोत्रा पितामही अमुकदेवी यमुनारूपा तथा अमुकगोत्रे प्रपितामही अमुकदेवि सरस्वतीरूपे'

इस प्रकार कुछ बदले हुए दो संकल्प करे ।

पुनः मातामह के भोजनपात्र को उल्टे दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए ऊपर लिखे "ओं पृथ्वी ते" इत्यादि तथा "इदं विष्णुर्विचक्रमे" इत्यादि मन्त्रों को पढकर "ओं अपहता" इत्यादि से भोजनपात्र के पास तिल छोड़कर दाहिने हाथ में मोटक तिल जल लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् वसुरूप इदमन्नं सोपकरणं अमृतरूपं कव्यं ते स्वधा ।'

ऐसा संकल्प करे । तथा प्रमातामह वृद्धप्रमातामह के लिये भी ऊपर लिखी विधि करके "अमुकगोत्र प्रमातामह अमुकशर्मन् रुद्ररुप" तथा "अमुकगोत्र वृद्धप्रमातामह अमुकशर्मन् आदित्य रूप'' ऐसा बदल कर संकल्प करे ।

पुनः मातामही के भोजन पात्र को उल्टे दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए "ओं पृथ्वी ते" इत्यादि तथा "ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे" इत्यादि दो मन्त्रों को पढ़कर "ओं अपहता" इत्यादि से भोजनपात्र के पास "तिल छोड़कर दाहिने हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्रे मातामही अमुकदेवि गंगारूपे इदमन्नं सोपकरणं त स्वधा ।'

ऐसा संकल्प करे। तथा प्रमातामही और वृद्धप्रमातामही के निमित्त भी उपर लिखी विधी करके—

'अमुकगोत्रेप्रमातामहि अमुकदेवि यमुनारूपे तथा अमुकगोत्रे, वृद्धप्रमातामहि सरस्वतीरूपे।

ऐसा बदल कर संकल्प करें।

पुनः "अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। तत्सर्वं मच्छिद्रमस्तु" ऐसा बोलें बाद में सव्य से तीन बार गायत्री जप करके पितृमन्त्र, पुरुष सूक्त, अप्रतिरथ मन्त्र तथा रुचिस्तोत्र का पाठ करके -

सप्त व्याधाः दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥ तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणाः वेदपारगाः। प्रस्थिताः दूरमध्वानं यूयं किमवसादथ॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेकचक्षुषे नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥

इन मन्त्रों को भी पढ़ें।

पुनः अपसव्य होकर दक्षिणमुख हो पिता आदि तीन के पिण्ड दान के लिये दक्षिण ढाल एक हाथ लम्बी तथा चार अंगुल ऊँची एक वेदी बनावे तथा माता आदि तीन, मातामह आदि तीन के लिये, मातामही आदि भी इसी प्रकार की तीन वेदियाँ और भी बना कर 'ओं अपहता असुराः रक्षांसि वेदिषदः" इस मन्त्र द्वारा कुशा से चारों वेदियों पर रेखा करके कुशा उत्तर दिशा में छोड़ें। बाद में जलती हुई आग (लकड़ी,

'ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान्प्रणुदात्यस्मात्।'

इस मन्त्र से प्रत्येक वेदियों की रेखाओं पर घुमाकर लकड़ी दक्षिण दिशा में छोड़े।

पुन: प्रत्येक रेखाओं पर छिन्न मूल तीन तीन कुशाएँ प्रत्येक रेखाओं पर बिछावें। बाद में बारह पात्रों या पुटकों में जल, तिल गंध, पुष्प देकर अवनेजन पात्र तैयार करके एक पात्र बाँये हाथ में लेकर दाहिने हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर—

'ॐ अमुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् वसुरूप पिण्ड-स्थानेऽत्रवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

ऐसा संकल्प करके अवनेजनपात्र का आधा जल प्रथम वेदी पर बिछाई हुई कुशा के मूल में गिराकर शेष जल सहित पात्र वेदी के पास रख दे।

इसी प्रकार आसन-प्रकरण या अन्नदान-प्रकरण में लिखे हुए परिवर्तित संकल्प के अनुसार कुशा के मध्य में पितामह के लिये तथा कुशा के अन्त में प्रपितामह के लिये भी अवनेजन देकर इसी क्रम से शेष तीन वेदियों पर भी माता पितामही प्रपितामही के लिए तीसरी वेदी पर मातामह आदि तीन तथा मातामही आदि तीन के लिए चौथी वेदी पर कुशा के मूल मध्य अन्त इस क्रम से अवनेजन पात्र के आधा जल गिराकर शेष जल सहित सभी अवनेजनपात्र इन सभी वेदियों के पास रख दे।

पुन: पाक में तिल, घी, मधु हुतशेषान्न मिलाकर बारह पिण्ड बनाकर सभी पिण्डों के ऊपर में भी घी, मधु लगा, देवें। पिण्ड बनाकर पाकशेष भी रखे। इस प्रकार सभी पिण्ड बन जाने के बाद एक पिण्ड बायें हाथ में लेकर दाहिने में मोटक, तिल जल लेकर "ओं अद्यामुकगोत्र पितः अमुक-शर्मन् वसुरूप एष पिण्ड ते स्वधा" ऐसा संकल्प करके प्रथम वेदी पर कुशामूल में दाहिने हाथ के पितृतीर्थ से पिण्ड रख दे।

पुनः पहले आसन-प्रकरण में लिखे गये संकल्प भेद करके पितामह प्रपितामह दोनों के लिए दो और प्रथम वेदी पर पिण्ड देने के बाद दूसरी वेदी पर माता, पितामही प्रपितामह तीनों के लिये एव तीसरी वेदी पर मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह के लिये वेदी पर मातामही आदि तीनों के लिये तीन तीन पिण्ड चौथी वेदी पर प्रदान करे। ग्रन्थविस्तार के भय से अलग संकल्प नहीं किया गया किन्तु संकल्प में परिवर्त्तन करना तथा वेदी पर बिछायी हुई कुशा के मूल, मध्य, अन्त में क्रमशः पिण्ड देना ये क्रियाएँ कदापि न भूलनी चाहिये।

पुनः दो जगह कुशा बिछाकर (अथवा वेदी बनाकर रेखा पर अंगार भ्रमण कराके कुशा बिछावे) कुशा को प्रोक्षण कर नीचे लिखे मन्त्र से अञ्जलि करके पितरों को आवाहन करें जैसे—

ओं अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते।
आवाहयिष्ये तान् सर्वान् दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥
मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते।
आवाहयिष्ये तान् सर्वान् दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥
बन्धुवर्गकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते।
आवाहयिष्ये तान् सर्वान् दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥

इन ती मन्त्रों से आवाहन करके गंधादि से पूजन कर नीचे लिखे प्रत्येक श्लोकों द्वारा पृथक-पृथक एक एक पिण्ड देवे।

अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिंडं ददाम्यहम्॥१॥

मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥२॥
बन्धुवर्गकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥३॥
अजातदन्ताः ये केचित् ये च गर्भे प्रपीडिताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥४॥
अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ।
विद्युच्चौरहता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥५॥
दावदाहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहता च ये ।
दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिर्वापि तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥६॥
उद्बन्धनमृता ये च विषशस्त्रहताश्च ये ।
आत्मोपघातिनो ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥७॥
अरण्ये वर्त्मनि वने क्षुधया तृष्णया हताः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैः तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥८॥
रौरवे चान्धतामिस्त्रे कालसूत्रे च ये गताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥९॥
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥१०॥
पशुयोनिगता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥११॥

अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोके च ये गताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥१२॥
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥१३॥
जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा ।
मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥१४॥
दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठाः पितरो बान्धवादयः ।
मृताः असंस्कृताः ये च तेभ्यः पिण्डंददाम्यहम् ॥१५॥
ये केचित् प्रेतरूपेण वर्तंते पितरो मम ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन शाश्वतीम् ॥१६॥
येऽत्रान्धवा बान्धवा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१७॥
पितृवंशे मृताः ये च मातृवंशे तथैव च ।
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवाः मृताः ।
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।
क्रिया लोपगताश्चैव जात्यन्धाश्च कुले मम ।
येषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१८॥
आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ।
वंशद्वयेऽस्मिन्मम दासभूताः भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ।

मित्राणिसर्वे पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये ममसंगताश्च तेभ्यः स्वधा पिंडमहं ददामि।

इस प्रकार बत्तीस मन्त्रों से पुरुषों के लिए पिण्ड देकर इन्हीं मन्त्रों में स्त्रीलिंग का प्रयोग करते हुए स्त्रियों के लिए भी ऊपर लिखे सभी मन्त्रों से पिण्डदान करे। मन्त्रों में परिवर्त्तन नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए। जैसे—

अस्मत्कुले मृतायाश्च गतिर्यासां न विद्यते।
तासामुद्धरणार्थाय इमं पिंडं ददाम्यहम्॥

इत्यादि। अर्थात् "येषां" के स्थान पर "यासां" "ये" के स्थान पर "या" "घातिनः" की जगह "घातिन्यः" पद का प्रयोग करे। शेष सभी पहले के समान होंगे।

अब माता के लिये सोलह पिण्ड दूसरी वेदी पर नीचे लिखे मन्त्रों से देवे। इसे मातृशोडसी कहते हैं। जैसे—

'आगर्भज्ञानपर्यन्तं पालितो यत्वया ह्यहम्।
आवाहयामि ताः मातुर्दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥

इस मन्त्र से प्रार्थना कर पिण्डदान करे।

"गर्भोद्गमने दुःखं विषमे भूमि वर्त्मनि।
तस्य निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१॥
मासि मासि कृतं कष्टं वेदना प्रसवेषु च।
तस्य-निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥२॥

सम्पूर्णे दशमे मासि चात्यन्तं मातृपीडनम् ।
तस्य निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥३॥
पिबेच्च कटुद्रव्याणि क्वाथानि विविधानि च ।
तस्य निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥४॥
पद्भ्यां प्रजायते पुत्रो जनन्याः परिवेदनम् । तस्य० ॥५॥
शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते माता विन्दति दुष्कृतम् । तस्य० ॥६॥
अग्निना शोषयेद्देहं त्रिरात्रोपोषणेन च । तस्य० ॥७॥
रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां भिद्यन्ते मातृकर्पटाः । तस्य० ॥८॥
दिवा रात्रौ यदा माता तदातिनिर्भरस्तनम् । तस्य० ॥९॥
माघे मासि निदाघे च शिशिरेऽत्यन्तदुःखिता । तस्य०॥१०॥
क्षुधया विह्वलं पुत्रं माता ह्यन्नं प्रयच्छति । तस्य०॥११॥
पुत्रो व्याधिसमायुक्तो माता हा क्रन्दकारिणी । तस्य०॥१२॥
यमद्वारे महाघोरे पथि माता च शोचति । तस्य०॥१३॥
अल्पाहारस्य करणी यावत्पुत्रश्च बालकः । तस्य०॥१४॥
गात्रभङ्गा भवेन्माता मृत्युरेव न संशयः । तस्य० ॥१५॥
पिण्डैः षोडशभिर्विद्वान् यः पुत्रः श्राद्धमाचरेत् । तस्य०१६।

ऊपर लिखे सोलह मन्त्रों से माता को अलग पिण्ड देना चाहिए। और भी मातृकुल, पितृकुल, चाचा, ताऊ, श्वसुरकुल, मौसा-मौसी, बुआ, आदि तमाम लोगों के नाम से गया में पिण्ड दान प्रत्येक वेदी पर करे।

अन्तु, अब कुशा से "लेपभागभुजः पितरः तृप्यन्तु" इस वाक्य द्वारा पिण्डासन रूप कुशा के मूल में हाथ पोंछ ले।

बाद में सव्य से तीन बार आचमन तथा विष्णुस्मरण करके अपसव्य से—

"अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मावृषायध्वम्"

इस वाक्य द्वारा उत्तर दिशा से श्वांस खींचकर—

'ॐ अमी मदन्त पितरो तथा भागमावृषायिषत।

इस मन्त्र से प्रथम बेदी पर पिता आदि तीन के निमित्त श्वास छोड़े पुनः—

'अत्र मातरो मादयध्वं यथाभाग मावृषायध्वम्।

इस मन्त्र से उत्तर दिशा से श्वांस खींचकर—

ॐ अमीमदन्त मातरो यथाभाग मावृषायिषत।

इस मन्त्र से दूसरी वेदी के तीनों पिण्डों पर श्वांश छोड़ें पुनः ॐ अत्र मातामहादयो मादयध्वं यथाभाग मावृषायध्वम्।

इस वाक्य से श्वांश खींचकर—

अमी मदन्त मातामहा यथाभाग मावृषायिषत।

इससे श्वांस तिसरी बेदी पर छोड़ें। अथ च चौथी वेदी पर भी इसी प्रकार छोड़ें।

पुनः अवनेजन पात्र तथा मोटकादि लेकर—

'ॐ अद्यामुक गोत्र पितः अमुकशर्मन् वसुरूप पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा।

ऐसा संकल्प करके प्रत्यव नेजन देव तथा आसन संकल्प-प्रकरण के अनुसार संकल्प में परिवर्तन कर तथा ऊपर लिखे संकल्प के—

'पिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।'

इस प्रकार संकल्प द्वारा शेष पिण्ड पर भी प्रत्यवनेजन प्रदान करें।

बाद में निवी खोलकर सव्य से आचमन करके अपसव्य होकर दोनों हाथो से—

'ॐ नमो वः, पितरो रसाय नमो वः, पितरः शेषाय नमो वः, पितरो जीवाय नमो वः, पितरः स्वधायै नमो वः, तपिरो घोराय नमो वः, पितरो मन्यवे नमो वः, पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वेष्म।

इस मन्त्र से पिता आदि तीन तथा मातामह आदि तिनों के पिण्डों पर सूत्र चढ़ावे। तथा "नमो धो मातरो रसाय,, इस प्रकार पितरों के स्थान में "मातरो" ऐसा परिवर्तन करके उपर वाले ही मन्त्र से माता आदि तीन तथा मातामही आदि तीन के पिण्डों पर भी सूत्र चढ़ावे।

अथ च 'एतद्वः पितरो वासः, एतद्वः मातरो वासः, एतद्वो मातामहादयो वासः, एतद्वो मातामह्यादयो वासः।

ऐसे मोटक तिल जल से चार संकल्प करे।

पुनः प्रत्येक पिण्डों पर गन्ध-पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल आदि चढ़ाकर पिण्डशेषान्न पिण्ड के पास चढाकर सव्य से विश्वेदेवा के भोजनपत्रों पर तथा अपसव्य से पितरों के भोजन पत्रों पर "ॐ शिवा आपः सन्तु" इससे जल "ॐ सौमनस्यमस्तु" इससे पुष्प "ॐ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु इससे जव। पुनः—

'ॐ अमुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो वसुरूपस्य दत्तैतदन्नापानादिकमक्षय्यमस्तु।

इस वाक्य से पिता के लिये अक्षय्योदक देकर—

'ॐ अमुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मण रुद्ररूपस्य

दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।'

इस वाक्य से पितामह के लिए तथा —

'ॐ अद्यामुकगोत्रस्य प्रपितामहस्य'मुकशर्मणः आदित्य-रूपस्य दत्तैतदन्नपादादिकमक्षय्यमस्तु ।

इससे प्रपितामह के निमित्त अक्षय्यादक प्रदान करे बाद में

ॐ अमुकगोत्राया मातुरमुकदेव्या गंगारूपाया दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

इस वाक्य से माता के लिये अक्षय्योदक प्रदान करके।

'पितामह्या अमुकदेव्याः यमनारूपायाः' तथा प्रपिता-मह्या अमुकदेव्याः सरस्वती रूपायाः'

इस प्रकार ऊपर के संकल्प में परिवर्त्तन करके पितामही और प्रपितामही के लिये भी अक्षय्योदक प्रदान करे। बाद में

'ॐ अमुकगोत्रस्य मातामहस्यामुकशर्मणः वसुरूपस्य दत्तैतदन्नपादिकमक्षय्यमस्तु'

इस वाक्य से मातामह के लिये अक्षय्योदक देकर—

'प्रमातामहस्यामुकशर्मणः रूद्ररूपस्य 'तथा वृद्धप्रमाता-महस्यामुकशर्मणो आदित्यरुपस्य'

इस प्रकार संकल्प में परिवर्त्तन कर प्रमातामह, वृध-प्रमातामह के लिये भी अक्षय्योदक देवे।

तथा-अमुकगोत्राया मातामह्या अमुकदेव्या गंगारूपाया दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु'

इस वाक्य से मातामही के लिये अक्षय्योदक देंगे।

प्रमातामह्या अमुकदेव्या यमना रूपायाः' तथा वृद्ध-प्रमातामह्या अमकदेव्या सरस्वतीरुपायाः'

ऐसा संकल्प में परिवर्तन कर प्रमातामही और वृद्धप्रमातामही के लिए भी अत्तय्योदक देवे।

पुनः सव्य होकर पूर्वमुख दक्षिणदिशा में देखते हुए—

'अघोराः पितरः सन्तु, अघोराः मातरः सन्तु, 'अघोरा मातामहादयः सन्तु, अघोरा मातामह्यादयः सन्तु।

इन चार वाक्यों से चारो वेदियों के पिण्डों पर जलधारा देकर पूर्वमुख प्रसन्न मन से—

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धताम् दातारो नोऽभिवर्धन्ताम् वेदा सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।'

इससे आशीर्वाद की प्रार्थना करें।

बाद में अपसव्य से पवित्री के साथ तीन तीन कुशायें प्रत्येक वेदियों के पिण्डों पर रखकर—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृत घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयतः मे पितृन्।

इस मन्त्र से कुशा के ऊपर जलधारा देवे। किन्तु माता आदि तथा मातामही आदि के लिए उपरोक्त मन्त्र उच्चारण करते समय "पितृन्" की जगह "मातृः" ऐसा शब्द प्रयोग में लावें।

पुनः सव्य से सुवर्ण दक्षिणा तथा कुशा, यव, जल लेकर

'ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रय मात्रादित्रय मातामहादित्रय मातामह्यादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेषां देवानां

गयायां फल्गुतीर्थे कृतश्राद्धप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प करके चारों विश्वेदेवा के लिए सोने की दक्षिणा देवे। बाद में अपसव्य से चाँदी की दक्षिणा तथा मोटक तिल, जल लेकर—

ओं अद्यामुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां सपत्नीकाम् वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च मातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकामुकदेवीनां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अमुकामुकशर्मणां तथा मातामही प्रमातामही अमुक देवीनां गयायां फल्गुतीर्थे कृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थं रजतं चन्द्रदैवतंअमुकगोत्राया मुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प करके पितरों के निमित्त चाँदी दक्षिणा में देवे।

पुनः नम्र होकर पिण्डों को सूँघ कर उठावे और किसी पात्र में रखे तथा पिण्ड के नीचे की कुशा और अङ्गार भ्रमण कराया हुआ काष्ठ अग्नि में छोड़ दे। पुनः सव्य से आचमन एवं हरिस्मरण करके अपसव्य से रक्तादीप निर्वापित करके पुनः सव्य से हाथ-पाँव धोकर—

ओं प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणदेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः।

इस मन्त्र को पढ़कर कर्म पूर्तिनिमित्त विष्णुस्मरण करें।

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा।
मया गयां समासाद्य पितृणां निष्कृतिः कृता॥

'आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर।

त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽस्मि ऋणत्रयात् ॥२॥

इन सब श्लोकों को पढ़कर साक्षीभूत किसी ब्राह्मण को नमस्कार करके एवं दक्षिणा दे। बाद में अपने स्थान पर आकर बनी हुई रसोई से बलि-वैश्वदेव करके ब्राह्मण भोजन कराने के बाद स्वयं भी भोजन करे। इस प्रकार गयाश्राद्ध के पहले दिन का कर्म पूरा हुआ।

इस प्रकार द्वादस दैवत्यपार्वणश्राद्ध का विधान लिखा गया जो गया की प्रत्येक वेदियों पर तथा अन्य तीर्थों में भी करना चाहिये। जो द्वादश दैवत्य पार्वणश्राद्ध न करे उन्हे नवदैवत्य पार्वण करना चाहिये। नवदैवत्य में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही, मातामह सपत्नीक, प्रमातामह सपत्नीक, वृद्धप्रमातामह सपत्नीक इन नौ के नाम से ही श्राद्ध करना चाहिये। इसमें तीन विश्वेदेवा के तीन आसन, नौ पितरों के लिये नौ आसन आदि प्रदान कर पाँच वेदियाँ बनाकर तीन तीन पिण्ड तीनों वेदियों पर देने के बाद एक वेदी पर सभी अन्य कुटुम्बों के नाम से पिण्ड देवें तथा उसी पर 'अस्मत्कुले मृता ये च" इत्यादि उन्नीस मन्त्रों से उन्नीस पिण्ड देवें एवं एक वेदी पर केवल माता के निमित्त सोलह पिण्ड "गर्भेम् गमने दुःख इत्यादि सोलह मन्त्रों से देवे और सम्पूर्ण विधान लिखे अनुसार होगा।

गया के अतिरिक्त अन्य तीर्थों में श्राद्ध करने पर माता के लिये सोलह पिण्ड अलग नहीं दिये जायेंगे किन्तु "अस्मत्कुले मृता ये च०" इत्यादि उन्नीस मन्त्रों से अवश्य पिण्ड देना चाहिये। आगे तीर्थ श्राद्ध का विधान लिखा जाता है। गया और अन्य तीर्थों में भी निम्नविधि से ही तीर्थ श्राद्ध करना चाहिये।

तीर्थ श्राद्ध

जो लोग द्वादश दैवत्य अथवा नव दैवत्य पार्वणश्राद्ध न करें केवल पिण्डदान श्राद्ध मात्र नीचे लिखे विधान से करें। जैसे—श्राद्ध कर्त्ता अपने आसन पर पूर्वमुख बैठकर कुशा की पवित्री धारण करके आचमन, प्रणायाम आदि कर लेने के बाद

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥'

इस मन्त्र से अपने शरीर एवं श्राद्ध की समाग्री पर जल छींट कर पवित्र कर लें। तथा पीली सरसों लेकर "नमो नमस्ते" इत्यादि मन्त्र से दिग्रक्षण कर नीवि बाँध ले। बाद में "श्राद्धभूम्यै नमः" इस वाक्य से यव पुष्प से श्राद्धभूमि की तीन बार पूजा करें।

पुनः—'ॐ तीर्थदेवताभ्यो नमः। ॐ भगवत्यै गयायै नमः। ॐ भगवते गदाधराय नमः।

इन वाक्यों से नमस्कार कर लेने के बाद देश काल उच्चारण करके—

ॐ अद्य मम समस्त पितृणामसद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनां च विष्णुलोकप्राप्तये गयायां फल्गुतीर्थे पिण्डदान-मात्रतीर्थश्राद्धमहं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके तीन बार गायत्री जपे तथा—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।

इस मन्त्र को भी तीन बार उच्चारण करें। रक्षादीप स्थापित करके अपसव्य होकर दक्षिणमुख बांये जघे को हाथ लम्बी और मोड़कर बैठ जाय तथा पिण्डदान के लिए अपने आगे एक चार

अंगुल ऊँची वेदी बनावे इसी तरह की तीन वेदियाँ माता आदि के पिण्डदान के लिए तथा एक शेष अन्य कुटुम्बों के पिण्डदान के लिए तथा "अस्मत्कुले मृता ये च" इत्यादि मन्त्रों से उन्नीस पिण्ड देने के लिए एवं मातृ षोड़शी के लिये एक अलग, इस प्रकार छः वेदियाँ और यदि पितामह प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह सपत्नीक पिण्डदान करना हो तो पाँच वेदियाँ बनावें। वेदी बन जाने पर—

'ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः'

इससे कुशा द्वारा वेदियों पर रेखा करके कुशा उत्तर दिशा में छोड़े।

'ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मान् ॥'

इस मंत्र से जलती हुई आग रेखाओं पर घुमाकर लकड़ी दक्षिण दिशा में छोड़ें।

पुनः सभी वेदियों के रेखाओं पर तीन तीन कुशाएँ दक्षिणाग्र बिछाकर पात्रों या पुटकों में जल, गन्ध, पुष्प देकर तथा एक पात्र तथा हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर—

ॐ अद्यामुकगोत्र अमुकशर्मन् वसुरूप पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

ऐसा संकल्प करके पात्र का आधा जल प्रथमवेदि पर बिछाये हुए कुशा के मूल में गिराकर शेष जल सहित पात्र वेदी के पास स्थापित करे। पुनः दूसरा पात्र तथा मोटक, तिल, जल हाथ में लेकर—

ॐ अद्यामुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप पिण्ड-स्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते स्वधा।

इस संकल्प से कुशा के मध्य में तथा एक पात्र मोटक तिल जल लेकर—

ॐ अद्यामुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा ।

ऐसा संकल्प कर कुशा के अन्त में पात्र का आधा जल छोड़कर शेष जल सहित पात्र वेदी के पास रख दें ।

पुनः इसी प्रकार दूसरी वेदी पर बिछाये हुए कुशा पर माता पितामही प्रपितामही के निमित्त तीसरी वेदी पर मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह के निमित्त तथा चौथी वेदी पर मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही के निमित्त अवनेजन प्रदान कर शेष दो वेदियों में से एक पर समस्त कुटुम्ब के निमित्त एवं एक पर मातृषोड़शी निमित्त अवनेजन प्रदान करे ।

पुनः खीर चावल का चूर्ण यव या गोधूम का चूर्ण आदि में तिल, मधु, घी मिलाकर पिण्ड बनाकर एक पिण्ड बाये हाथ में लेकर दाहिने हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर—

ओं अद्य अमुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् वसुरूप एष पिण्डः ते स्वधा ।

ऐसा संकल्प करके पहली वेदी पर कुशामूल में पिण्ड देवे । पुनः पिण्ड एवं कुशा आदि लेकर—

'ओं अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप एष पिण्डस्ते स्वधा ।

कुशा के मध्य में—

'ओं अद्यामुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप एष पिण्डः ते स्वधा ।'

ऐसा संकल्प करके कुशा के अन्त में पिण्ड देवे ।

पुनः—'ओं अद्यामुकगोत्रे अस्मन्मातः अमुकदेवि गयारूद एष पिण्डः ते स्वधा ।' ओं 'अद्य द्यमुकगोत्रे पितामहि

अमुकदेवि यमुनारूपे एष पिण्डः ते स्वधा।' ॐ अद्यामुक गोत्रे प्रपितामही अमुकदेवि सरस्वतीरूपे एष पिण्डः ते स्वधा।'

इन तीन संकल्पों से माता, पितामही प्रपितामही के निमित्त दूसरी वेदी पर कुशा के मूल मध्य एवं अन्त भाग में पृथक-पृथक एक एक पिण्ड देवे।

पुनः—'ॐ अद्यअमुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् वसुरूप एष पिंडः ते स्वधा।' 'ॐ अद्यामुक गोत्र प्रमातामह अमुकशर्मन् रूद्रस्वरूप एष पिण्डः ते स्वधा।' 'ॐ अद्य अमुकगोत्र वृद्धप्रमातामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप एष पिंडः ते स्वधा।'

इन तीन संकल्पों द्वारा तीसरी वेदी पर मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह इन तीनों के निमित्त तीन पिण्ड प्रदान करे।

बाद में—,ॐ अद्य अमुकगोत्रे मातामही अमुकदेवि गंगारूपे एष पिंडः ते स्वधा।' 'ॐ अद्य अमुकगोत्रे प्रमातामही अमुकदेवि यमुनारूपे एष पिंडः ते स्वधा।' 'ॐ अद्य अमुकगोत्रे वृद्धप्रमातामही अमुकदेवि सरस्वती रूपे एष पिंडः ते स्वधा।'

इन तीन संकल द्वारा चौथी वेदी पर मातामही, प्रमातामही वृद्धप्रमातामही के निमित्त तीन पिण्ड देवे।

अथ च स्त्री, चाचा, ताऊ, चाची, ताई,भाई,फूफा,फूआ,मामा, मामी, मौसा, मौसी, श्वशुर, सास, आचार्य, आचार्यपत्नी,

बहन, बहनोई, साला, साले की पत्नी, मित्र, दास, दासी आदी जितने लोगो का नाम याद हो, सभी के निमित्त पाँचवी वेदी पर पिण्डदान करके पुनः पार्वं श्राद्ध प्रकरण में लिखे हुए "अस्मत्कुले मृता ये च" इत्यादि उन्नीस मन्त्रों से पिण्ड देकर छठी वेदी पर "गर्भोद्गमने दुःखं" इत्यादि मन्त्रों से माता के निमित्त सोलह पिण्ड देवे। पुनः कुशा से पिण्डासन कुशा के मूल में "लेप भागभुजः पितरस्तृप्यन्तु" इस वाक्य से हाथ पोछ लें।

बाद में सव्य से आचमन कर विष्णुस्मरण करके अपसव्य सेः—

'ॐ अत्र पितरो मादयध्वम् यथाभाग मावृषायध्वम्।

इस वाक्य से उत्तर दिशा से श्वांस खींचकर।

'अमी मदन्त पितरो यथा भाग मावृषायिषत।

इस वाक्य से पिण्ड पर श्वांस छोड़ें। इसी प्रकार अन्य वेदियों पर भी श्वांस छोड़ें। केवल माता आदि स्त्री पक्ष के लिए "पितरो" की जगह पर "मातरो" शब्द का प्रयोग करे।

पुनः शेष जल सहित अवनेजन पात्र तथा मोटक, तिल, जल लेकर—

'ॐ अमुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा।

ऐसा संकल्प करके पिता के पिण्ड पर जल गिरा दे और इसी प्रकार नाम गोत्र युक्त संकल्प वाक्य द्वारा शेष सभी पिण्डों पर प्रत्यवनेजन जल देवे।

बाद में पूर्व में बाँधी हुई नीवी खोल दे और दोनों हाथो से सूत्र (सूत) लेकर—

'ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शेषाय नमो वः पितरो जिवाय नमो वः पितरः

स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः, पितरः पितरो दत्त सतो वः, पितरो द्वेष्म ।

इस मन्त्र से प्रत्येक पिण्ड पर सूत्र चढ़ाकर—

एतद्वः पितरो वो वासः, एतद्वो मातरो वासः, एतद्वो मातामहादयो वासः । एतद्वो मातामह्यादयो वासः । एतद्वः पितृव्यादयो वासः ।

ऐसा अलग-अलग संकल्प करे ।

गन्ध, पुष्प तुलसी धूप दीप ताम्बूल आदि से प्रत्येक पिण्डों की पूजा कर पिण्डों की पवित्री सहित कुशा पर रख करके

ओं ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वास्थ तर्पयत मे पितॄन् ।

इस मन्त्र से जलधारा देवे। पुनः दक्षिणा द्रव्य जल मोटक तिल लेकर—

'ओं अद्यामुकगोत्राणां मम समस्तपितृणामसद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनां च विष्णुलोकप्राप्तये गयायां फल्गुतीर्थे कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठार्थं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दाक्षिणात्वेन दतुमहमुत्सृजे ।

ऐसा संकल्प करके चाँदी दक्षिणा देवे। पुनः पिण्डों को सूंघ कर उठा ले तथा पिण्ड के नीचे की कुशा और अङ्गार भ्रमण कराया काष्ठ दोनों आग में छोड़ दे। पुनः बलिवैश्वदेव करके ब्राह्मण भोजन कराके स्वयं भोजन करे। यहाँ तीर्थ श्राद्ध पुरा हुआ—

पुनः दूसरे दिन गया से वायव्यकोण में स्थित प्रेत पर्वत के मूल देश में ब्रह्मकुन्ड नामक सरोवर में—

ओं मम समस्तपितृणां संभावितप्रेत्वनाशपूर्वकशाश्वतब्रह्मलोकप्राप्तये ब्रह्मकुण्डे स्नानमह करिष्ये ।

ऐसा संकल्प करके ब्रह्मकुण्ड में स्नान तर्पण कर लेने के बाद द्वादश दैवत्य या नवदैवत्य पार्वण श्राद्ध अथवा तीर्थश्राद्ध करके श्राद्ध के लिए जल लेकर प्रेत पर्वत पर चढ़कर प्रेतशिला के पास जाकर हाथ, पाँव धोकर श्राद्धयोग्य स्थान प्रक्षालित करे। बाद में आचमन कर दक्षिणमुख बैठ अपसव्य होकर पितरों का ध्यान करते हुए—

ओं कव्यवाडनलः सोमो यमश्चैवार्यमा तथा।
अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः॥
आगच्छन्तु महाभागा युष्माभीरक्षितास्त्विह।
मदीयाः पितरो ये च कुले जाता सनाभयः॥
तेषां पिण्डदानाय आगतोऽस्मि गयामिमाम्।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन शाश्वतीम्॥

इन श्लोकों को पढ़कर अद्येत्यादि देशकाल उच्चारण करके-

'अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं मम समस्त पितृणां पुनरावृत्तिरहितब्रह्मलोकप्राप्तिकामः गयायां प्रेतशिलायां श्राद्धं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके द्वादश दैवत्य या नव दैवत्य पार्वण अथवा पिण्डदान मात्र तीर्थश्राद्ध करके सभी बन्धुओं के नाम से पिण्ड देकर "अस्मत्कुले मृता ये च" इत्यादि मन्त्रों से उन्नीस पिण्ड एवं मातृ षोड़शी निमित्त सोलह पिण्ड देकर तिल मधु, घी मिलाकर सत्तू का पिण्ड बना लें तथा पहले श्राद्ध की हुई वेदी के दक्षिण भाग में बिछाकर कुशा के ऊपर पहले—

'आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु

पितरः सर्वे मातृमातामहायाः ॥ अतीतकुलकोटिनां सप्तद्वीप निवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाँल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।

इन दो मन्त्रों से तिल, जल, कुशा पर देकर –

'ॐ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः । मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही । मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः । तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ।'

इन दो मन्त्रों से सत्तु के बारह पिण्ड कुशा पर देवे। इसी प्रकार अन्य बन्धु वर्गो के लिए भी नाम उच्चारण कर प्रेतत्वमुक्ति की कामना से उसी कुशा पर पिण्डदान करे।

यदि किसी व्यक्ति की सन्तान जीवित न रहती हो तथा वह व्यक्ति सन्तान की कामना से गया श्राद्ध करने गया हो तो ऐसी परिस्थिति में वह

'ॐ यो मे प्रजां नाशयति जीवो नश्यति वा स्वयम् । तस्य काश्यपगोत्रस्य वायुरुपस्य देहिनः । प्रेतस्योद्धारविषये तस्मै पिण्डं ददाम्यहम् ।१। यो मे प्रजां नाशयति जीवो नश्यति वा स्वयम् । तस्य प्रेतस्य दत्तोऽत्र पिण्डोऽयमुपतिष्ठताम् ।२। यो मे प्रजां नाशयति जीवो नश्यति वा स्वयम् । विष्णुरुपः स लभतां यस्मै पिण्डार्पणाहुतिः ॥३॥ तस्य कश्यपगोत्रस्य वसुरुपस्य देहिनः । अयं पिण्डो मया दत्तो यः पिडां कुरुते मम ।४। इम तिलमयं पिण्डं मधुसर्पिसमन्वितम् । ददामि तस्मै

प्रेताय यः पीडां कुरुते मम ॥५॥

इन मन्त्रों से प्रेत के निमित्त पिण्ड देवे।

पुनः एक पात्र में तिल, जल लेकर प्रदक्षिणा क्रम से सभी पिण्डों पर तीन बार जल से अभिषेक करके—

'ओं ये च वो ये चास्मांश्चसन् याश्च वो याश्चस्मा-श्चसंस्ते चावाहन्तां ताश्चवाहन्तां तृप्यन्तु भवन्तस्तृप्यन्तु भवत्यस्तृप्यन्तु भवत्यस्तृप्यत गोत्रान् पुत्रानभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः स्वधा पितृभ्यो मातृभ्योऽमृतं दुहाना आपो देवीरुभयास्तर्पयन्तु तृप्यत।'

इस मन्त्र से प्रणाम करके—

'ओं पित्रादयः क्षमध्वम्'

इस वाक्य से क्षमा याचना करके सव्य से आचमन करें।

ओं साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥ आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर॥ त्वमेव साक्षी भगवन्-नृणोऽहमृणत्रयात्॥

इन दो मन्त्रों से साक्षीभूत ब्राह्मण को नमस्कार करे और दक्षिणा देवे या इस मन्त्र को उच्चारण मात्र करे।

इसी प्रकार प्रेतपर्वत पर पुनः उपरोक्त विधान से ही पार्वण या पिण्ड दान मात्र श्राद्ध "काव्यवाडनल" इत्यादि से आरम्भ कर साक्षी श्लोक (पठन पर्यन्त) करके—

'ओं अद्य पित्रादीनां प्रेतत्वमुक्तिपूर्वक स्वर्गतप्रेतत्वा-भावकामः प्रेतपर्वते तिलमिश्रसक्तुनिक्षेपं तिलमिश्रज-लाञ्जलिदानं च करिष्ये'।

ऐसा संकल्प करके—

'ओं ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु सक्तुभिस्तिलमिश्रितैः॥'

इस मन्त्र से तिलयुक्त सत्तू प्रेत पर्वत पर निक्षेप करें।

'ओं आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं यत्किञ्चित्सचराचरम्। मया दत्तेन तोयेन तृप्तिमायान्तु सर्वशः॥'

इस मन्त्र से तिलयुक्त जलाञ्जलि देवे। पुनः यथा शक्ति ब्राह्मण को दक्षिणा देकर प्रेतपर्वत का कर्म पूरा करे।

पुनः रामशिला के नीचे रामकुण्ड पर आकर —

'ओं अद्येत्यादि अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं जन्मान्तर कृतदुष्कृतविनाशकामो रामतीर्थे स्नानमहं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके। 'ओं जन्मान्तरशतं साग्रं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। तत्सर्वं विलयं यातु रामतीर्थाभिषेचनात्। इस मन्त्र से स्नान करके पहले लिखे हुए विधान से देव ऋषि पितृतर्पण करे।

बाद में 'ओं स्वस्य विष्णुलोकप्राप्तिकामः पितृणां प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वक पितृपदप्राप्तिकामो रामतीर्थे श्राद्धं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके पहले लिखे हुए विधान से पार्वण श्राद्ध या पिण्डदान मात्र श्राद्ध (कव्यवाडनल' यहाँ से आरम्भ कर साक्षी' पर्यन्त) करे। पुनः रामशिला पर्वत पर जाकर वहाँ भी 'कव्यवाडनल' यहाँ से आरम्भ कर 'साक्षी' श्रवण पर्यन्त श्राद्ध करके—

'ओं राम राम महाबाहो देवानाभयंकर। त्वां नमाम्यत्र देवेश मम नश्यतु पातकम् ॥'

इस मन्त्र से राम को नमस्कार करके नग नामक पर्वत पर स्थित काकबलि नामक स्थान पर आ जाय।

काकबलि में ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्यां याम्यां नैऋ‌र्तास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम्।

इस मन्त्र से "इदमन्नं वायसेभ्यो नमः" इस वाक्य को उच्चारण कर काग के लिये देवे। पुनः—

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥' इदमन्नं श्वाभ्यां नमः।'
इस वाक्य से श्वान के लिए बलि देवे। पुनः—

'यमराजधर्मराजौ निश्चलार्थं व्यवस्थितौ। ताभ्यां बलिं प्रयच्छामि पितृणां मुक्तिहेतवे।' इदमन्नं यमराजधर्मराजाभ्यां नमः।'

इस वाक्य से यमराज धर्मराज के लिए बलि देकर अपने स्थान पर आ जाये तथा बलिवैश्वदेव ब्राह्मण भोजनादि कराके स्वयं भोजन करे। इस प्रकार दूसरा दिन कर्म पूरा हुआ।

पुनः तीसरे दिन स्नानादि नित्य कर्म से निवृत होकर उत्तर मानस में जाकर—'ओं अद्य आत्मशुद्धिसूर्यलोकादिप्राप्तिकामः उत्तरमानसे स्नानमहं करिष्ये।

ऐसा सङ्कल्प करके उत्तर मानस सरोवर में 'ॐ उत्तरे मानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये। सूर्यादिलोकसंसिद्धयै पितृणां मुक्तिहेतवे।' इस मन्त्र से स्नान करके—'ओं अद्यामुकगोत्र

अमुकशर्माहं गयायां उत्तरमानसतीर्थे देवर्षिपितृतर्पणं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके देव, ऋषि, पितृतर्पण पहले लिखे विधान से करे।

पुनः देशकाल उच्चारण करके—

'ओं अद्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं मम समस्तपितृणां अक्षयतृप्तिकामः गयायां उत्तरमानसतीर्थे श्राद्धमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके पहले लिखे विधान से "ॐ कव्यवाडनल" यहाँ से प्रारम्भ कर "साक्षीश्रवणे" तक श्राद्ध करके—

'ओं नमो भगवते भर्त्रे सोम भौमज्ञरूपिणे। जीव भार्गव सौरेयराहुकेतु स्वरूपिणे॥'

इस मन्त्र से उत्तरार्क (उत्तरीय सूर्य) की पूजा-नमस्कार करके मौन होकर दक्षिण मानस में जाकर वहाँ उदीची तीर्थ में—

'ओं आत्मविशुद्धिसर्यलोकादि प्राप्तिब्रह्महत्यादिपापसमूह-नाशकामः पितृमुक्तिकामश्च उदीचीतीर्थे स्नानमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके—

ओं ब्रह्महत्यादिपापौघयातनायाः विमुक्तये। दिवाकर करोमीह स्नानं दक्षिणमानसे॥'

इस मन्त्र से उदीची तीर्थ में स्नान करके पितरों का तर्पण करे तथा—

ओं अद्य पितृमुक्तिकामः उदीचीतीर्थे श्राद्धमहं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके 'ओं कव्यवाडनल' यहाँ से

आरम्भ कर "साक्षी वचन" तक पार्वण या पिण्डदान मात्र श्राद्ध करे।

पुनः कनखल तीर्थ में पूर्वोक्त विधि से स्नान, तर्पण एवं श्राद्ध करके—

'ओं नमामि सूर्यं तृप्त्यर्थं पितृणां तारणाय च। पुत्र-पौत्रधनैश्वर्यायुरारोग्यवृद्धये॥'

इस मन्त्र से मौन होकर दक्षिण सूर्य को नमस्कार करके गदाधर भगवान के मन्दिर के समीप फल्गु तट पर स्थित जिह्वा-लोल नामक स्थान में जाकर पहले लिखे गये विधान से श्राद्ध करके गदाधर भगवान को पञ्चामृत से स्नान कराके विधिवत् पूजन करे। पुनः स्थान पर आकर बलिवैश्वदेव कर ब्राह्मण भोजनादि कार्य सम्पादन करे। इस प्रकार तीसरे दिन का कार्य पूरा हुआ।

चौथे दिन गया से प्रायः चार मील दक्षिण बोधगया मार्ग में जाकर फल्गु नदी पार कर के सरस्वती नदी में स्नान-तर्पण करके पञ्च रत्न दान के बाद मतङ्गवापी तीर्थ में जाकर वहाँ—

ओं अद्य पितृणामक्षयतृप्तिकामो मतङ्गवाप्यां श्राद्धमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प करके पार्वण या पिण्डदान मात्र श्राद्ध पहले लिखे हुए विधान से करके—

ओं प्रमाणा देवताः सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः। मयागत्य मतङ्गेऽस्मिन् पितृणां निष्कृतिः कृता॥ इस मन्त्र से मतङ्गेश को नमस्कार करके धर्मारण्य में स्थित रहःकूप पर जाकर पहले लिखे गये विधान से श्राद्ध करके धर्मेश्वर को प्रणाम करके फल्गु नदी पार करके बोधगया आ जाये।

यद्यपि —'धर्मं धर्मेश्वरं नत्वा महाबोधितरुं नमेत्। इस वायु पुराण के वचनानुसार बोधिवृक्ष को नमस्कार मात्र यहाँ का कृत्य है, तथापि लोग यहाँ श्राद्ध दान करते हैं। अतः यहाँ पर भी श्राद्ध करके—

ओं चलद्दलाय वृक्षाय सर्वदा स्थितिहेतवे। बोधिसत्वाय यज्ञाय अश्वत्थाय नमो नमः॥ एकादशोऽसि रुद्राणां वसूनां पावकस्तथा। नारायणोसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल॥ अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकालम्। अतः शुभस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि॥ अश्वत्थरूपिणं देवं शंखचक्रगदाधरम्। नमामि पुण्डरीकाक्षं वृक्षरूपधरं हरिम्॥ बोधिरूपं महावृक्षं नारायणमनःप्रियम्। गयां समागत्य मया पितृणां निष्कृतिः कृता॥ येऽस्मत्कुले मातृवंशे बान्धवाः दुर्गतिं गताः। त्वद्दर्शनात्स्पर्शनाच्च स्वर्गतिं यान्तु तेऽक्षयाम्॥ ऋणत्रयं मया दत्तं गयामागत्य वृक्षराट्। त्वत्प्रसादान्महापापाद्विमुक्तोऽहं भवार्णवात्॥

इन मन्त्रों से अश्वत्थ वृक्ष रूपी विष्णु को प्रणाम कर चौथे दिन का कृत्य समाप्त करे। पुनः बलिवैश्वदेव, ब्राह्मण-भोजनादि कर्म करे।

पाँचवें दिन ब्रह्म सरोवर में स्नान-तर्पण आदि करके—

"ओं पितृणां ब्रह्मलोकप्राप्तिकामनया कूपयूपयोर्मध्ये श्राद्धमहं करिष्ये॥

ऐसा संकल्प करके पहले लिखे विधान से पार्वण या पिण्डदान मात्र श्राद्ध करके। **ओं आम्रं ब्रह्मसरोभूतं सर्वदेवमयं तरुम्।**

विष्णुरूपं प्रसिञ्चामि पितृणाञ्च विमुक्तये।

इस मन्त्र से ब्रह्मसरोवर के जल से आम्र सेचन करके ब्रह्मकूप की प्रदक्षिणा करे।

पुनः—'**ओं नमो ब्रह्मणेऽजाय जगज्जन्मादिकारिणे।**
भक्तानां च पितृणां च तारणाय नमो नमः॥

इस मंत्र से तारक ब्रह्म को नमस्कार करने के बाद काकबलि प्रकरण में लिखे गये तीन मन्त्रों से काक, श्वान और यम को बलि देकर ब्राह्मण-भोजनादि करा के पाँचवें दिन का कर्म पूरा करे।

पुनः छठे दिन से आरम्भ कर आठवें दिन तक विष्णुपद मन्दिर के पास १६ वेदी नामक स्थान में निम्नलिखित वेदियों पर तर्पण तथा श्राद्ध करे।

१. रुद्रपद, २. विष्णुपद, ३. ब्रह्मपद, ४. कार्तिकपद, ५. दक्षिणाग्निपद, ६. गार्हपत्याग्निपद, ७. आहवनीयाग्निपद, ८. सूर्यपद, ९. चन्द्रपद, १०. गणेशपद, ११. सत्याग्निपद, १२. आवसथ्याग्निपद, १३. दधीचिपद, १४. कण्वपद, १५. मातगपद, १६. क्रौंचपद, १७. इन्द्रपद, १८. अगस्त्यपद, १९. कश्यपपद।

इतनी वेदियों पर पार्वण या पिण्ड दान मात्र श्राद्ध कर गजकर्ण में दूध का तर्पण करना चाहिये। सोलह वेदियों के श्राद्ध पूरे हो जाने पर सोलह मन अन्न दान करे। इस प्रकार सोलह वेदी का प्रकरण पूर्ण हुआ।

नवें दिन रामगया में तर्पण, श्राद्ध आदि करके तीन बालू के पिण्ड प्रदान करे तथा सौभाग्यपेटी दान करके भगवान श्रीरामको

ओं राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर। त्वां नमस्येऽत्र देवेश मम नश्यतु पातकम् ॥"

इस मन्त्र से प्रार्थना कर ब्राह्मण भोजनादि कराके उस दिन का कर्म पूरा करें।

दसवे दिन गयाशिर और गयाकुप नामक स्थान में पूर्वत् तर्पण, श्राद्ध सम्पन्न करे।

ग्यारहवें दिन मुण्डपृष्ठा, आदिगया, धौतपद, इन तीन स्थानों में पूर्वत् तर्पण एवं श्राद्ध करना चाहिये।

बारहवें दिन भीमगया, गो प्रचार, एवं गदालोल में श्राद्ध कर गदालोल तीर्थ में ही सुवर्ण दान करें।

तेरहवें दिन फल्गु नदी में स्नान कर दूध का तर्पण एवं सायंकाल में दीप दान करें (बहुत लोग तेरहवें दिन फल्गुतट पर श्राद्ध भी करते हैं।)

चौदहवें दिन वैतरणी में स्नान, तर्पण आदि करके श्राद्ध करने के पश्चात् नीचे लिखे बिधान से गोदान करे।

पहले—**"या सा वैतरणी नाम नदी त्रैलोक्यविश्रुता। सावतीर्णा महाभागा पितृणां तारणाय च।**

इस मन्त्र से वैतरणी की प्रार्थना करके गाय को आगे स्थापितकर "ओं गवे नमः" इस वाक्य से गाय की पूजा करने के बाद "ओ ब्राह्मणाय नमः" इस वाक्य से गोदान लेने वाले ब्राह्मण की पूजा करे। बाद में कुश, तिल, जल लेकर—

ओं अद्य त्रिसप्तकुलोद्धारकाम इमां गां रुद्रदैवतां अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ऐसा संकल्प कर ब्राह्मण को देवे। पुनः सुवर्ण हाथ में लेकर—

ॐ अद्य कृतैतद्गोदान प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ऐसा संकल्प करके गोदान प्रतिष्ठा के लिये दक्षिणा देवे। ब्राह्मण "स्वस्ति" इस वाक्य का उच्चारण करे। पुनः ब्राह्मण भोजन आदि सम्पन्न कर चौदहवें दिन का कृत्य पूर्ण करें।

पन्द्रहवें दिन अक्षयवट के नीचे तर्पण एवं श्राद्ध करके शय्यादान आदि करने के बाद तीर्थ ब्राह्मण को दक्षिणा देकर श्राद्ध-साफल्य की याचना करे। पुनः ब्राह्मण भोजन करा कर पन्द्रहवों दिन का कार्य पूरा करे।

पुनः सोलहवे दिन गायत्री घाट में स्नान, संध्या, तर्पण आदि कार्य सम्पन्न करने के बाद पहले लिखे गये विधान से श्राद्ध करें। आचार्य को दक्षिणा दे। पुनः ब्राह्मणभोजन आदि के बाद सोलहवों दिन का कृत्य पूर्ण करें।

पुनः पुना श्राद्ध से आरम्भ कर गायत्री घाट तक श्राद्ध करने में सत्रह दिन होते हैं। आजकल प्रचलित श्राद्ध इतने ही दिनों में सविधि पूर्ण होता है। कुछ लोग नौ दिन, तीन दिन, एक दिन मात्र ही श्राद्ध करते हैं वह भी उत्तम है। इसमें किसी का विरोध नहीं। ऊपर में गयाश्राद्ध का पूरा विधान लिखा गया। इसके अतिरिक्त कोटि तीर्थ रुक्मिणी कुण्ड मार्कण्डेयेश्वर, कोटीश्वर पाण्डुशिला, मधुश्रवा, दशाश्वमेधतीर्थ, मकाकाली, श्मशानाक्षी, मंगलागौरी, पितामहेश्वर, ब्रह्मयोनी गयाकुमार, गयागज, गयादित्य सोमकुण्ड, आकाशगंगा वटेश्वर

कपिलानदी, महेश्वरी कुण्ड, हेमकूट पर्वत, लोहदण्डगिरि, गृध्रकूटगिरि, गृधवट, मूलक्षेत्रसर, ऋणमोक्षेश्वर, पापमोक्षेश्वर गजगणेश इन सभी स्थानों में भी जाकर यथासम्भव स्नान, तर्पण; श्राद्ध दर्शन आदि कर्म करे।

तथा च—

एष पिण्डो मया दत्तस्तव हस्ते जनार्दन।
गयाशीर्षे त्वया देयो मह्यं पिण्डे मृतेमयि ॥१॥
यस्तु पिण्डो मया दत्तो यमुद्दिश्य जनार्दन।
देहि देव गयाशीर्षे तस्मै तस्मै मृते तु तम् ॥२॥
जनार्दन नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृरूपिणे।
पितृपित्रे नमस्तुभ्यं ममस्ते मुक्तिहेतवे ॥३॥
गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः।
तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् ॥४॥

इन चार मन्त्रों से अपने लिये अथवा अन्य किसी जिवित मनुष्य के लिए जनार्दन भगवान् के बांये हाथ में तीन पिण्ड देवे।

तथा च गया की प्रदक्षिणा कर अपनी शक्ति एवं उत्साह के अनुसार गदाधर भगवान की पूजा करे—

'गदाधरं कलिगतकल्मषापहं गयागतं विदितगुणं गुणातिगम्। गुहागतं गिरिवरगेहगोपितं सुरार्चित वरदमहं नमामि तम् ॥१॥ शुभश्रियम् त्रिदशगुणदिसुश्रियं यशः श्रियं दितिभयदारणश्रियम्। कलागतं कलिमलमर्दनश्रियं

दृढादृढं परिवृढगाढ़शक्तिभिः ॥२॥ विदेहकं करणकला विवर्जितं वियन्मरुद्धिमकरवारिभूषितम् । गदाधरं ध्वनिकर-मुखवर्जितं परं नमाम्यहं परममनादिदेवम् ॥३॥ मनोगतं मतिगतिवर्जितं त्वजं शमात्मकं श्रुतिशिरसि स्थितं बुधम् । चिदात्मकं कलिगतकारणातिगं गदाधरं हृदयगतं नमाम्यहम् ॥४॥ इस ब्रह्मस्तुति से तथा—

ओं अव्यक्तरूपो यो देवो मुण्डपृष्ठाद्रिरूपधृक । फल्गुतीर्थादिरूपेण तं नमामि गदाधरम् ॥१॥ व्यक्तरूपो हि यो देवो जनार्दन स्वरूपतः । मुण्डपृष्ठे स्वयं तं तु प्रणमामि गदाधरम् । शिलायां ब्रह्मरूपिण्यां स्थितं ब्रह्मादिभिः सुरैः पूजितं सत्कृतं देवैस्तं नमामि गदाधरम् ।३। महादेवं च जगतो व्यक्तस्यैकं हि कारणम् । अव्यक्तज्ञानरूपं तं नमाम्यादि गदाधरम् ४' यं च दृष्ट्वा तथा स्पृष्ट्वा पूजयित्वा प्रणम्य च श्राद्धादौ ब्रह्मलोकाप्तिस्तं नमामि गदाधरम् । देहेन्द्रियमनो बुद्धिप्राणाहङ्कारवर्जितम् । जाग्रत्स्वप्नविनिर्मुक्तं नमाम्यादि गदाधरम् ।६। नित्यानित्यविनिर्मुक्तं सामान्यानन्दवर्जितम् । तुरीयं ज्योतिरात्मानं तं नमामि गदाधरम् ।

इस रुद्रकृत स्तुति से गदाधर भगवान को प्रणाम करके

ओं आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर ।
त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात् ॥'

इस श्लोक से प्रार्थना कर अपने घर आ जायें। घर पर गणेशादि इष्ट देवता की पूजा-हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद बन्धु-बान्धवों के साथ स्वयं भोजन करे। इस प्रकार गया श्राद्ध का विधान पूरा हुआ।

गया के श्राद्ध-स्थलों की नामावली

१—पुनः पुना, २—फल्गु, ३—ब्रह्मकुण्ड, ४—प्रेतशिला, ५—रामकुण्ड, ६—रामशिला, ७—काकबलि, ८—उत्तरमानस, ९—उदीची, १०—कनखल, ११—दक्षिणमानस, १२—जिह्वालोल (गदाधर भगवान का पूजन), १३—सरस्वती (स्नान तर्पण पचरत्न दान), १४—मतगवापी, १५—धर्मारण्य, १६—बोधगया, १७—ब्रह्मसरोवर (गदा की प्रदक्षिणा, तारक ब्रह्म दर्शन आम्र सेचन काकबलि), १८—रुद्रपद, १९—विष्णुपद, २०—ब्रह्मपद, २१—कार्तिकपद, २२—दक्षिणाग्निपद, २३—गार्हपत्नाग्निपद, २४—आह्वनीयाग्निपद, २५—सूर्यपद, २६—चन्द्रपद, २७—गणेशपद, २८—सत्याग्निपद, २९—आवसथ्याग्निपद, ३०—दधीचिपद, ३१—कण्वपद, ३२—मतंगपद, ३३—क्रौञ्चपद, ३४—इन्द्रपद, ३५—अगस्त्यपद, ३६—कश्यपपद, ३७—गजकर्ण दूध का तर्पण तथा १६ मन अन्न दान) ३८—सीताकुण्ड (सौभाग्य दान भी करे) ३९—गयाशिर ४०—गया कूप ४१—मुण्डपृष्ठा ४२—आदि गया ४३ धौतपद ४४ भीमगया ४५ गोप्रचार ४६ गदालोल ४७—फल्गू (दूध तर्पण दीप दान) ४८—वैतरणी (गोदान भी करे) ४९—अक्षयवट (यहाँ शय्यादान भी करें तथा सुफल लें) ५०-गायत्रीघाट। चावल खीर का पिण्डदान।

त्रिपिण्डीश्राद्ध

भूत-प्रेत, पिशाच, ब्रह्म-राक्षस आदि की बाधा या ज्वर पिड़ादि उपद्रव होने पर इन सबों की शान्ति के लिए त्रिपिण्डी श्राद्ध करना चाहिये। यह श्राद्ध कार्तिक से लेकर माघ पर्यन्त चार महीनों के दोनों पक्षों की एकादशी, पञ्चमी, अष्टमी, त्रयोदशी, तिथियों को करना चाहिये। किन्तु यदि पीड़ा की अधिकता हो तो समय की अपेक्षा न कर ऊपर लिखी गयी तिथियों में ही करे। यह श्राद्ध गया स्थित बोधगया की पूर्व दिशा में धर्मारण्य तीर्थ के रहकूप पर करना सर्वोत्तम है। यदि वहाँ जाना सम्भव न हो तब किसी पवित्र तीर्थ, नदी तट, शिवजी के समीप, तुलसी वृक्ष के पास, पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर करे। ❀

सर्वप्रथम किसी तीर्थ विशेष में जाकर स्नानादि से पवित्र हो आचमन, प्राणायाम आदि करके निम्नलिखित संकल्प करें

ॐ अद्य मासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं ममोपात्तपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके गयाश्राद्ध विधान में लिखी हुई विधि से अच्छी प्रकार तर्पण करें।

इसके बाद श्राद्धस्थल को गोबर आदि से लीपकर रक्षा-दीप प्रज्वलित करें। अनन्तर पूर्वमुख बैठ कर आचमन, प्राणायाम करने के बाद तीन कुशा, यव, अक्षत एवं जल लेकर श्री विष्णु (शालीग्राम) पूजन का संकल्प करें—

❀ इस श्राद्ध में यवचूर्ण, चावलचूर्ण और तिलचूर्ण के तीन पिण्ड दिये जाते हैं।

जैसे-ॐ तत्सदद्य मसोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रऽमुकशर्माहं श्री-परमेश्वरप्रीत्यर्थं त्रिपिण्डीश्राद्धाधिकारसिद्धयर्थं च षोडशोपचारैः श्रीविष्णुपूजनं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके इस पुस्तक के तीसरे खण्ड में (नारायण वलि विधान प्रकरण में) लिखी हुई विधि से अपने अङ्ग तथा देवता के अङ्ग में भी एक तन्त्र से न्यास कर ले। श्री विष्णु भगवान का पूजन विधिपूर्वक करके

अनादिनिधिनो देव शंख चक्र गदाधर। अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥

श्री विष्णु भगवान की पूजा हो जाने के बाद श्राद्ध आरम्भ करे। जैसे—सर्वप्रथम आचमन प्राणायाम करने के बाद दोनों हाथों में कुशा की पवित्री धारण कर ले पुनः—

श्रद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितृन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्।

इस मन्त्र से गयागदाधर एवं अपने पितरों का ध्यान करे। पश्चात् श्वेत सर्षप (सरसों) कुशा या पान के पत्ते पर लेकर—

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः।

इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये। बाद में हाथ में लिए हुए सरसों में से थोड़ा थोड़ा लेकर निम्नलिखित वाक्यों से सर्वत्र छोड़ें जैसे—

ॐ प्राच्यै नमः से पूर्व में, अवाच्यै नमः से दक्षिण में प्रतीच्यै नमः से पश्चिम में, उदीच्यै नमः से उत्तर में, अन्तारिक्षाय नमः से ऊपर में भूम्यै नमः से भूमि में। इस प्रकार सभी ओर सरसों छींट कर दिग्रक्षण करनेके बाद बचे हुए सरसो एवं कुशा को पानपत्र में लपेट कर अपने दाहिने कमर में खोस ले। इसे निवी बन्धन कहते हैं इसके बाद यव एवं पुष्प लेकर श्राद्धभूम्यै नमः इस वाक्य द्वारा तीन बार श्राद्धभूमि की पूजा कर ले।

इसके बाद कुशा रुप आसन पर पात्र रखकर उस पात्र में जल भरे और जल में कुशा की पवित्री देकर गन्ध, पुष्प तुलसी, यव, तिल, चावल भी उसमें देकर कुशा से स जल का अलोडन करे तथा—

वरो वरेण्यो वरदो वाराहो धरणीधरः। आयान्तु कर्मपात्रे-ऽस्मिन् सर्वदिक्षु भयापहाः। इसके बाद—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः। यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः यदि वा जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चकृमा वयम्। सूर्यो तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः।

इन तीन मन्त्रों से कलश का भी अभिमन्त्रण कर ले।

इसके बाद—**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुन्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।**
इस मन्त्र द्वारा कर्म पात्र के जल से अपना शरीर और सभी श्राद्धसामग्री को पवित्र कर ले।

पुनः अपसव्य होकर—अद्येत्यादि अमुकगोत्र अमुकशर्माहं मम कुले विविधपीडाकारिणां सन्ततिवृद्धिप्रतिबन्धकारिणां अपत्यादिहिंसकानां अस्मत्कुले प्रभवानां ज्ञाताज्ञातगोत्र-शर्मणां विप्राणां क्षत्रियाणां वैश्यानां शूद्राणां अनुलोम-जातीनां निषादजातीनां च पुंसां स्त्रीणां च भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-सत्वादि पापयोनिगतानां द्वेषादि-प्रीत्यादि-गृहधनादिसम्बन्धेन अस्मत्कुले पीडाकारिणां नागादीनां पिशाचत्वादि-दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां वायुरूपाणां सात्विकराजसतामसानां विष्णुब्रह्मरुद्रभयानां प्रेतानां प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक उत्तमलोकप्राप्तिकामः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्ध्यर्थं सकलपीडापरिहारार्थं अमुकक्षेत्रान्तर्गत अमुकतीर्थे दाल्भ्यो-क्तकल्पेन त्रिपिण्डीश्राद्ध करिष्ये। ऐसा संकल्प करे।

इसके बाद विष्णु शालीग्राम) भगवान् के दक्षिण की ओर सव्य से तीन बार गायत्री जपें एवं,

सात्विकेभ्यो राजसेभ्यो तामसेभ्यस्तथैव च।
विष्णुब्रह्मरुद्रेभ्यश्च नित्यमेव नमो नमः।

इस मन्त्र को भी तीन बार पाठ कर ले।

इतने कार्य हो जाने पर उसी स्थान में पश्चिम से आरम्भ कर पूर्व की ओर तक तीन कलश की स्थापना करे। पुनः पूजन किये हुए कलशों पर श्वेत, रक्त और काले रंग की पताका लगावे। पश्चात् सोना, चांदी और ताम्बे की

बनी हुई तीन मूर्तियों का निम्न लिखित विधान से अग्न्युत्तारण और प्राणप्रतिष्ठा कर लें जैसे सर्वप्रथम देशकाल का उच्चारण कर— आसु मूर्तिषु अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं प्राणप्रतिष्ठाञ्च करिष्ये ।

ऐसा सकल्प कर विष्णु ब्रह्मा और रुद्र के निमित्त सोना, चाँदी एवं ताम्बे की बनी हुई तीन मूर्तियों को एक पात्र में रखकर उनमें घी लगा दे। पश्चात दूध और जल की धारा उन मूर्तिया पर गिराते हुए आगे का मन्त्र पढ़े—जैसे

ॐ समुद्रस्य त्वावाकयाग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽस्मभ्यं-शिवो भव ॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसी । पावकोऽस्मभ्यः शिवो भव ॥ ओं अपामिदं न्ययन समुद्रस्य निवेशनम् । अन्यांस्तेऽस्मत्तपन्तु हेतयः । पावकोऽस्मभ्य शिवो भव ॥ ओं नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे । अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः । पावकोऽस्मभ्य शिवो भव । ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः अन्यांस्ते-ऽस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽस्मभ्यः शिवो भव ॥

इस प्रकार अग्न्युत्तारण कर लेने के बाद मूर्तियों को तीनों कलशों पर स्थापित करके अपने हाथ से स्पर्श करते हुए बीज मन्त्र पढ़े जैसे—ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः आसु मूर्तिषु जीव इह प्राणाः । ओं आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः आसु मूर्तिषु जीव इह स्थितः । ओं आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः आसु मूर्तिषु सर्वेन्द्रियाणि

वाङ्मनस्त्वक् चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु। इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके—

अनादिनिधनो देव शंखचक्रगदाधर। अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव। इस प्रकार प्रार्थना करे।

पश्चात् प्रथम कलश के ऊपर इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा-निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा॥ इस मंत्र को पढ़ कर अज्ञातनामगोत्रं विष्णुमयं सात्विकप्रेतं आवाहयामि। इस वाक्य द्वारा श्री विष्णु का आवाहन करे। द्वितीय कलश के ऊपर—ओं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ अज्ञातनामगोत्रं ब्रह्ममयं राजसप्रेतं आवाहयामि। पुनः तृतीय कलश के ऊपर—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः। उमाभ्यामुत ते नमः॥ अज्ञातनामगोत्रं रुद्रमयं तामसप्रेतमावाहयामि।

इन दो मत्रों और दो वाक्यों द्वारा शेष दोनों कलशों पर ब्रह्मा और रुद्र का आवाहन करे।

इसके बाद—विष्णुब्रह्मरुद्रदेवताभ्यो नमः इस नाम मन्त्र द्वारा इन देवताओं का षोडशोपचार पूजन करे।

पुनः—अस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्ध कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रामुकामुकशर्मणो ब्राह्मणान् विष्णुब्रह्मरुद्र-सूक्तपाठकर्तृकान् युष्मानहं वृणे।

इस सकल्प वाक्य द्वारा विष्णुसूक्त और रुद्राध्याय पाठ करने के लिये तीन ब्राह्मणों का वरण करे। ;इन वृणीव तीनों

ब्राह्मणों को विष्णुसूक्त का, ब्रह्मसूक्त का तथा रुद्र सूक्त का पाठ करना चाहिये। इतने कार्य हो जाने पर तीनों कलशों के आगे तीन बट (आसन) रखकर अपसव्य से मोटक, यव, जल लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिन्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठातम्। पुनः मोटक, चावल, जल लेकर—

अज्ञातनामगोत्रास्तामसप्रेता भूमिस्था रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।

इन तीन संकल्प वाक्यों द्वारा तीनों आसनों पर क्रमशः यव, अक्षत और तिल छोड़े।

पुनः ओं यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः। इससे प्रथम पात्र पर यव, ओं अक्षन्नमीमदन्तह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठा मतीयोजान्विन्द्रते हरी॥ इससे दूसरे पात्र पर अक्षत, पुन ओं अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः। इससे तीसरे पात्र पर तिल छोड़े।

पुनः तीनों भोजनपात्रों पर तीन अर्घ्यपात्र रखकर—

ओं पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनः तच्छकेयम्॥

इस मन्त्र से तीनों अर्घ्यपात्रों में पवित्री रखे।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। इससे तीनों में जल देवे। अनन्तर

ऊपर लिखे हुए यवोऽसि इत्यादि मन्त्र से प्रथम पात्र में यव; अक्षन्नमीमदन्त० इत्यादि मन्त्र से द्वितीय पात्र में अक्षत, तिलोऽसि० इत्यादि मन्त्र से तृतीय अर्घ्य पात्र में तिल देकर गन्ध, पुष्प, तीनों पात्रों में मौन होकर डाले।

पुनः प्रथम अर्घ्यपात्र को बाँये हाथ में लेकर उसकी पवित्री भोजनपात्र पर उत्तराग्र रखकर उसके ऊपर जल का छींटा देने के बाद अर्घ्य पात्र को दाहिने हाँथ से ढँक कर—

या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः शं स्योना सुहवा भवन्तु।

इस मन्त्र को पढकर मोटक, यव, जल लेकर—

अज्ञातनामगोत्राःसात्विकप्रेता दिविस्थाःविष्णुमयास्त्रिपिण्डी श्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।

इस प्रकार संकल्प करके अर्घ्य जलको भोजनपात्र पर गिराकर पात्र आसन के वाम भाग में रख दे। शेष दोनों अर्घ्यदान में भी सारी क्रियायें इसी प्रकार होंगी किन्तु संकल्प जल में द्वितीय अर्घ्यदान में चावल, तृतीय अर्घ्यदान में तिल लेना चाहिये। अथ च संकल्प वाक्य में द्वितीय अर्घ्यदान के समय–

अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डश्राद्धे एष हस्तार्घो वा मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।

इस प्रकार और तृतीय अर्घ्यदान के समय संकल्प जल में मोटक और तिल लेकर संकल्प वाक्य में–

अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयाः त्रिपिण्डी-श्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।

इस प्रकार का भेद करना अत्यावश्यक है।

इसके बाद तीनों अर्घ्य पात्रों को तीनों आसनों के वाम भाग में सीधा रखकर।

सात्विकप्रेतेभ्यो विष्णुमयेभ्यः स्थानमसि, राजसप्रेतेभ्योः ब्रह्ममयेभ्यः स्थानमसि, तामसप्रेतेभ्यो रूद्रमयेभ्योः स्थानमसि।

इन तीनों वाक्यों का उच्चारण करें।

इसके बाद तीनों आसनों पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, पान, यज्ञोपवीत, वस्त्र देकर मोटक, यव, जल, लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डिश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीत-वासांसि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठताम्।

इस संकल्प वाक्य से प्रथम भोजन पात्र पर जल छोड़े। पुनः मोटक, अक्षत जल लेकर—

अज्ञातनामगोत्रा राजसप्रेता अन्तरिक्षस्था ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीत वासांसि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम।

ऐसा संकल्प बोल कर दूसरे आसन पर जल छोड़े।

पुनः अज्ञातनामगोत्रा तामसप्रेताः भूमिस्था रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीत-वासांसि वो दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्।

ऐसा वाक्य बोले।

पश्चात्— यथा चक्रायुधो विष्णुः त्रैलोक्यं परिरक्षती। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानी रक्षतु।

इस मन्त्र के प्रत्येक आसन के साथ-साथ भोजनपात्रों के चारों ओर अलग-अलग जल का मण्डल करे।

पश्चात् **इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः** इस वाक्य से भू स्वामी के लिये अन्न देकर सभी भोजनपात्रों पर अन्न परोसे। पश्चात् तीनों भोजनपात्रों के समीप अलग-अलग एक पुटक में जल एवं एक पुटक में घी रख र **ओं मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवंरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।** इस मन्त्र से भोजन पर मधु दोनों हाथा से चढ़ावे।

इसके बाद उलटे दोनों हाथों से भोजनपात्र का स्पर्श करते हुए—**पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा॥ ओं कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्।** इन मन्त्रों को पढकर दाहिने हाथ के अँगूठे से **इदमन्नं, इमा आपः, इदमाज्य, इदं हविः** इन वाक्यों द्वारा क्रमशः अन्न, जल. घी और अन्न का स्पर्श करके **यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः** इस मन्त्र द्वारा भोजनपात्र पर यव छोड़कर मोटक, जव, जल लेकर—

ओं अज्ञातगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णु मयाः इदमन्नं सोपकरणं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम।

ऐसा संकल्प करे। इसी प्रकार दूसरे भोजनपात्र का स्पर्श करते हुए—**पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं** ।०।

इदं विष्णुर्विचक्रमे० । ओं कृष्णाहव्यमिदं । इत्यादि पढ़कर इदमन्नं, इमा आपः, इदमाज्यं, इदं हविः ।

इन वाक्यों से अंगुष्ठ निवेशन करके, ओं अपहता० । इत्यादि से अक्षत भोजन पात्र पर छोड़कर मोटक, अक्षत, जल लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

ऐसा संकल्प करें । पुनः तीसरे पात्र में भी—

पृथिवी ते पात्रं० । इदं विष्णुर्विचक्रमे० । ॐ कृष्ण हव्य० ।

इत्यादि मन्त्रों को पढ़कर—

इदमन्नं, इमा आपः, इदमाज्यं, इदं हवि० ।

इन वाक्यों से अन्नादि में अगुष्ठ निवेशन कर ।

अपहता० इत्यादि से भोजनपात्र पर तिल छोड़कर मोटक, तिल, जल लेकर—

ॐ अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

ऐसा संकल्प करे ।

पुनः सव्य से— अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु । ऐसा उच्चारण करके तीन बार गायत्री जप करके मधुवाता० इत्यादि मन्त्र का जप करें । अथ च रक्षोघ्न मन्त्र, पुरुषसूक्त एवं अप्रतिरथ मन्त्रों का पाठ कर लें । इसके बाद अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ताः यान्तु परां गतिम् ।

इस मन्त्र से कुशा के ऊपर सभी प्रकार के अन्न मधु तिल के साथ छोड़ें ।

पुनः हाँथ पाँव धोकर सव्य हो आचमन करके भगवान का स्मरण एवं तीन बार गायत्री जप करके पुनः अपसव्य हो जाय

पश्चात् एक बित्ता लम्बी और चार चार अंगुली ऊँची तीनों आसनों के सामने तीन वेदियाँ बना लें। और

ॐ अपहता असुरा रक्षांसोः वेदिषदः

इस मन्त्र को पढ़ते हुए तीनों वेदियों पर कुशा से रेखा करके कुशा को उत्तर की ओर छोड़ दे। पुनः—

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
पुरा पुरो निपुरो भरन्त्यग्निष्टाल्लोकान् प्रणुदात्यस्मान्॥

इस मन्त्र से रेखा के ऊपर जलती हूई अग्नि घुमाकर उसे दक्षिण-की ओर छोड़ दे। तथा प्रत्येक वेदियों की रेखाओं पर तीन-तीन कुशाएँ बिछा दे।

इसके बाद सव्य होकर **देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।**

इस मन्त्र का तीन बार जप करे। पुनः अपसव्य होकर तीनों वेदियों के समीप तीन पुटक में जल देकर क्रमशः यव अक्षत और तिल देकर गन्ध देना चाहिये। अनन्तर एक पुटक को बाये हाथ में लेकर दाहिने हाथ में यव, जल, मोटक लेकर

अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थानेऽवनेनिक्ष्व वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्

ऐसा संकल्प करके पुटक का आधा जल प्रथम वेदी पर छोड़ कर शेष जल सहित पुटक वेदी के पास रख दे। पुनः दूसरे पुटक को बाँये हाथ में और अक्षत, जल मोटक लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममया-

त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इस प्रकार संकल्प करके दूसरी वेदी पर आधा जल छोड़ शेष जल सहित पुटक वेदी के पास रख दे। पुनः तीसरा पुटक बाँये हाथ में और मोटक, तिल, जल दाये हाथ में लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्था रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने निक्ष्व वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

ऐसा संकल्प करके पुटक का आधा जल वेदी पर छोड़कर शेष जल सहित पुटक तीसरी वेदी के पास रख दे।

इसके बाद तिल, दूध, मधु, शक्कर आदि मिलाकर यव और आटे के पिण्ड बनाकर पिण्ड और मोटक, यव, जल लेकर—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवाः स्मृताः। ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तोऽक्षय्यमुतिष्ठताम्॥ इदं यवमयं पिण्ड यवसर्पिः समभिमन्त्रितम्। ददामि तस्मै प्रेताय यः पीडां कुरुते मम॥ ये केचित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। यवपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु शाश्वतीम्॥ ये केचिद्दिवि तिष्ठन्ति प्रेताः सात्विकरूपिणः। सात्विकपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु शाश्वतीम्॥ अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एष यवमयः पिण्डो वो मया

दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इन मन्त्रों का उच्चारण कर पिन्ड पहली वेदी पर रख दे ।

पुनः चावल चूर्ण के पिन्ड और मोटक चावल जल लेकर—पितृवंशे मृया ये च मातृवशे तथैव च । गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवाः स्मृताः ॥ ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । धर्मपिण्डो मया दत्तोऽक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ इमं व्रीहिमयं पिण्डं मधुरत्रयसंयुक्तम् । तन्मुक्तये, प्रयच्छामि पीडां ये कुर्वते मम ॥ ये केचित प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । तण्डुलपिण्डदानेन व्रजन्तु गतिमुत्तमाम् । अन्तरिक्षे स्थिता ये च राजसा वायुरूपिणः । राजसपिण्डदानेन ते तृप्यन्तु मुदान्विताः ॥ अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एष व्रीहिमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इन मन्त्रों का उच्चारण कर दूसरी वेदी पर दूसरा पिन्ड पख दे ।

पुनः तीसरा मधु, दूध, घी, तिल मिला हुआ तिल चूर्ण का पिन्ड और मोटक, तिल, जल हाथ में लेकर पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च । गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः । ये मे कुले लुप्तपिण्डा पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥ विरुपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुप-

ष्ठताम् ॥ इमं तिलमयं पिण्डं मधुना सर्पिषांयुतम् । तेभ्यो ददामि प्रेतेभ्यो ये पीडां कुरुते मम ॥ ये केचित्तामसाः प्रेता भूमौ तिष्ठन्ति सर्वदा । तिलपिण्डप्रदानेन गतिं गच्छन्तु ते ध्रुवम् । तमोरुपाश्च ये केचिद् वर्तन्ते पितरो मम । पिण्याकं-पिण्डदानेन ते तृप्यन्तु क्षुधार्दिताः ॥ अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एष तिल-मयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इस प्रकार बोलकर तीसरी वेदी पर पिण्ड देवे ।

पुनः कुश मूल में हाथ पोछकर सव्य हो भगवान् का स्मरण कर पुन अपसव्य हो जाए तथा—

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मावृषायध्वम् ।

इस मन्त्र से उत्तर की ओर से श्वाँस खींचकर—

अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ।

इस मन्त्र द्वारा दक्षिणमुख से पिण्डों पर श्वाँस छोड़ें । पश्चात् अवनेजन पात्र और यव, जल, मोटक हाथ में लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्था विष्णुमयाः त्रिपिण्डाश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

ऐसा संकल्प बोलकर पहले पिण्ड पर प्रत्यवनेजन देवे । और इसी प्रकार दो अन्य पिण्डों पर भी निम्नलिखित संकल्प भेद से प्रत्यवनेजन जल प्रदान करे ।

संकल्प जैसे—अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः ब्रह्ममयाः अन्तरिक्षस्थाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । अज्ञातनामगोत्राः तामस-

प्रेताः रुद्रमया भूमिस्था त्रिपिण्डीश्राद्धेऽत्र प्रत्यवनेनीऽध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इसके बाद नीवा खोलकर सव्य से आचमन कर भगवान् का स्मरण करे । पुनः अपसव्य हो सूत लेकर—

नमो वः पितरोरसाय नमो वः पितर शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नम वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः

इस मन्त्र से तीनो पिण्डो पर सूत्र चढ़ावे । और मोटक यव जल लेकर—

अज्ञात नामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्था विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतद्वो वासो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

ऐसा संकल्प करे अथ च निम्नलिखित संकल्प भेद से शेष दोनों पिण्डों के सूत्र का भी सकल्प करे जैसे—

अज्ञातनामगोत्रा अन्तरिक्षस्थाः राजस्प्रेता ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतद्वो वासो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रूद्र मयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतद्वो वासो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

पश्चात् तीनों पिन्डों पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, दक्षिणा चढाकर भोजनपात्रों में

शिवा आपः सन्तु-इससे जल, सौमनस्यमस्तु-इससे पुष्प, अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु—

इस वाक्य से क्रमशः भोजनपात्रों पर यव, चावल एवं तिल छोड़े

पुनः मोटक यव, जल लेकर—

अज्ञातगोत्राणां दिविस्थानां सात्विकप्रेतानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ।

पुनः मोटक, अक्षत, जल लेकर—

अज्ञातगोत्राणां अन्तरिक्षस्थानां राजसप्रेतानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठाम् ।

और मोटक, तिल, जल लेकर—

अज्ञातगोत्रानां भूमिस्थानां तामसप्रेतानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ।

इस तीन पृथक-पृथक संकल्पों द्वारा तीनों पिण्डों पर अक्षय्योदक प्रदान करें ।

पुनः ताम्बे के पात्र में गन्ध, जल, यव, अक्षत, पुष्प, और मातु लिंग फल लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः सात्विकप्रेताः दिविस्था विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे मातुलिंगगैरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इस वाक्य से अर्घ्य । पुनः ताम्बे पात्र में गन्ध, अक्षत, पुष्प, जल और जम्बीर (जमीरी निम्बू लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे जम्बीरफलैरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । इस वाक्य से अर्घ्य देवे ।

पुनः ताम्बे के पात्र में गन्ध पुष्प, तिल तथा खजूर फल लेकर—

अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे खर्जूरफलैरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । इस वाक्य से तीसरे पिण्ड पर अर्घ्य देवें ।

इसके बाद सव्य होकर **अघाराः पितरः सन्तु** इस वाक्य द्वारा पूर्वाग्र जलधारा देकर पूर्वमुख बैठकर—

ॐ गोत्रन्नो वर्धनाम् दातारो नोऽभिवर्द्धताम् वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयञ्च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहुभवेद्तिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन।

इस मन्त्र से आशीर्वाद को प्रार्थना करे। पुनः पिण्डों पर दक्षिणाग्र पवित्री के साथ कुशा रखकर—

ॐ उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्।

इस मन्त्र से पिण्डों पर जलधारा या दूध की धारा देवे। पश्चात्-सव्य होकर ताम्बे के पात्र में जल, दूध, यव, तिल, तुलसी, सर्वौषधि, चन्दन, पु प, फल, देकर शंख से शालग्राम भगवान् और प्रेतासनों पर भो निम्नलिखित मन्त्रों से तर्पण करे।

सर्वप्रथम इस पुस्तक के तीसरे खण्ड में लिखे हुए विष्णु सूक्त के प्रत्येक मन्त्रों से **विष्णुस्तृप्यतु** इस वाक्य को लगाकर तर्पण कर ले। पश्चात् निम्नलिखित नाम मन्त्रों से तर्पण करे जैसे—

१. ओं विष्णुस्तृप्यतु, २. ओं गोविन्दस्तृप्यतु, ३. ओं केशवस्तृप्यतु, ४. ओं माधवस्तृप्यतु, ५. ओं श्रीधरस्तृप्यतु, ६. ओं हृषीकेशस्तृप्यतु, ७. ओं पद्मनाभस्तृप्यतु, ८. ओं संकर्षणस्तृ प्यतु, ९. पुरुषोत्तमस्तृप्यतु, १०. ओं अनिरुद्धस्तृप्यतु, ११ ॐ चतुर्भुजस्तृप्यतु, १२ ॐ पुण्डरीकाक्षस्तृप्यतु १३ ॐ मधुसूदनस्तृप्यतु १४ ॐ अच्युतस्तृप्यतु

१५ जनार्दनस्तृप्यतु १६ ॐ अनन्तस्तृप्यतु १७ ॐ वैकुण्ठस्तृप्यतु १८ ओं उपेन्द्रस्तृप्यतु १९ ॐ त्रिविक्रमस्तृप्यतु २० ॐ गदापाणिस्तृप्यतु २१ ॐ श्रीवत्सस्तृप्यतु २२ ॐ श्रीकान्तस्तृप्यतु २३ ॐ दामोदरस्तृप्यतु २४ ओं वनमालीस्तृप्यतु २५ नरोत्तमस्तृप्यतु २६ ओं नृसिंहस्तृप्यतु २७ अष्टोत्तरसहस्रनामभिर्विष्णुस्तृप्यतु।

इन नाम मन्त्रों से एक एक बार शालग्राम शिला तर्पण करे।

ॐ पुनः अनादिनिधनो देव ! शंखचक्रगदाधर ! अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष ! प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णुस्तृप्यतु। अतसी-पुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्। विष्णुस्तृप्यतु। कृष्ण ? कृष्ण ? कृपालो ? त्वमगतीनां गतिप्रद। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ? विष्णुस्तृप्यतु। नारायणसुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद ? अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव। विष्णुस्तृप्यतु

इन चार मन्त्रों से चार बार तर्पण करे।

इसके बाद अपसव्य से शंख में तिल जल आदि लेकर एक मन्त्र से तीनों पिण्डों पर तर्पण करे। तर्पण मन्त्र—

धनलोभमृताये च गतिर्येषां न विद्यते। स मे प्रेत सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम्। कपिलाक्षीरपानेन अग-म्यागमनेन च। स मे प्रेतसुखं॥ अपात्रे चैव दानेन प्रेतरूपी व्यवस्थितः। स मे प्रेतसुखं० ॥ स्वबन्धः पितृबन्धु

इसके बाद सव्य होकर अघाराः पितरः सन्तु इस वाक्य द्वारा पूर्वाग्र जलधारा देकर पूर्वमुख बैठकर—

ॐ गोत्रन्नो वर्धनाम् दातारो नोऽभिवर्द्धताम् वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयञ्च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहुभवेद्तिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन।

इस मन्त्र से आशीर्वाद की प्रार्थना करे। पुनः पिण्डों पर दक्षिणाग्र पवित्री के साथ कुशा रखकर—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्।

इस मन्त्र से पिण्डों पर जलधारा या दूध की धारा देवे। पश्चात्-सव्य होकर ताम्बे के पात्र में जल, दूध, यव, तिल, तुलसी, सर्वोषधि, चन्दन, पुष्प, फल, देकर शंख से शालग्राम भगवान् और प्रेतासनों पर भी निम्नलिखित मन्त्रों से तर्पण करे।

सर्वप्रथम इस पुस्तक के तीसरे खण्ड में लिखे हुए विष्णु सूक्त के प्रत्येक मन्त्रों से विष्णुस्तृप्यतु इस वाक्य को लगाकर तर्पण कर ले। पश्चात् निम्नलिखित नाम मन्त्रों से तर्पण करे जैसे—

१. ओं विष्णुस्तृप्यतु, २. ओं गोविन्दस्तृप्यतु, ३. ओं केशवस्तृप्यतु, ४. ओं माधवस्तृप्यतु, ५. ओं श्रीधरस्तृप्यतु, ६. ओं हृषीकेशस्तृप्यतु, ७. ओं पद्मनाभस्तृप्यतु, ८. ओं संकर्षणस्तृप्यतु, ९. पुरुषोत्तमस्तृप्यतु, १०. ओं अनिरुद्धस्तृप्यतु, ११ ॐ चतुर्भुजस्तृप्यतु, १२ ॐ पुण्डरीकाक्षस्तृप्यतु १३ ॐ मधुसूदनस्तृप्यतु १४ ॐ अच्युतस्तृप्यतु

१५ जनार्दनस्तृप्यतु १६ ॐ अनन्तस्तृप्यतु १७ ॐ वैकुण्ठस्तृप्यतु १८ ओं उपेन्द्रस्तृप्यतु १९ ॐ त्रिविक्रमस्तृप्यतु २० ॐ गदापाणिस्तृप्यतु २१ ॐ श्रीवत्सस्तृप्यतु २२ ॐ श्रीकान्तस्तृप्यतु २३ ॐ दामोदरस्तृप्यतु २४ ओं वनमालीस्तृप्यतु २५ नरोत्तमस्तृप्यतु २६ ओं नृसिंहस्तृप्यतु २७ अष्टोत्तरसहस्रनामभिर्विष्णुस्तृप्यतु।

इन नाम मन्त्रों से एक एक बार शालग्राम शिला तर्पण करे।

ॐ पुनः अनादिनिधनो देव ! शंखचक्रगदाधर ! अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष ! प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णुस्तृप्यतु । अतसी-पुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् । ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् । विष्णुस्तृप्यतु । कृष्ण ? कृष्ण ? कृपालो ? त्वमगतीनां गतिप्रद । संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ? विष्णुस्तृप्यतु । नारायणसुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद ? अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव । विष्णुस्तृप्यतु

इन चार मन्त्रों से चार बार तर्पण करे।

इसके बाद अपसव्य से शंख में तिल जल आदि लेकर एक मन्त्र से तीनों पिण्डों पर तर्पण करे। तर्पण मन्त्र—

धनलोभमृताये च गतिर्येषां न विद्यते । स मे प्रेत सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम् । कपिलाक्षीरपानेन अग-म्यागमनेन च । स मे प्रेतसुखं ॥ अपात्रे चैव दानेन प्रेतरूपी व्यवस्थितः । स मे प्रेतसुखं० ॥ स्वबन्धः पितृबन्धु

र्वा प्रेतरूपी व्यवस्थितः। स मे प्रेतसुखं० ॥ पुत्रो वा भातृवर्गो वा प्रेतरूपी व्यवस्थिताः। स मे प्रेतसुखं० ॥ मातृपितृव्यकादिश्च प्रेतभावेन संस्थिताः ते सर्वे तृप्तिमयान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्। मातुलानी स्वपत्नी च गोत्रिणो स्वयमेव च। ते सर्वे० ॥ पितृवंशे च ये जाता मातृवंशे तथैव च। ते सर्वे० ॥ नाना योनिगता ये च महास्थलनिवासिनः। ते सर्वे०। ये केचित् प्रेतरूपेण यमेन परिपीडिताः। ते सर्वे० ॥ ये केचित् प्रेतरूपेण तृषार्ताः परिपीडिताः। ते सर्वे० ॥ महाप्रेता महाभागा प्रपूर्या च समाश्रिताः। ते सर्वे० ॥ असंख्याता महाघोराः प्रेतरूपै र्व्यवस्थिताः। ते सर्वे०। असंख्याता महाघोराः शाखान्यग्रोधसंस्थिता। ते सर्वे० ॥ प्रेतलोके च ये जाता मुद्गरैर्बहुखण्डिताः। ते सर्वे० ॥ ब्राह्मणवृत्तिहरणात् प्रेतरूपेण संस्थिताः। ते सर्वे० ॥ वृत्तिभंगकरा ये च प्रेतरूपे व्यवस्थिताः। ते सर्वे० ॥ क्रियालोपगता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये। ते सर्वे० ॥ ज्वालाग्निभिर्मृता ये च विद्युत्पाता दिभिस्तथा। ते सर्वे० ॥ अपुत्रिणो मृता ये च कुलधर्मविवर्जिताः। ते सर्वे०। तप्ततैले च निःक्षिप्ताः यमलोके महाभये। ते सर्वे० ॥ किंकरैः पीड़िता ये च सुदृढाः खण्डशः कृता ते सर्वे०। पापेन पीडिताः कण्ठे यमदूतैर्महाबलैः।

ते सर्वे० ॥ सन्दंशैर्घनपातैश्च खण्डिता यम किंकरैः । ते सर्वे० ॥ वध्यन्ते बहुभिः पाशैर्यमदूतैर्महाबलैः ॥ ते सर्वे० ॥ मस्तके मुद्गरैर्घोरैः पीडिता यमकिंकरैः । ते सर्वे० ॥ यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे० ॥ कुम्भीपाके च निःक्षिप्ताः रौरवेच तथैव च । ते सर्वे० ॥ गुर्वग्निब्राह्मणानाञ्च पादेनैव प्रपीडिताः । ते सर्वे० ॥ असिपत्रे खिद्यमाना नृपभीत्या पलायिताः । ते सर्वे० ॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च देवद्रव्य-विलुम्पकाः ते मे प्रेताः सुखं दद्यु स्तेभ्यो दत्तं तिलोदकम् ।

इन मन्त्रों से पिण्डों पर तर्पण करें ।

इसके बाद अज्ञातनाम गोत्राणां सात्विक-राजस तामस-प्रेतानां महातृषानिवृत्यर्थं जलम् दुग्धधारा वो दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ।

इस प्रकार संकल्प कर जल छोड़ें । यथासम्भव गोदान भी यहाँ करना चाहिए ।

इसके बाद विष्णुकलश का थोड़ा जल लेकर—

विष्णुकुम्भे स्थितं तोयं विष्णुसूक्तेन मंत्रितं । तत्तोयाभिषेकेन प्रेतत्वं च निवृत्तयः ॥

कहकर प्रथम पिण्ड पर छोड़ें । पुनः द्वितीय कलश का जल

ब्रह्मकुम्भे स्थितं तोयं ब्रह्मसूक्तेन मंत्रितं । तत्तोयाभिषेकेन प्रेतत्वञ्च निवृत्तयः ॥

दूसरे पिण्ड पर छोड़ें । पुनः तीसरे कलश का जल लेकर

रुद्रकुम्भे स्थितं तोयं रुद्रसूक्तेन मन्त्रितम् । अभिषिञ्चामि तत्तोयं प्रेतत्वं च निवृत्तयः ।

तीसरे पिण्ड पर जल छोड़े। अनन्तर पिण्डों को सूँघ कर उठा कर किसी पात्र में रखे और पिण्डधार कुशाये एवं उल्मुक लकड़ी आग में डाल दे।

इसके बाद यथाशक्ति वस्त्र, जलपूर्ण कमण्डलु, उपानह, छत्र, गौ आदि का दान करें। इसके बाद तिलपूर्ण पात्र का दान करे। अनन्तर देशकाल का उच्चारण कर—

मम कायिक वाचिक मानसिक समस्त पापक्षय-पूर्वक त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं स्वर्णसहितं कांस्यपात्रं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प करके कांस्यपात्र का दान करे और दक्षिणा चढ़ावे इसके बाद—

कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं सूक्तपाठ-कर्तृभ्यो ब्रह्मणेभ्यः आचार्याय च दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

ऐसा संकल्प करके ब्राह्मण को दक्षिणा देवे।

पश्चात्—वाजे वाजेवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत तृप्ता यात पथिभिर्दे-वयानैः॥ इस मन्त्र से विसर्जन कर श्राद्धीय वस्तुएँ जल में छोड़ दें।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।

इससे विष्णु भगवान का स्मरण करें। इस प्रकार त्रिपिण्डी श्राद्ध का विधान पूरा हुआ।

इंगित—बहुत लोग श्राद्ध करने के बाद रहःकूप में पीछे से एक नारियल छोड़ कर पहने हुए वस्त्र का वहीं त्याग भी करते हैं।

पञ्चबलि विधान

रसोई तैयार होने पर सभी प्रकार की भोज्य सामग्री एक थाली में पांच जगह परोस कर हाथ में द्रव्य अक्षत, जल लेकर—"ओं अद्य मासानामुत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुकगोत्र अमुक शर्मा वर्मा गुप्तः दासः) अहम अमुक गोत्रस्य अमुकनामस्य मम पितुः (मातुः अन्यस्य वा) वार्षिक श्राद्धे (महालयश्राद्धे वा) कृतस्य पाकस्य शुद्धयर्थं पञ्चबलिदान कर्म करिष्ये ।" ऐसा संकल्प करके पुनः हाथ में द्रव्य अक्षत जल लेकर नीचे लिखे अनुसार पांच मन्त्रों से पञ्चबलि करें।

गोबलि— ओं सौरभेयः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिग्रह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ।
इदमन्नं गोभ्यो नमः ।

देवादि बलि—ओं देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाश्च
यक्षोरग दैत्यसंघाः प्रेताः पिशाचास्तरवः
समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ।
इदमन्नं देवादिभ्यो नमः ।

पीपीलिकादि-बलि—पीपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः
कर्मनिबन्धबद्धाः । तृप्तयर्थमन्नं हि मया
प्रदत्तं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ।
इदमन्नं पीपीलिकादिभ्यो नमः ।

श्वानबलि—द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यांमन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।
इदमन्नं श्वभ्यां नमः।

अपसव्य से—ऐन्द्रवारुणवायव्य याम्यां वै नैऋंतास्तथा।

काकबलि— वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम्।
इदमन्नं वायसेभ्यो नमः।

सव्य से—इस प्रकार पञ्चबलि हो जाने के बाद एक थाली

भोज्य संकल्प-में सभी प्रकार की रसोई परोस कर और एक में जल भी रखकर, हाथ में द्रव्य, अक्षत लेकर निम्नलिखित संकल्प करे—

ओं अद्यामुकगोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा, दासः गुप्तः) अहं अमुक गोत्रस्य अमुकं नाम्नः मम पितुः अक्षय तृप्त्यर्थं इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदं हविः। इः वाक्यों से सभी पदार्थ का स्पर्श करे। पश्चात् संकल्प लेकर—

अद्यामुकगोत्रास्य अमुकनामः पितुः वार्षिक श्राद्धे (महालयश्राद्धे यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। ऐसा संकल्प करके गौ आदि के बलि देने के बाद ब्राह्मण भोजन करावें।

❋ मुद्रक :—मगध शुभंकर प्रेस, रामसागर, नई सड़क
गया (बिहार)

-: लेखक की अन्य कृतियां :-

१ भारतीय-रत्न-चरितम्—ऐतिहासिक कथा काव्य २५)

२ श्राद्ध पारिजात—
कर्मकाण्ड के विद्वानों द्वारा सम्मानित २०)

३ उपनयन विवाह चन्द्रिका ५)

४ महालक्ष्मी पूजा पद्धति २)

५ सत्यनारायण व्रत कथा (अंग्रेजी अनुवाद) ५)

६ सौरतीर्थ देवधाम— ३)

७ मगविप्र माहात्म्य— २)

८ बाल्मीकीय रामायण (अनुदित ग्रन्थ) श्रीमत्सीता-
रामदास ओंकार नाथ वेद विद्यालय
आलम बाजार, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित

९ विष्णु पुराण— " "

१० संगीत रत्नाकार—
डॉ० सुरेन्द्र चन्द्र बनर्जी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित

११ नित्यकर्म प्रकाश—सिकरिया धर्मग्रन्थ प्रकाशन,
कलकत्ता द्वारा प्रकाशित

१२ दुर्गा पूजा पद्धति— " " "

अप्रकाशित

१३ ऋग्वेद प्रथम अष्टक- भारत सरकार के बिचाराधीन
सायण भाष्य सहित (हिन्दी अनुवाद सहित)

१४ प्राचीन भारत परिचय--संस्कृत भाषामयः " "

१५ सम्मेलन, मन्दिरम्—सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य लिखित
बंगला उपन्यास का संस्कृत अनुवाद।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
श्री विष्णु प्रकाशन, मो०-पो० देव, जिला—औरंगाबाद बिहार (भारत)

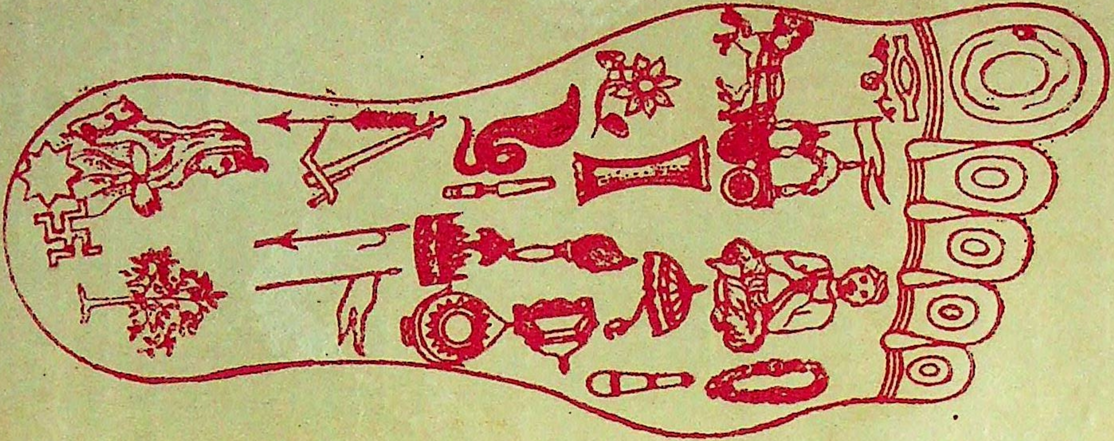

श्री विष्णु चरण

मगध शुभंकर प्रेस—रामसागर नई सड़क, गयाधाम

पुस्तक प्राप्ति स्थान-
श्री विष्णु प्रकाशन, मो०-पो० देव, जिला-औरंगाबाद बिहार (भारत)

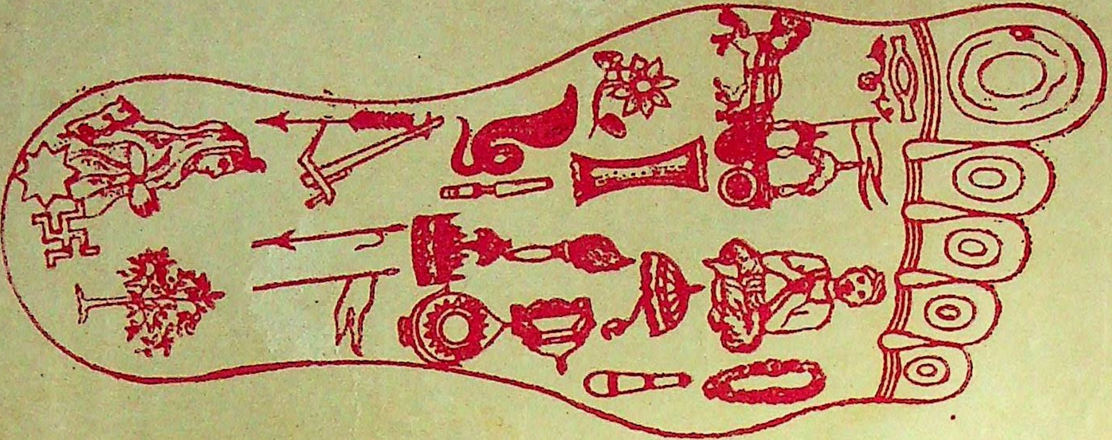

श्री विष्णु चरण

मगध शुभंकर प्रेस-रामसागर नई सड़क, गयाधाम

Nehru
LAST JOURNEY

EDITED BY
K. P. GUPTA

INDIA PUBLICATIONS
GWYNNE ROAD, AMINABAD
LUCKNOW

EDITED BY : K. P. GUPTA

JUNE, 1964.

PRICE

Ordinary Rs. 1.50

Art Bound Rs. 3.75

Copyright Reserved

Published by India Publications, Gwynne Road, Aminabad, Lucknow, U. P. (India), and Printed at United Block Printers, Lucknow.

Dedicated

to

the sweet and everlasting memory

of

Our departed leader

who mastered history, who wrote history

and

who made history

—The Editor

—War must be eliminated not only from life, but also from the consciousness of men, from people's minds.

—War will not be fought only on the battle fronts. We have to fight it in the fields and factories, even in our schools and colleges.

—The planets do not make or mar our destiny. We are the makers of destiny.

—Religion is something more than ritual. It is almost synonymous with duty.

—We can not ride motor cars with a bullock cart mentality.

Jawaharlal Nehru

LIFE SKETCH...

Life of Pandit Jawaharlal Nehru. the free India's first Prime Minister was a flaming torch which lit up the path for a world plunged in darkness. The heir of history, Mr. Nehru, the uncrowned king of India, and the man Mahatma Gandhi bequeathed to the nation as his political heir, was born in Allahabad on November 14. 1889. He was the only son of Pandit Motilal Nehru, an imperious and successful lawyer, belonging to a respectable Brahman family, originating from Kashmir.

He had his primary education at home. At the age of 15, he went to Harrow. In 1907 he joined Trinity College and was at Cambridge for three years. From there he moved to the Inner Temple and was called to the Bar between 1905 and 1912. He joined the Bar at Allahabad in 1913 but law did not meet his enthusiasm as he found the life "engulfed in a dull routine of a pointless and futile existence".

He was attracted to Gokhale's Servants of India Society but decided not join it. In the early years of the World War I, he joined the two Home Rule Leagues, started by the theosophist leaders Tilak and Mrs. Anne Besant. The two leagues later merged but he had left both of them.

In 1912 he was a delegate to the Bankipore (Patna) session of the Congress. In 1916, at its Lucknow session, he met Mahatma Gandhi for the first time. The same year he married Kamla Kaul. About two years later, their first child, Indira Priyadarshini (later Mrs. Indira Gandhi) was born. A son was born to them in 1924 but died after a week or so.

Mr. Nehru came into close contact with Mahatma Gandhi during the non-cooperative movement of 1921. Nehru's prison term during this movement was the first of a series of nine, totaling nine years.

In 1926, he took his ailing wife to Switzerland and leaving her there, he visited a number of European cities, meeting Western savants and Indian revolutionaries in exile. He also participated in the Brussels Congress of Opressed Nationalities as representative of the Indian National Congress.

Returning home he had his first experience of a lathi charge at Lucknow in connection with demonstration held against the Simon Commission, on its arrival in the city.

In 1928 he became General Secretary of the Indian National Congress and it's President in 1929, 1936, 1946 and from 1951 to 1954.

In 1930, Mr. Nehru was sent to prison for six months for active participation in the Civil Disobedience Movement. Released in October, he was rearrested eight days later for a technical breach of an order under section 144 and sent to prison for 3o months on three charges. A year later he was discharged as his father's health was causing concern. Twelve days after his release his father died.

In 1931, returning to Allahabad after a hurried tour of the country, he was ordered not to leave the municipal limits. Gandhi ji, then on his way back from the Round Table Conference, was due in Bombay. So, Mr. Nehru left for Bombay, was arrested on the way and sent to prison for two years.

About six months after his release, he was given his seventh prison term of two years for a speech he had delivered in Calcutta. He took his ailing wife to Germany for better treatment, where she died. His mother died in 1938.

He went to Spain and Czechoslovakia and arrived at Barcelona in June 1938. World War II found him in Chungking, China's wartime capital and he had to hurry back home.

In 1940, Mr. Nehru was again given four years for Satyagraha. On August 8, 1942, he was arrested, along with other leaders, for his ninth and the longest prison term in connection with "Quit India" movement. He was released, almost three years later, on June 15, 1945.

After great hurdles, the Interim Government, with Mr. Nehru as its head, was announced on August 24 and took office on September 2, 1946. Troubles by Muslim League continued. Principles of the country's partition had to be accepted on June 3, 1947. On August 15, he became free India's first Prime Minister. He remained head of the Government for 17 years, a feat never before equalled anywhere by anyone.

After independence he rapidly rose to the stature of world statesman. In 1948 he addressed the third U. N. General Assembly Session in Paris and the following year the U. S. Congress and the Canadian Parliament. He addressed the U. N. General Assembly on other occasions also.

He did much travelling, too, and visited almost every country in Asia and Europe. His two visits to Russia and his visit to China in 1954 were occasions of frenzied demonstrations of goodwill.

Mr. Nehru convened the All Asian Relations Conference in March 1947, in January 1949 and in April 1954, with India, Burma, Ceylon, Pakistan and Indonesia as participants. Panch Sheel or five principles of peaceful co-existence were enunciated in Afro-Asian conference at Bandung the following April.

Mr. Nehru's government successfully faced a series of trials, Gandhi ji's assassination by a communal fanatic, the crisis in Hyderabad & Kashmir, the prolonged and heart breaking refugee problem, recovery of French and Portuguese enclaves, linguistic and other forms of sectarianism raised their head from the South

Free India's first Prime Minister Mr. Jawaharlal Nehru
(November 14, 1889——May 27, 1964)

to the Nagaland. But Mr. Nehru's Ministry managed to maintain and expand democracy at a time when neighbouring countries had the greatest difficulty in

keeping it alive at all. He launched the most ambitious scheme of industrial and social development India has ever known, - embodied-despite slender resources—in three five year Plans.

In September 1961 he participated in the 25 nation conference on non-aligned nations conference held at Belgrade from where he went to Paris and in November visited U. S. A. at President Kennedy's invitation and also Mexico.

In October 1962, Chinese invasion came as a blow & India was caught unprepared militarily. Much of the edifice Mr. Nehru had worked so long and so hard to build crashed round him. Yet, the promptness with which Mr. Nehru's appeal for arms was dealt with had rarely been equalled in world war II.

In the midst of a hectic political life that spanned almost half a century, Mr. Nehru, the symbol of freedom and faith, maintained a surpirisingly wide range of interests—love of animals, riding, mountaineering, skiing and swimming etc.

A writer of distinction, his works include Autobiography, Discovery of India, Glimpses of world History, India and the world, A lunch of old letters, Eighteen months in India and the collection of his speeches and writings etc.

Mr. Nehru was the symbol of living India, one of the hewers of our freedom, the moulder of our part, the captain of our present and the hero of our future. If Gandhiji made heroes out of the clay it was Jawaharlal Nehru who gave creative vibration to that clay.

Such an unparalled and indespensable greatest world personality, died suddenly of a heart attack at about 2 P. M. on May 27, 1964, leaving the whole nation orphaned and groping in the dark, with numbness in the mind, agony in the heart and with tears flowing down the cheeks.

LAST JOURNEY...

The end of a long, eventful and dedicated life.

A close-up of the body of the free India's first Prime Minister Jawaharlal Nehru, uncrowned king of India, lying in state on the porch of his residence at Teen Murti Marg.

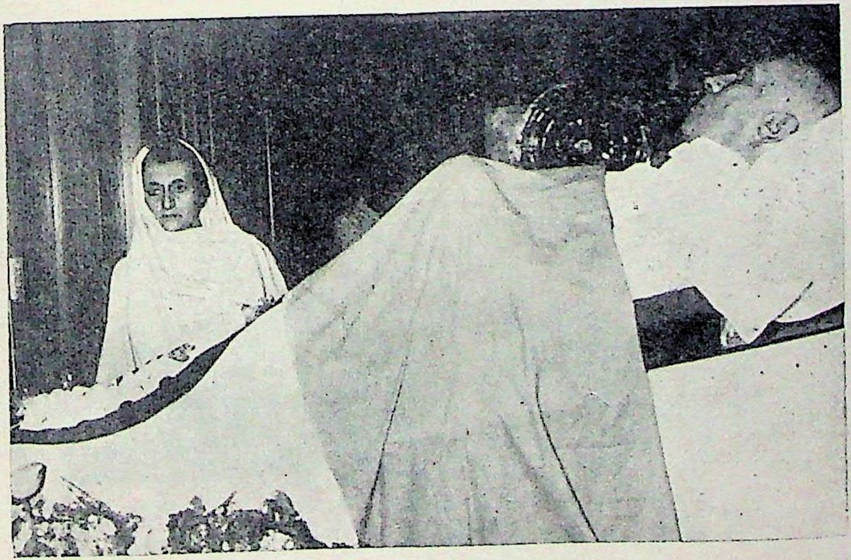

The Prime Minister Jahawarlal Nehru, lies in eternal rest. His daughter Mrs. Indira Gandhi, always by his side, is standing grief-strucken.

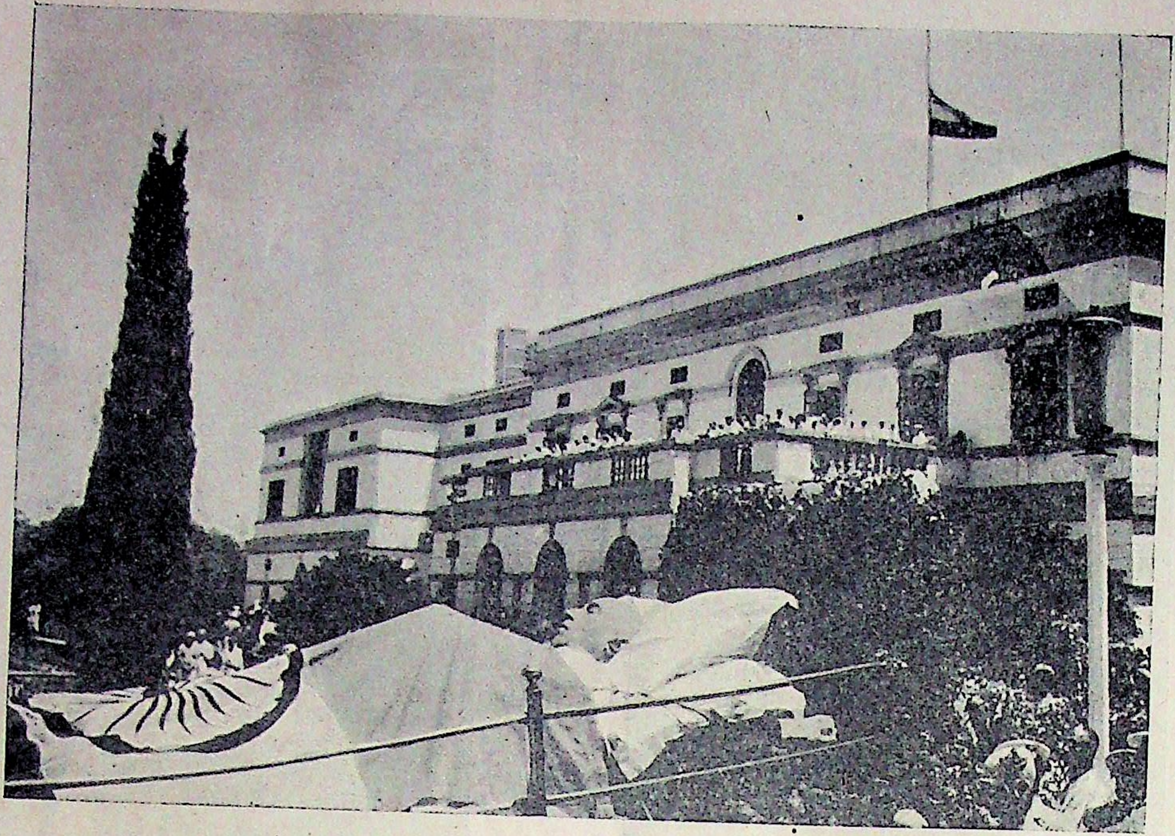

To the staccato roll of muffled drums, Mr. Nehru's body on the cortege drawn by a 60 member inter-services contingent, moving out of the Prime Minister's House, which had been transformed into a national shrine. (28.5.64)

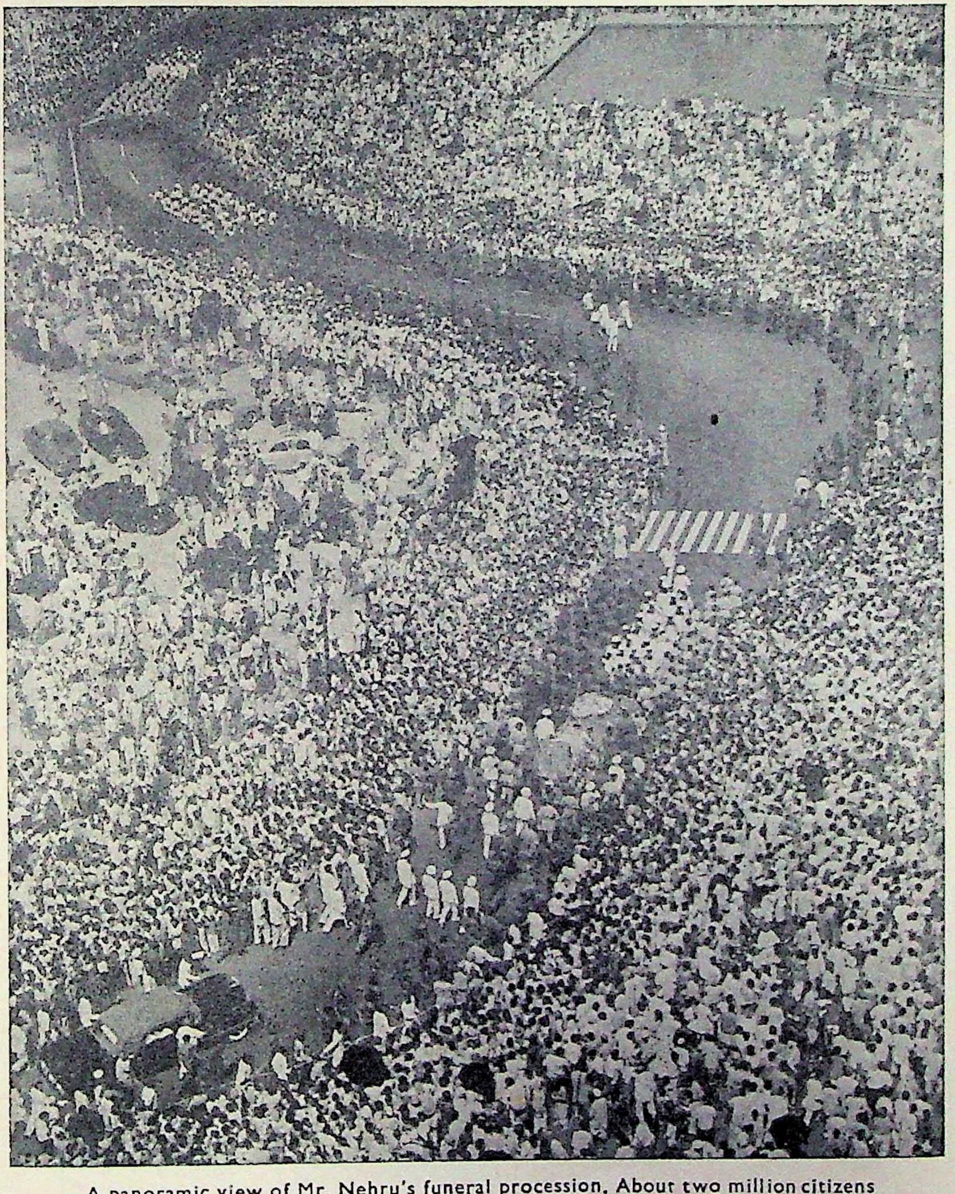

A panoramic view of Mr. Nehru's funeral procession. About two million citizens converged on the six mile route lined by 10,000 armed forces.

A sombre-faced large crowd waiting at Vijay-Chowk for Mr. Nehru's funeral procession to pass.

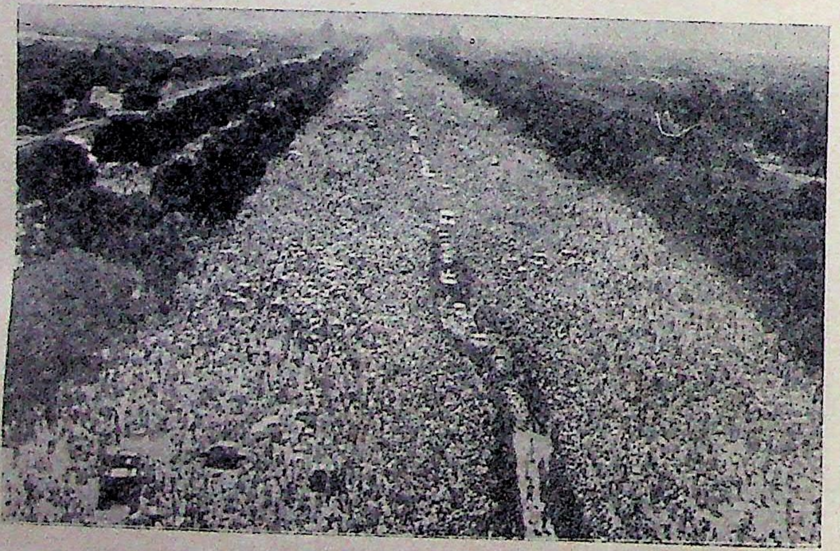

A view of the long and seemingly endless motorcade.

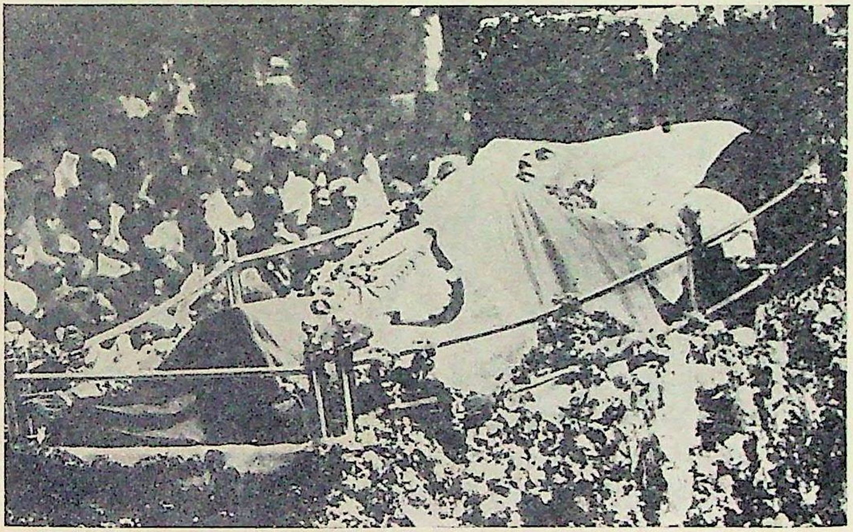

A close-up of the body of Mr. Nehru, draped in national colours, on the gun carriage, on way to Rajghat where it was cremated.

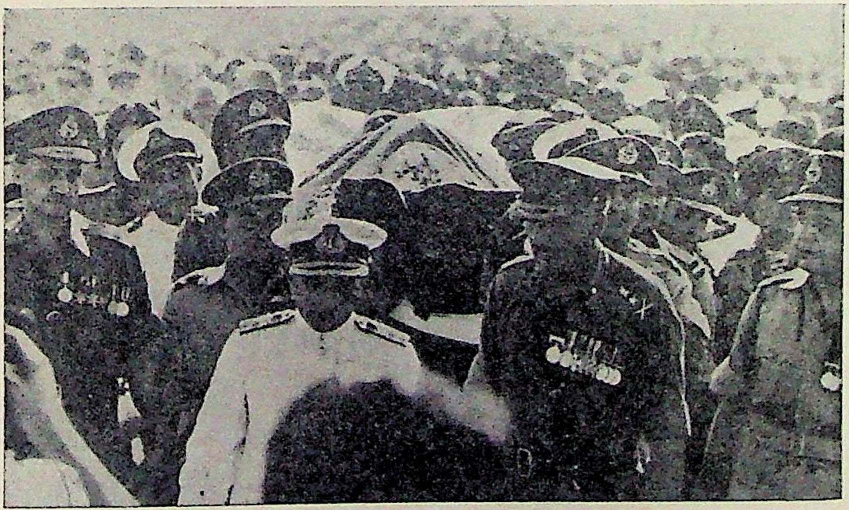

The body of Mr. Nehru is being carried by the senior most military officers.

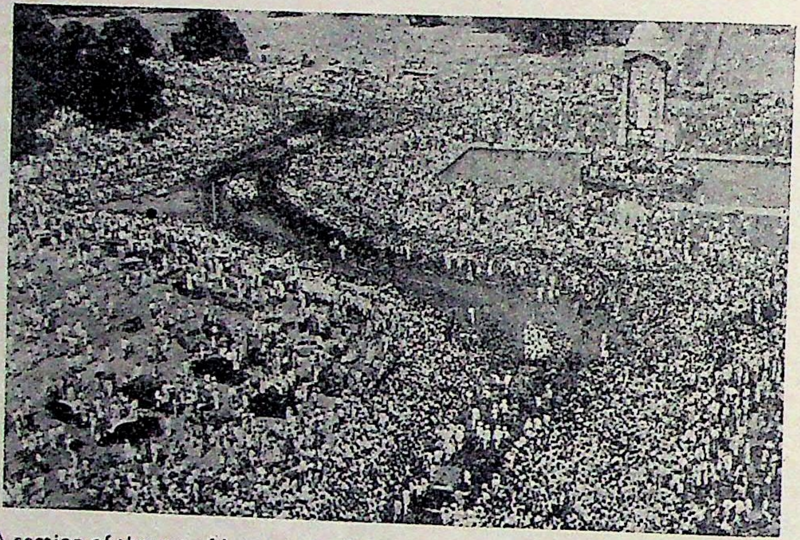

A section of the sea of humanity at India Gate, over looked by the statue of King George V, that paid last homage to Mr. Nehru.

The funeral procession as it passes through Rajpath between North and South block of the secretariat, the centre of Mr. Nehru's activities for seventeen years.

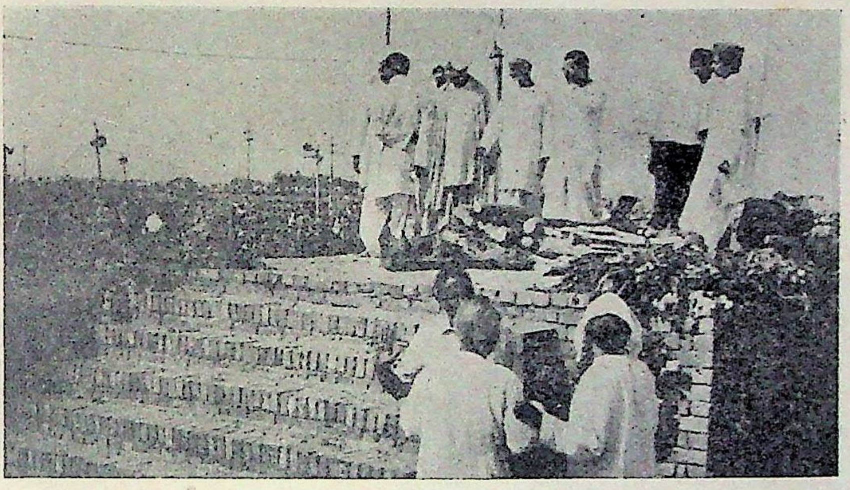

Over night especially constructed 16X16 square foot cremation platform, where mortal remains of Mr. Nehru were consigned to flames. The spot will be the site for a national memorial to the departed leader.

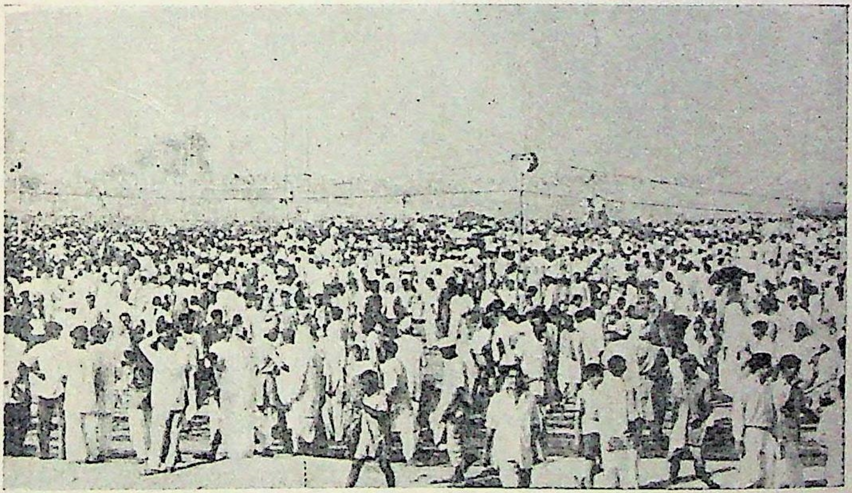

A section of the vast multitude of mourners that gathered around the cremation platform at Shantighat, where last rites were performed.

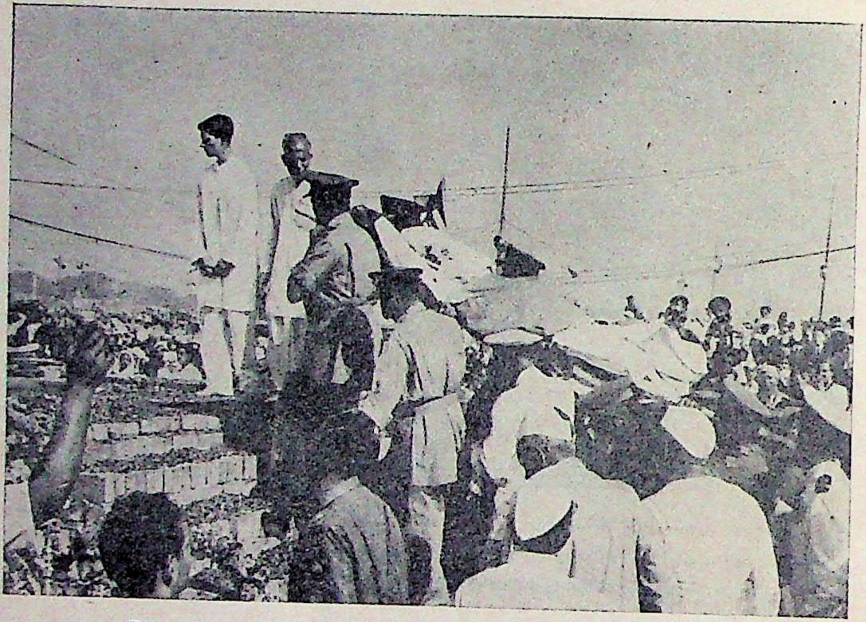

The pall-bearers carrying the cortege on to the platform to the muffled beat of the drums.

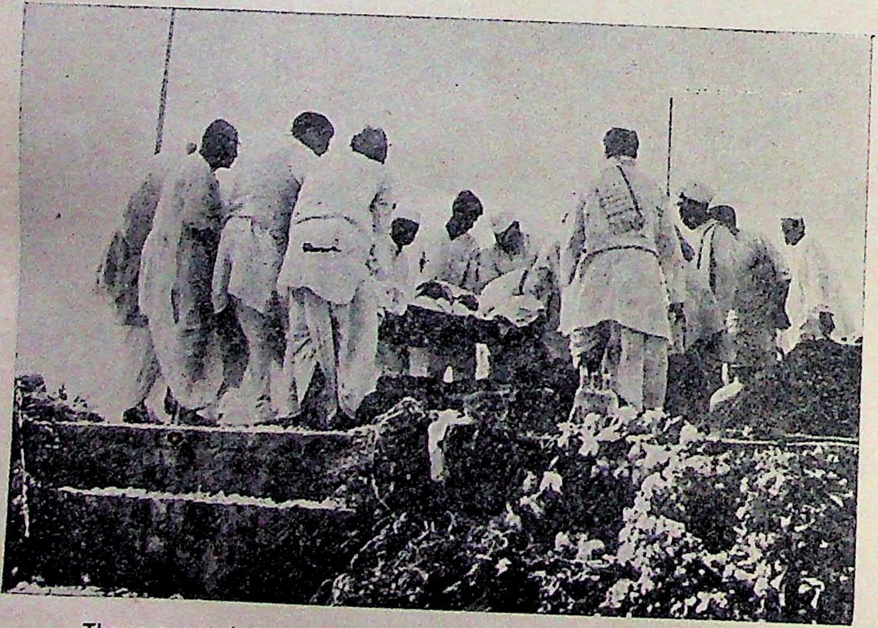

The cortege is being kept on the sandal wood pyre. Truck loads of wreaths, bouquets & flowers are seen nearby.

"Last Glimpse"

Grief-laden Mrs. Indira Gandhi and her son Sanjaya are seeing the face of Mr. Jawaharlal Nehru for the last time.

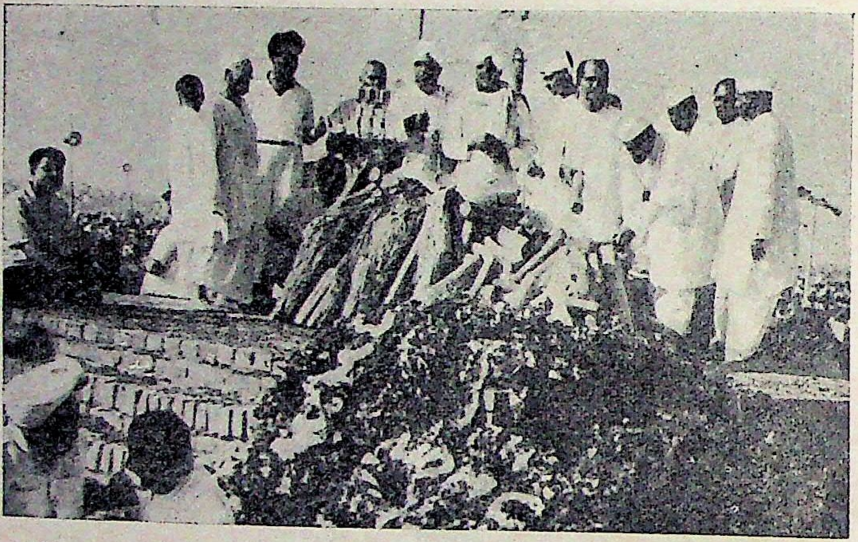

The body of Mr. Nehru, laid on the funeral pyre. is covered by sandal wood.

A white handkerchief tied round his neck, Sanjay, Mr. Nehru's second grandson, lights the funeral pyre to the accompaniment of sobs, Ramdhun & enchanting vedic hymns.

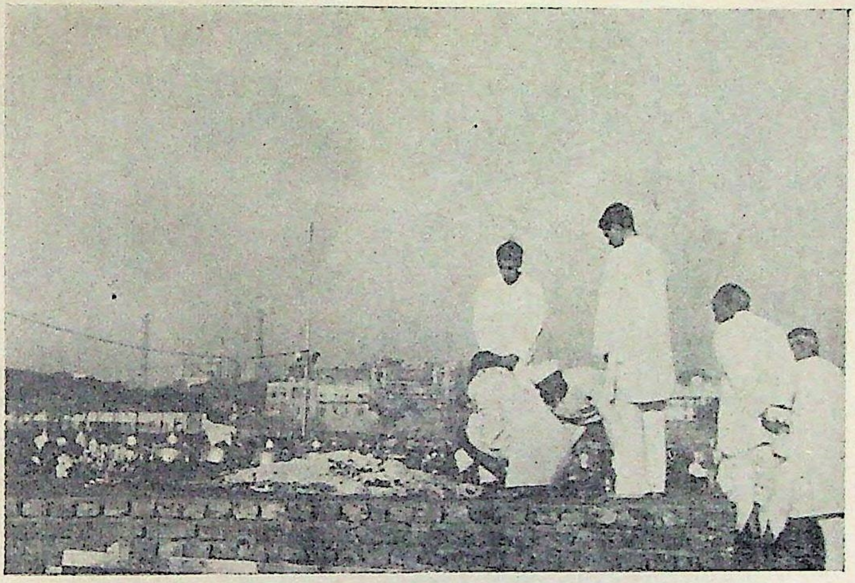

Grief-strucken, Rajeev & Sanjay, see the ashes of Mr. Nehru, after the mortal remains had been consumed by the flames & the fire. (28-5-64)

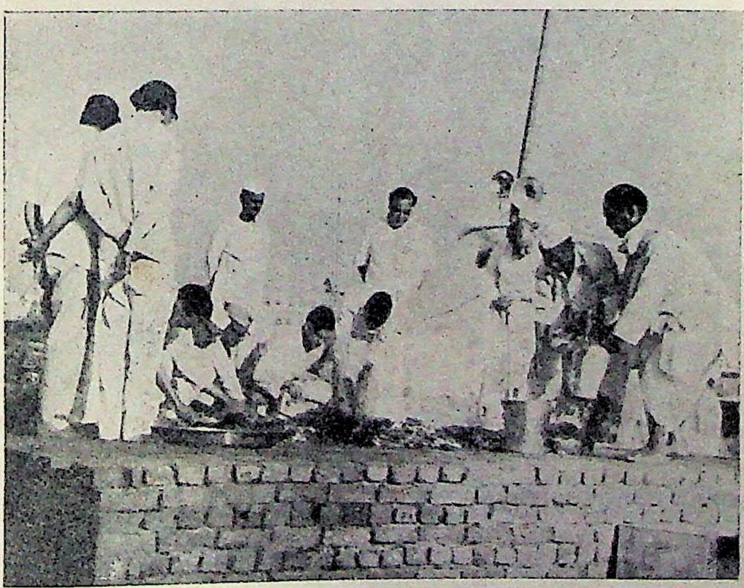

Rajeev & Sanjay, collecting Mr. Nehru's ashes next morning from the funeral pyre at Shantighat.

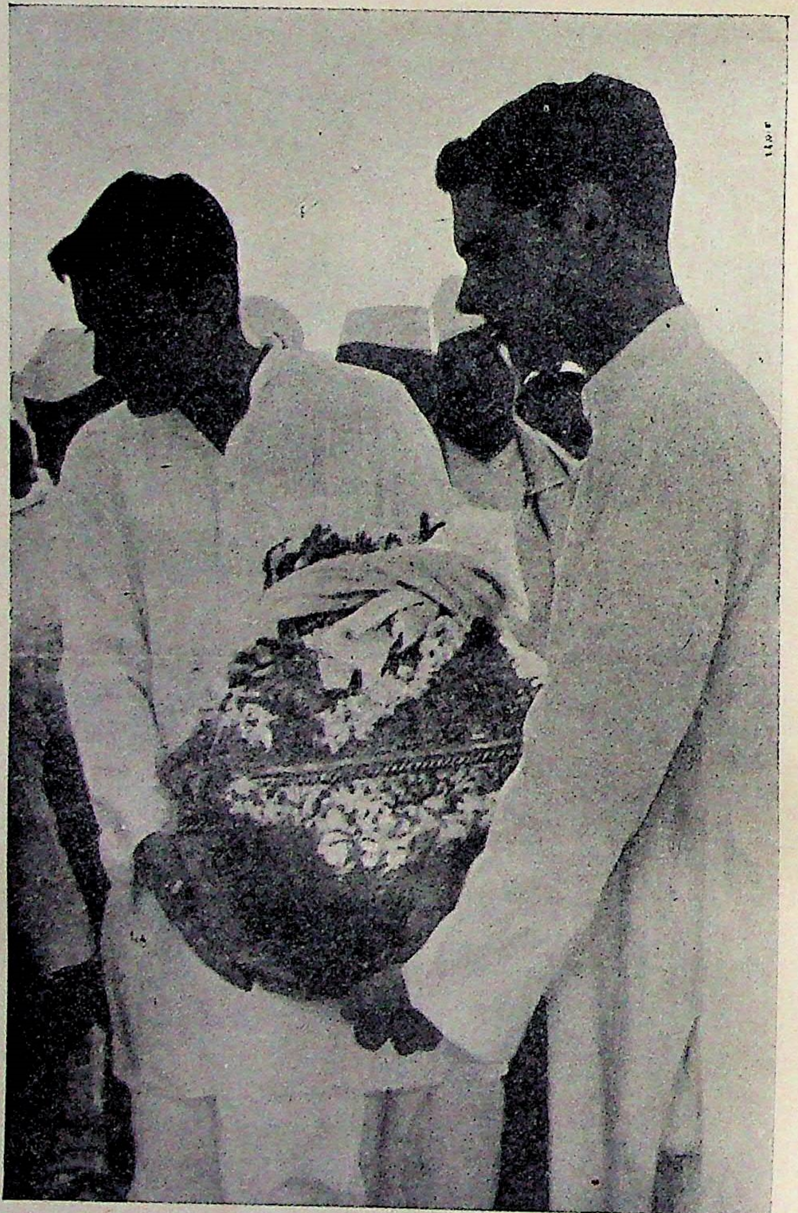

Rajeev and Sanjay, Grandsons of Mr. Nehru, carrying the urn containing the ashes.

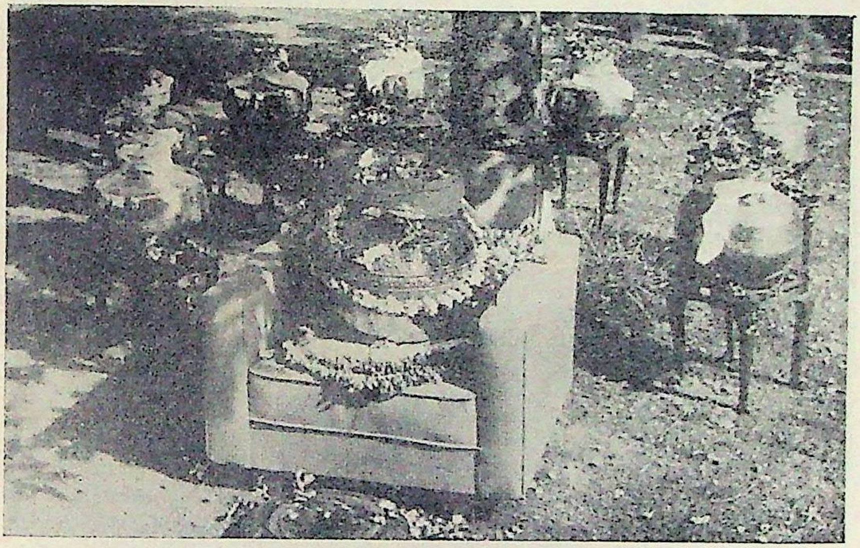

The ashes placed in eight brass urns are kept around an Amaltas tree in the lawn of the Prime Minister house.

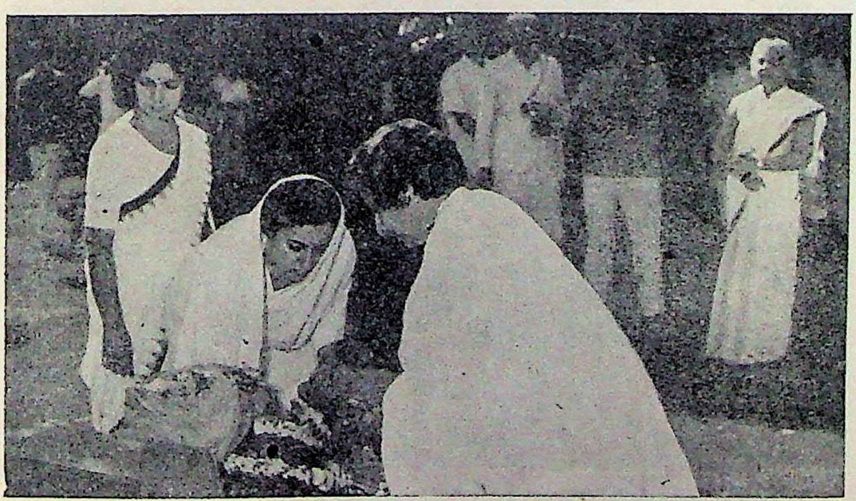

One of the urn containing ashes of the late Prime Minister Nehru is placed on his most favourite sofa.

A view of the procession at Connaught Place carrying the urn containing the ashes on a gun carriage, on way to New Delhi station.

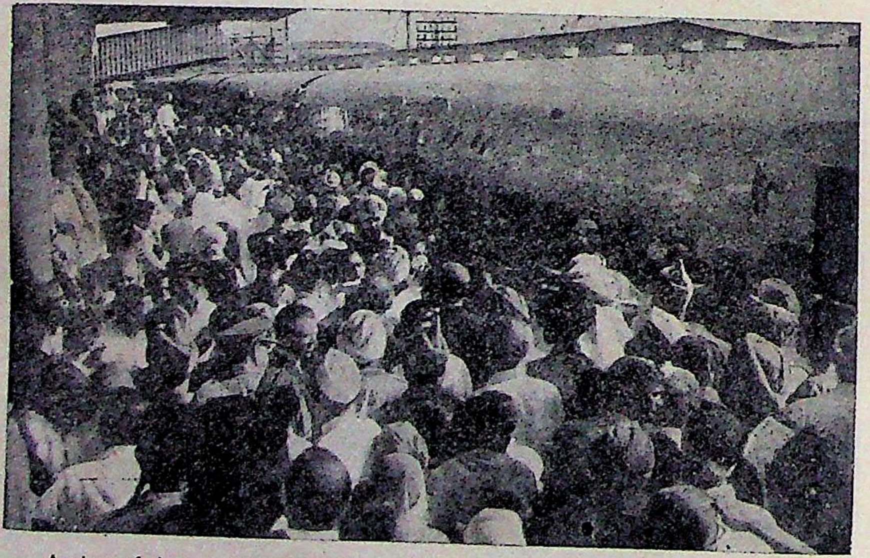

A view of the special train at New Delhi station which carried the ashes of Mr. Nehru to Allahabad, his home town.

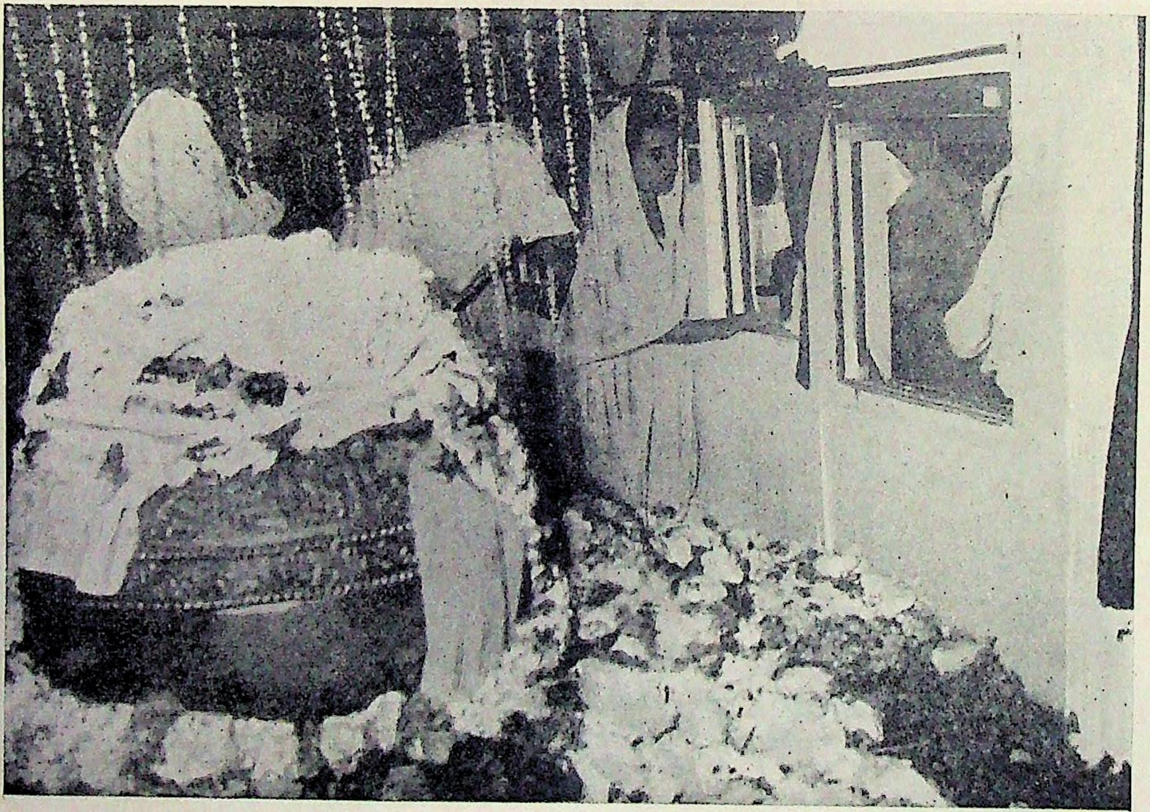

A photograph taken from inside of the all white coach provided with glass panels so that people could see it.

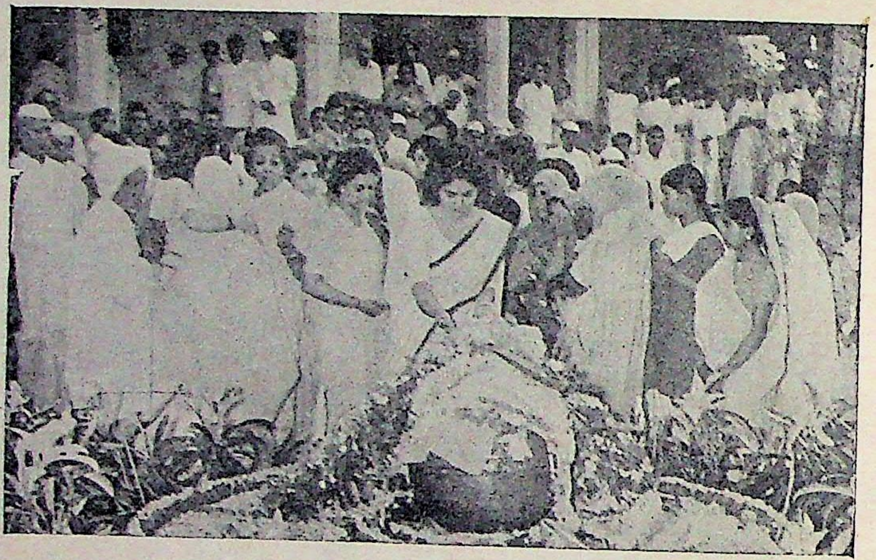

The urn containing the ashes is kept at Anand Bhawan, prior to carrying it to Sangam for immersion.

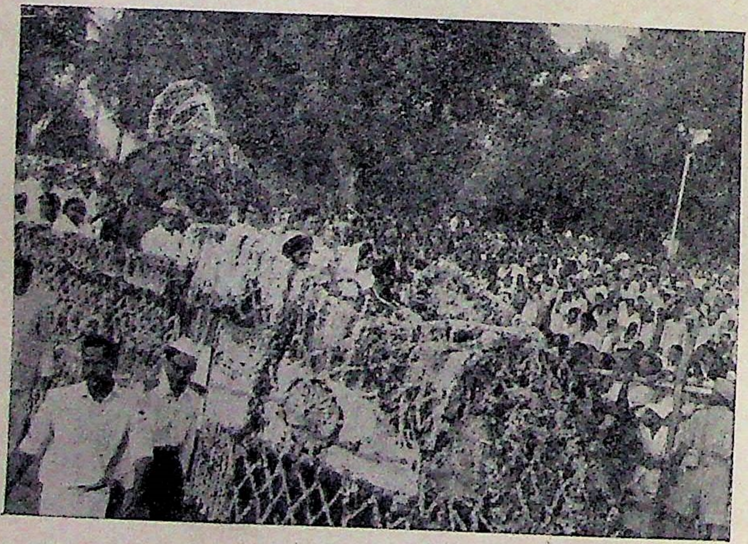

The amphibious army duck, with full military honour, carrying the urn containing the ashes, passes in a procession through the streets of Allahabad, on way to Sangam.

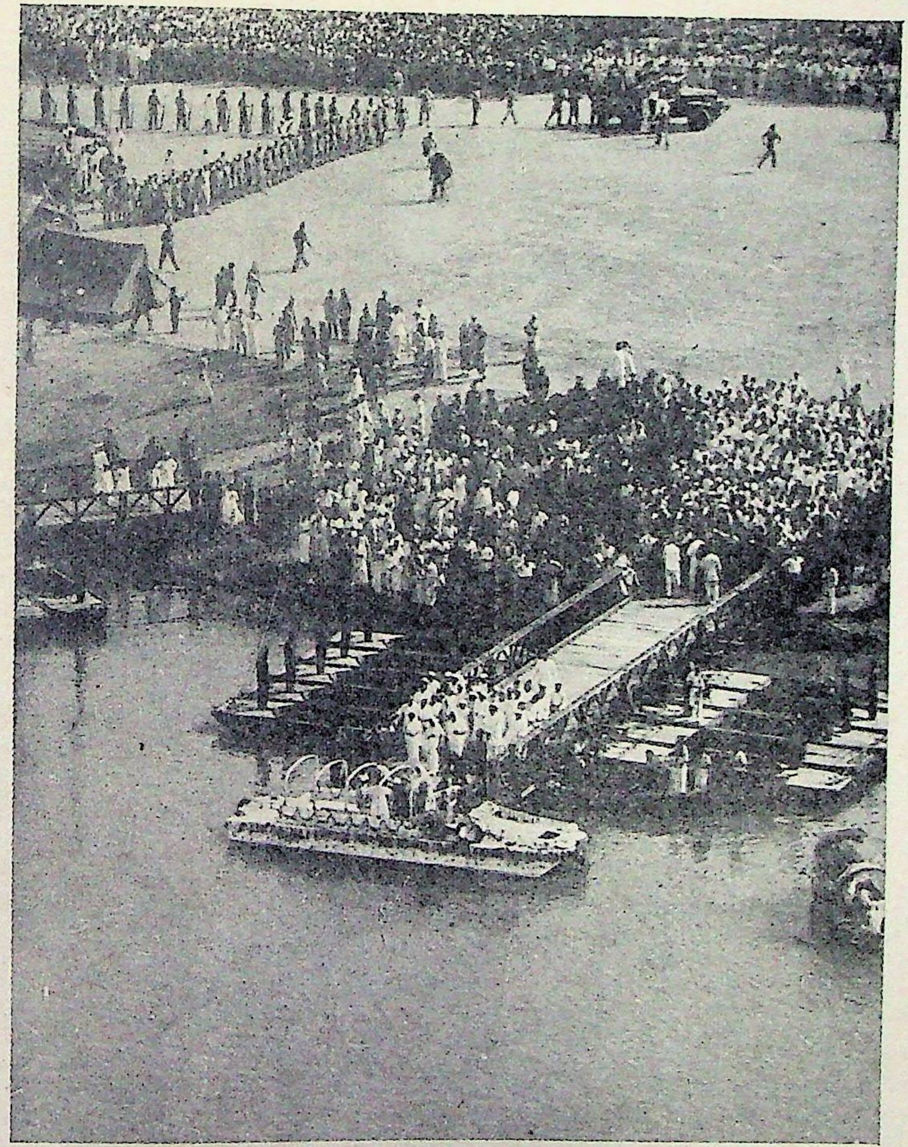

The urn is being placed in the amphibious boat at Sangam Ghat for being carried to Triveni.

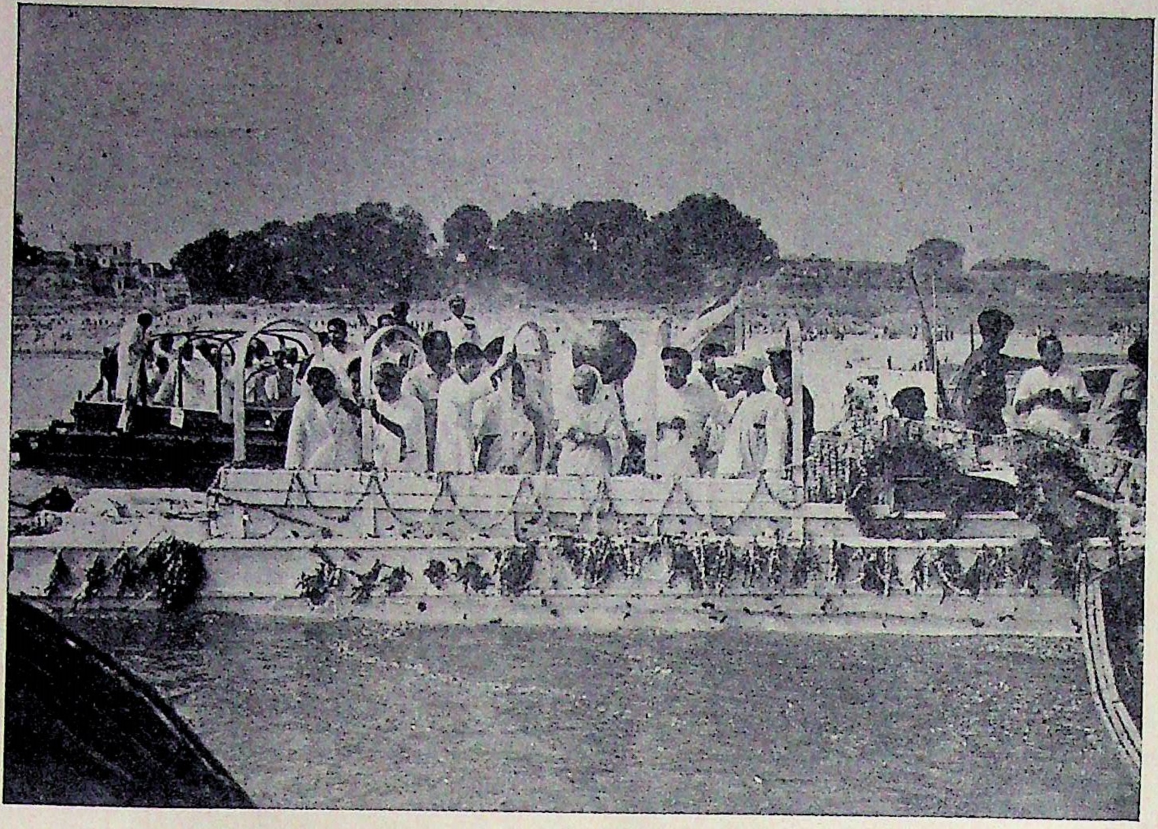

The motor boat carrying the urn containing Mr. Nehru's ashes with members of the family at Sangam immersion.

Rajeev & Sanjay, two grandsons of Mr. Nehru, emptying the urn, containing the ashes, at the confluence of the Ganga, Jamuna & the invisible Saraswati.

Accompanied by Mrs. Indira Gandhi, an I. A. F. officer at Palam airport, carries a white box containing the ashes of Mr. Nehru to the Dakota for scattering the same.

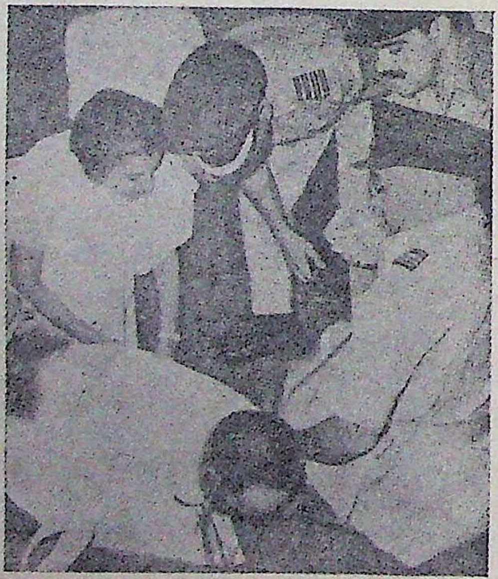

A member of the air crew is reaching below the floor of the Dakota over Pahalgam (Kashmir) to drop the ashes from the nylon sleeve.

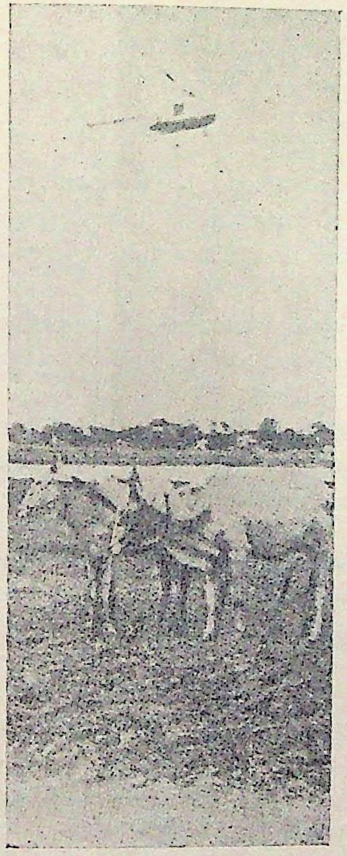

Late Mr. Nehru's ashes are scattered over the fields by air.

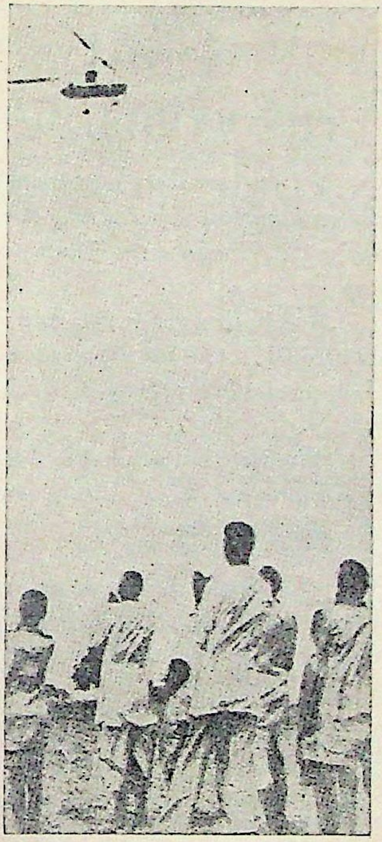

The peasants at the ground pay their last homage, with folded arms.

"My ashes should be carried high up into the air in an aeroplane and scattered from that height over the fields where the peasants of India toil, so that they might mingle with the dust and soil of India and become an indistinguishable part of India."

Jawaharlal Nehru

THE WORLD MOURNS ...

His life and work have had a profound influence on our mental make-up, social structure and intellectual development. It will be difficult to reconcile ourselves to the immage of India without Sri Nehru's active, all-pervasive leadership.

By his own powerful and vibrant voice, which we will not hear any more he, created, moulded, inspired and kindled a whole generation of Indians to a loyalty to the first principles which he held so dear.

—President Dr. S. Radhakrishnan

Mr. Nehru was not only Prime Minister but also a father of his people and had led them to victory in the struggle for freedom and gave that freedom a meaning and a content.

—Dr. Zakir Hussain, Vice President

The world has lost a great worshipper of humanity and our country an unparalleled leader. I have never come across a politician so free from hatred and malice. I bow to his spirit.

—Acharya Vinoba Bhave

The captain of the ship is no more. The leader has left the people desolate and forlon.

—Sri Jayaprakash Narayan

In him the nation has lost a great man and a great patriot.

—Acharya J. B. Kriplani

I am deeply grieved to hear of the death of Mr. Nehru, who will be mourned throughout the Commonwealth and among the peace-loving peoples of the world.

—Queen Elizabeth

Prime Minister Nehru's leadership and statesmanship will long be remembered.

—Emperor Haile Selassi

Perhaps more than any other world leader, he has given expression to man's yearning for peace. This is the issue of our age. In his fearless pursuit of a world free from war he has served all humanity. There could be no more fitting memorial to him than a world without war.

—President Johnson

I learn with profound sorrow of the death of Pandit Jawaharlal Nehru, a great statesman whose eminent qualities placed at the service of democracy, social progress and peace have deeply marked the destiny of India and, as a result, the whole world.

—President De Gaulle

A faithful friend of the Egyptian people, their problems and aspirations, Mr. Nehru was the beacon light not only of the people of India, but the whole of humanity.

—President Nasser

Mr. Nehru was deeply human not only towards his people but towards the peoples of the world in general.

—President Tito

His untimely demise removes from the political scene at a critical time a great Indian leader who commanded not only the admiration but also the devotion of his people.

—President Ayub Khan

People the world over mourn his death because they will miss Mr. Nehru's further contribution to the struggle for the establishment of a better world.

—President Sukarno

Not only have the Indian people lost a tried and wise leader who fought for the independence and rebirth of his nation, but all progressive persons will feel sorrow upon learning of the death of a man who, until the last minute of his life, gave all his strength to serve the high ideal of humanism as well as peace and progress.

—Prime Minister Khrushchev

We mourn the death of the architect of modern India, a far-sighted world statesman, and, above all, an eniment and respected Commonwealth leader.

—Sis Alec Douglas-Home

The world has lost one of its foremost statesmen and the whole of Asia grieves over the loss of its foremost leader dedicated to the cause of peace.

—Sirimavo Bandaranaike

India's loss is truly the loss of all mankind. Mr. Jawaharlal Nehru symbolised the ideals of freedom, human dignity, juctice and peace which we share.

—Mr. Dean Rusk

The world has lost a great statesman. India has lost her greatest leader, but Tibet has lost her dearest friend.

—Dalai Lama

"The Commonwealth has lost a Prime Minister of outstanding courage and calibre, the people of India have lost a great and illustrious leader and the world an eminent statesman"

—President Kwame Nkrumah of Ghana

"The world will, I know, greet the news of Prime Minister Nehru's death with deep sadness and regret."

—Former U. S. President Dwight D. Eisenhower

"I know his loss will be felt by all people throughout the world."

—Mrs. Jacqueline Kennedy

"The death of Mr. Nehru has deprived the world of an upright and liberal man."

—The Shah of Iran

Most effective advocate of reason, moderation and peace. His name will never-fade as long as there are men who dream of peace and believe in the inevitable triumph of reason over force.

—President Diosdado Macapagal of Philippine

His advise and councels will be sadly missed.

—Mr. Keith Holyoake, Prime Minister of Newzealand.

Men like Nehru belong to all of mankind. With his death we all lost something of ourselves.

—Mr. J. K. Galbraith

He had devoted his life to the service of just causes, to opressed people and to the world peace.

—Mr. Asalah Bitar, Syrian Premier

We shall miss his wise councel in the comity of the nations.

—Sir Abubakar Tafawa Balewa, Prime Minister of Nigeria

A leader of thinking morals and humanitarianism.

—King Hussein of Jordan

Nehru's name shall always be linked with the struggle for freedom and allround development.

—Antonin Novotny, President of Czechoslovakia

His death is a great loss to us all.

—Mr. Tage Erlander, Swedish Prime Minister

Not only India but the whole world has lost an outstanding statesman.

—My. Jens Otto Krag, Danish Prime Minister

Deeply grieved at the passing away of Mr. Nehru.

—King Olav of Norway

An irreparable loss in the person of this great statesman.

—Mr. Luding Von Moos, President of Switzerland

Mr. Nehru perhaps might be regarded as the doyen of world statesman.

—Earl Attlee, former British Prime Minister

Mr. Nehru's place would be difficult to fill.

—Lord Attlee

Mr. Nehru's death was a loss not only for India but for the whole world.

—Mr. Ali Sabri, Prime Minister of U. A. R.

His name has come to be synonymous with the spiritual goals of mankind. His monument is his nation.

—Mr. Adlai Stevenson

Mr. Nehru had affected the course of human events. India's mourning is the mourning of the United Nations.

—U. N. Council President M. Seydoux

Deepest condolences for the loss of a great statesman.

—The Italian Premier, M. Aldo Moro

He was one of the greatest figures in History. The world is poorer for his passing.

—Earl Mountbatten, India's last Viceroy.

One of the greatest tall trees in the forest of mankind now has fallen. India has lost its greatest leader and the world one of its most effective advocates of peace, justice and dignity for all men everywhere.
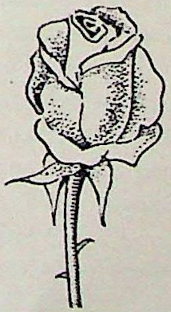
—Mr. Chester Bowles, U. S. Ambassador to India